संपर्क भाषा भारती

साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी, जुलाई—2022, RNI-50756

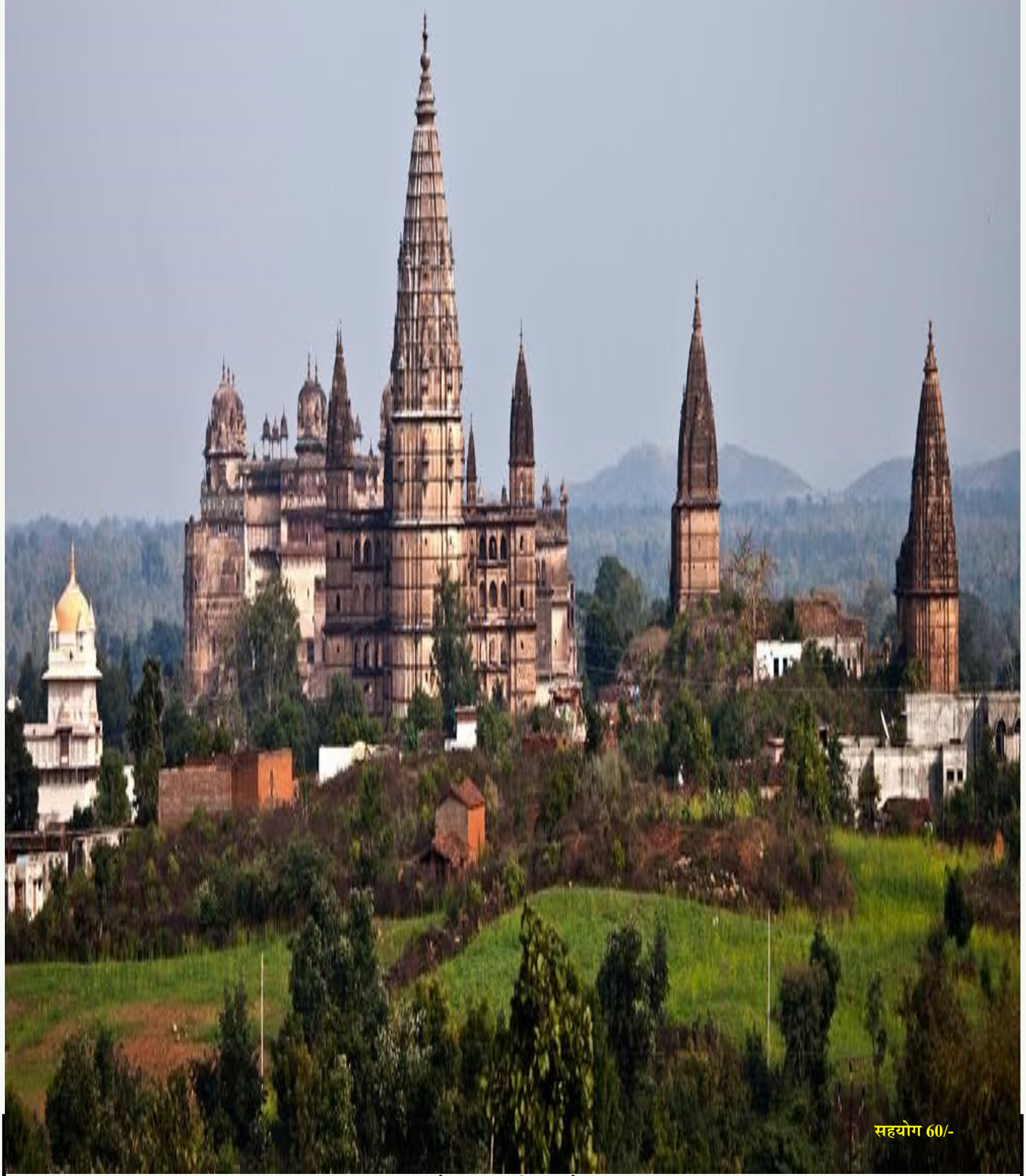

सहयोग 60/-

अनुक्रमणिका जुलाई —2022

क्रम सं:	शीर्षक :	लेखक :	पृष्ठ संख्या
1.	**संपादकीय**		**3**
2.	कविता	कृष्ण मनु	4
3.	लघुकथा : तोहफा	रशीद गौरी	4
4.	दोहे	रमेश मनोहरा	4
5.	मोरे सइयाँ जी उतरेंगे पार	डॉ रामशंकर भारती	5-7
6.	लघुकथा कांव-कांव	पंकज कुमार पाण्डेय	7
7.	लघुकथा लंगर बाबा	सत्यशील राम त्रिपाठी	8
8.	कविता	वर्षा मोरे पावड़े	8
9.	लघुकथा	विजेता सूरी	9
10.	कविता	डॉ शरद नारायण खरे	9
11.	कविता	अंजना चड्ढा	9
12.	कविता	राजपाल सिंह गुलिया	10
13.	कविता	व्यग्र पाण्डेय	10
14.	व्यंग्य आओ भड़ास निकालें	राम किशोर उपाध्याय	11
15.	कविता	प्रमोद कुमार	12
16.	लघुकथा संकट में जीवन	मिन्नी मिश्रा	12
17.	लघुकथा बिटिया	विरेंदर वीर मेहता	13
18.	लघुकथा गिफ्ट	श्यामल बिहारी महतो	14
19.	लघुकथा कैमरा	समीर ललित उपाध्याय	15
20.	लघुकथा बेटा बना साढ़ू	श्यामल बिहारी महतो	15
21.	कविता	ललित प्रताप सिंह	15
22.	लघुकथा व्यवस्था	सत्यशील राम त्रिपाठी	16
23.	कविता	रेखा शाह आरबी	16
24.	लघुकथा : बेबस	नीना सिन्हा	16
25.	लघुकथा : देश-प्रदेश	विरेंदर वीर मेहता	17
26.	कविता	डॉ मनोहर अभय	17
27.	कविता	लाल देवेंद्र कुमार श्रीवास्तव	17
28.	दो लघुकथाएँ	अनीता शरद झा	18
29.	कविता	सूर्य प्रकाश मिश्रा	18
30.	कविता	राजेंद्र कुमार सिंह	19
31.	कविता	बाबा कल्पनेश	19
32.	कविता	साधना मिश्रा	19
33.	कहानी : आखिरी पराजय	रामानुज अनुज	20-24
34.	कविता	शुचि भवि	24
35.	कविता	बद्री प्रसाद वर्मा अनजान	24
36.	लघुकथा : लुटेरे	मोहन राजेश	25
37.	लघुकथा : सरकार	विजय कुमार	26
38.	लघुकथा : कोख का बंटवारा	अंकुर सिंह	26
39.	कविता	अंजलि सिफर	27
40.	निशानेबाज़ मानवी	चन्द्रकान्त पाराशर	27
41.	महिला खिलाड़ियों की राह....	सोनम लववंशी	28
42.	कहानी : लॉस्ट एंड फाउंड	दिलीप कुमार	29-30
43.	जैन कविराय की कुंडलियाँ	अशोक जैन	31
44.	मुकरियाँ	त्रिलोक सिंह ठकुरेला	31
45.	लघुकथा : आखिरी बार	डॉ सरला सिंह स्निग्धा	32
46.	समाचार : राजस्थान मीडिया एक्शन फोरम		33-34
47.	चार गीतिकाएं	कैलाश मनहर	34
48.	लघुकथा : मादा भक्षी	डॉ नीहारिका शर्मा	35-36
49.	कविता	विकास तिवारी	36
50.	कविता	गिरेन्द्र सिंह भदौरिया	36
51.	पैरेंटिंग	डॉ सत्या सिंह	37-38
52.	कहानी : दो बूंद गंगाजल	अरुण तिवारी	39-41
53.	कविता	केशव शरण	41

प्रिय समस्त पाठकगण,

संपर्क भाषा भारती का नवीनतम, जुलाई 2022 का अंक अपने सही समय पर उद्घाटित हो गया है। पत्रिका के इस अंक को आप सब के हाथों में सुपुर्द करते हुए अतीव प्रसन्नता हो रही है।

लगभग गत छमाही से पत्रिका नियमित रूप से मासिक अंतराल पर निकल रही है। इस सफलता श्रेय आप रचनाकारों और पाठकों को अधिक जाता है जिन्हों ने कठिन परिस्थितियों में भी अपने सहयोग को अक्षुण्ण बनाए रखा है।

आज, जब कि प्रिंटेड पत्रिकाएँ प्रकाशन की रुग्णावस्था में पहुँच गई हैं, आपके सहयोग से संपर्क भाषा भारती साहित्यिक स्पंदन की तरह आपके समीप मौजूद है।

बदलते हालात में संपर्क भाषा भारती को भी प्रिंटेड पत्रिका का रास्ता छोड़ना पड़ा। पत्रिका की छपाई और उसे पोस्ट करने में बहुत सी दुश्वारियां शामिल थीं।

पत्रिका को कंप्यूटर पर तैयार करने के बाद उसे प्रिंटर के पास लेकर जाना, फिर प्रिन्टर अपनी सुविधा से उसे छापे और बाइंड करे। आप एक बार पत्रिका की फाइल लेकर जाएँ फिर छापने के बाद उसे लेने जाएँ।

पत्रिका को लिफाफे में डाल कर, उस पर पते चिपका कर पोस्ट ऑफिस ले जाएँ।

भारतीय पोस्ट की वितरण व्यवस्था इतनी लचर कि पत्रिका गंतव्य तक साधारण डाक से पहुँचती ही नहीं थी। साधारण डाक की वितरण व्यवस्था को हतोत्साहित करने का एक तरीका यह है कि साधारण डाक को वितरित ही न किया जाय। साधारण डाक से पत्रिका भेजने वाला, पत्रिका न पहुँचने पर कोई शिकायत नहीं कर सकता क्योंकि उसको कोई रसीद नहीं जारी की जाती। शायद यही कारण रहा कि नया ज्ञानोदय जैसी पत्रिकाएँ, जिनकी हमारे पास पाँच वर्षीय सदस्यता है, अब प्रकाशन बंद कर के बैठी हुई है।

ऐसे में मजबूर हो कर हमें पत्रिका को स्पीड-पोस्ट से भेजना पड़ जाता था जहां एक पत्रिका का डाक व्यय 60 से 70 रुपये तक हो जाता था।

संपर्क भाषा भारती का यह सौभाग्य है कि पत्रिका के प्रति आप सब की रुचि और सहयोग बढ़ रहा है।

आप सब के उत्साहित सहयोग से पत्रिका नियमित रूप से प्रतिमाह प्रकाशित हो रही है। पत्रिका में गुणातीत अभि-वृद्धि भी हो रही है।

आपको यह बताते हुए भी हर्ष हो रहा है आपकी संपर्क भाषा भारती पत्रिका पाँच हज़ार से अधिक पाठकों तक डिजिटली पहुँच रही है।

पत्रिका के साथ आपकी संबद्धता का अभिवादन है।

नए अंक केलिए भी आप तकाल अपनी रचनाएँ हमें पोस्ट करें ताकि उनपर विचार किया जा सके।

सादर,

सुधेन्दु ओझा

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

कृष्ण मनु

आग

आग अगर जंगल में
लग जाती है तो
बन जाती है दावानल
हरे-भरे पेड़, छोटे-छोटे पौधे
हंसते-विहँसते जानवर, पंख-पखेरू
सब के सब उस दावानल के
विकराल मुंह में समाते चले जाते हैं।

आग जब लग जाती है
समाज के भीतर
सम्प्रदाय, धर्म, पंथ के कंटकाकीर्ण रास्ते पर
चलकर
ये गुंडे, मवाली, दंगाई लगाते हैं आग

और जलती हुई आग में खुद भी
धू- धू कर जल उठते हैं
जले हुए
रिश्ते, मानवता, भाईचारे
के बीच

फिर क्या बचता है

फिर कुछ नहीं बचता
पाषाण वत मानवाकृति के सिवा

लेकिन जब लगती है आग
पेट में
तब बड़ा भयानक होता है
परिणाम

फिर सबकुछ स्वाहा हो जाता है
जंगल, समाज पूरी दुनिया।
कुछ नहीं बचता ।

राजमंत्र

सत्ता सुख भोगना है
तो उन्हें मूर्ख बनाये रखो

हर हाल में अपनी सोच को
सुर्ख बनाएं रखो

वे जागकर कहर
बरपा देंगे एक पल में
आश्वासन के अफीम दे
उन्हें सुलाये रखो

हमने आजतक कभी
उन्हें उठने न दिया
भाषणों में जन्म घुट्टी
सदा पिलाये रखो

छीनकर उनके हिस्से की
रोटियां सब
टुकड़े फेंककर उन्हें
मगर, जिलाये रखो

धर्म के चक्रव्यूह में
फंसा कर बुरी तरह
बेहोश ही रहें वो सदा,
चक्कर चलाये रखो

तोहफा

" मां... आज मदर्स डे है। बताओ, आपको मैं क्या तोहफा दूं ?" बेटे ने खुशी -खुशी बड़ी आत्मीयता, प्यार और स्नेह के साथ मां से पूछा।

" बेटा मुझे, तुझ जैसा लायक बेटा मिल गया। इससे बड़ा तोहफा मुझे और क्या चाहिए।"

" नहीं मां, कुछ तो बताइए।" बेटे ने ज़िद की।

" अच्छा ... बेटा अगर तुम कुछ देना ही चाहते हो तो मां को थोड़ा सा अपना कीमती समय दे दो...।"

- रशीद ग़ौरी, सोजत सिटी

दोहे गरीब पर

उड़े गरीब के घर में, गर्दिश का जब धूल
तब समझो उसका समय, रहे नहीं अनुकूल
सहता है गरीब यहाँ, महंगाई की मार
रात-दिन ही मिले उसे, भावों की फटकार
कटती 'होरी' कि यहाँ, जैसे तैसे रात
देख आकर प्रेमचंद, बदले ना हालात
युगों से आजतक यहाँ, गोबर है लाचार
कोई भी करता नहीं, मदद और उपकार
गरीबों के प्रति ना करें, वे अच्छा बर्ताव
देते हो दिन रात ही, उनको गहरे घाव
अभाव में जो पल रहे, रहते हैं बेजान
अब तो आनी चाहिये, होठों पर मुस्कान
मिलता नहीं गरीब को, जग से कोई प्यार
नफरत करता है उसे, सारा ये संसार
उस गरीब को दीजिये रमेश गहरी छाँव
मुफलिसी में धँसे रहे, जिसके रमेश पाँव
गरीब की समझे सदा, उसकी हरेक पीर
आज उसको खिलाइये, सुविधाओं की खीर
बदले नहीं गरीब के, अब तक देखो भाग
आजतक है लगी हुई, मुफलिस की ही आग
कितना महंगा हो गया, देख यहा सामान
महंगाई ने खत्म किये, गरीब के अरमान
जो नेता न जान सके, गरीब की जब पीर
उसकी खाल से बना, देखो यहाँ अमीर
महंगी चीजों से यहाँ, सजा हुआ बाजार
कैसे खरीदें उसको, गरीब है लाचार
भूखा पेट गरीब का, मांगे रोटी दाल
मगर नेता ने अब तक, खींची उसकी खाल
'होरी' आज भी रहता, रमेश जी बदहाल
पेट काटकर वो रहे, जीना हुआ मुहाल
आम आदमी आज भी, बना हुआ है आम
रह गया है देख वो, गुठली के ही दाम
उस गरीब का है यहाँ, छोटा सा संसार
खुश रहता इसमें सदा, करता नहीं विचार
पास रहकर ग़रीब भी, रहता उससे दूर
महंगाई ने कर दिया, रहने को मजबूर
गरीब जो भी है यहाँ, रहे हरदम उदास
शासन अब जारी करें, रोटी का फरमान

रमेश मनोहरा

मोरे सैंयाजी उतरैंगे पार

डा. रामशंकर भारती

लोकजीवन अपने जन्मकाल से ही प्रकृति पूजक रहा है। प्रकृति के सान्निध्य में रहकर उसने अपनी आँखें खोलीं। वहीं से उसने मुसकुराना सीखा। बोलना सीखा, उठना - बैठना सीखा। वहीं से उसे जीवनरस मिला। एक अप्रतिम सौंदर्यबोध ने उसे गढा। रूप, रस, गंध, ध्वनि और स्पृश्य के अनेक आह्लादिक आधार दिए। हमें अपने पंचमहाभूतों का अन्वेषक बनाया।

प्रकृति का सान्निध्य ही मनुष्य को लोक जीवन से जोड़े रखता है। आज यह प्राकृतिक परिवेश हमारे जीवन की उच्च आकाँक्षाओं में सम्मिलित कैसे रह पाए..? यह बहुत ही गंभीर प्रश्न है और चिंता का कारण भी। हम जब से प्रगतिशील बने, प्रयोगवादी बने और बहुत आगे बढ़कर भौतिकवादी बने तब से ही हम अप्राकृतिक व्यवस्था के शिकार हो गए। अपसंस्कृतिमूलक हो गए। जब भी कोई व्यवस्था अपसंस्कृतिमूलक हो जाती है तब उसके यथार्थ के आधार स्तंभ नष्ट होने लगते हैं।यथार्थ के आधारों का अवमूल्यन कीर्ति स्तंभ को ढहा देता है। जीवनरस को सुखा को देता है। जब भी लोकरस सूखा है तब - तब वह युग अभिशप्त हुआ है। जीवन ठूँठ हुआ है। मानवीय चेतनाएँ मृत हुयीं हैं। संवेदनाओं के सघन संदल वन ऊसर हुए हैं। आत्मिक अनुभूतियाँ पथरायीं हैं। लोकमंगल की सदानीरा गंगा गँदली हुयी है। मनुष्यता ने जीवनमूल्यों के वस्त्र - आभूषण उतार फेंके हैं।आज अभिशप्त संस्कृति और अप्राकृतिक जीवन के माध्यम से अब जो कुछ भी किया जा रहा है , उसमें प्रथमतः अर्थ की ही महत्ता है। जिससे मानवीय अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो गया है। शब्दों के अर्थ बदल गए हैं। लय भंग हो गई है मानवता की। हम प्रकृति से बहुत दूर चले गए हैं...

यदि हमें जीवन को सार्थकता प्रदान करनी है तो हमें प्रकृति से ही जुड़ना होगा। प्रकृति , पर्यावरण को संरक्षित करना ही होगा। पहाड़ , मैदान , नदियाँ , झरने , खेत खलिहान - पशुधन , वन , मिट्टी आदि को जीवित बचाने के सभी सकारात्मक प्रयास करने ही होंगे...

जीवन की आनंदगंधी लयात्मकता को और मानवीयता को सुरक्षित व समृद्ध करने का कार्य हमारी यह प्रकृति ही तो करती आयी है। हम प्रकृति के माध्यम से उत्सवधर्मी संस्कृति से जुड़ते हैं। यह एक अत्यंत सुखद सार्वभौमिक अनुभूति है जो अकथनीय है और अनवर्चनीय भी। प्रकृति की साकार उपस्थिति ही यही करती है। प्रकृति से साक्षात्कार के क्षण एक युग की तरह होते हैं। एक संपूर्ण और विराटसत्ता से सामीप्य उसकी निकटता की अनुभूति से अंतरंगता और स्मृति से जो आनंद प्राप्त होता है, उस पर संसार भर के सुख न्योछावर होते हैं। चिरआनंद देने वाली प्रकृति का अमर सौंदर्य जब मौन होकर हमारे हृदय में मुसकुराता है तो संसारी मन असंसारी होने के लिए मचल उठता है। व्यग्रता जीवित हो जाती है।यही व्यग्रता , विकलता चुपके से समग्रता को जन्म देती है। हमें बिंदु से सिंधु की ओर ले जाती है। ऊर्ध्वगामी होने की आकाँक्षा ही धरती के गर्भ से निर्झर बाहर लाती है। इसी निर्झर के अमृत जल से धरती की सतह से शिवतत्व का जन्म होता है। प्रकृति विहँस उठती है। सुबह वनपांखियों से चिहुँक उठती है।सूरजकिरण फूल की पंखुड़ियों से बतियाती है। साँझ पश्चिम के आंगन में शुक्रतारे का दीप जलाकर आकाश में मौन का शब्द देती है। यही प्रकृति हमारे सूखे हृदय के क्षेत्र में भाव की सदानीरा बनकर बहती है। वेद की एक ऋचा इसी सदानीरा लोकमंगला प्रकृति के विषय में कहती है ,.मनुष्य की जो आवश्यकता उसके अस्तित्व के लिए आवश्यक है उसे प्रकृति से वह लेकर पूरा कर सकता है। किंतु उससे अधिक जो प्रकृति से लेता है वह चोर है। इसलिए हमारे यहाँ कहा गया है प्रकृति का शोषण नहीं पोषण करना चाहिए। मनुष्य का प्रकृति से संबंध अनेक संबंधों की प्रतिष्ठा के लिए किया गया है। हमारे यहाँ धरती माता है प्रकृति माता है , गंगा माता है , गाय माता है , तुलसी माता है। प्रकृति के साथ मानव का जो आत्मीय संबंध है , वही उसके लिए वरदान है। केन उपनिषद में कहा गया है कि प्रकृति ब्रह्म है। ब्रह्म अर्थात् ईश्वर या परमात्मा की यह मूर्त अभिधारणा वन की एकता की ओर संकेत करती है। साहित्य में

वन देवता की कल्पना भी इसी ओर संकेत करती है। नारियल के फल को श्रीफल की संज्ञा दी गई। सौंदर्य के प्रतीक काम के धनुष तथा बाण के विभिन्न पादपों एवं सुमनों का सहयोग भारतीय जीवन को वनों से आत्मीय संबंध की कथा को स्थापित करता है। भारतीय लोक जीवन में वृक्ष इतनी आत्मीयता से जुड़े हुए हैं कि अनेक त्योहारों को हम वनों में, वृक्षों को नीचे ही मनाते आए हैं। कार्तिक मास की आँवला नवमी जंगल में मंगल मनाने की ओर ले जाती है। वसंतोत्सव के अनेक उत्सव उद्यानों में ही मनाए जाते रहे हैं। प्रकारांतर से यही प्रकृति संरक्षण की अभिधारणा है।

हमारे लोकजीवन में नदी, पहाड़, झरने, वन, कुँआ, तालाब, बरगद, पीपल, तुलसी, आम, महुआ, नीम आदि प्राकृतिक संपदाएँ अत्यंत सघन मानवीय संबंधों की तरह जुड़ी हुयीं हैं। हमारा जीवन प्रकृति में देवत्व की भावना से संबद्ध रहा है।

रामायण काल का एक कारुणिक प्रसंग स्मृतियों में कौंध रहा है।

श्रीरामजी अपनी भार्या सीताजी व अनुज लक्ष्मणजी के साथ गंगा नदी नाव से पार करते हैं। माँ गंगा को प्रणाम करके सीता जी अपने भावी जीवन के लिए आशीष माँगतीं हैं और सकुशल पति और देवर के साथ वापस आकर गंगा माँ की पूजा करने का वचन देतीं हैं=

सियँ सुरसरिहि कर जोरी।
मातु मनोरथ पूरउबि मोरी।।
पति देवर सँग कुशल बहोरी।
आइ करौं जेहि पूजा तोरी।

यह जो निश्छल लोकमन का विश्वास है, यही हमारी सांस्कृतिक चेतना का आधारभूत तत्व है। यही प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करने की उत्कट आकाँक्षा है। यही है लोकजीवन की प्रकृति से आत्माभिव्यंजक जुड़ाव की महागाथा। नदी माँ है इसलिए वह हमारी रक्षा करेगी ही। नदी और नारी का यह वात्सल्य भाव भारतीय संस्कृति का अत्यंत उदात्त पक्ष है।

एक दूसरा चित्र और देखें। यहाँ ससुराल में एक बहन राखी के दिन भाई का इंतजार कर रही है। उसका भाई राखी बँधवाने उसके पास आ रहा है। बहन को आशंका है कि कहीं रास्ते में पड़ने वाली नर्मदा नदी में तेज धार न बहने लगे। इसलिए वह नर्मदा मैया से अनुनय विनय करती है। माँ नर्मदा तुम अपनी धार धीमी ही रखना , आज हमारा वीरन आ रहा है। माँ नरमदे !मैं तुझे चुनरी चढाऊँगी। उसे अपनी धार से सकुशल पार करा देना। संबंधों के लिए समर्पण की पराकाष्ठा का यह श्रेष्ठ उदाहरण अन्यत्र और कहाँ देखने को मिलेगा

नर्मदा मैया तोहे चूनर चढ़ाऊँ
वीरन मोरे को उतारियो पार
नर्मदा मैया तोहे चूनर चढ़ाऊँ।।

नदी को माँ तो कभी बहन के रूप में मानकर पूजने की परंपरा के पीछे जल संरक्षण की मंशाएँ हैं। नदियाँ हमारे देश की भाग्य रेखाएँ हैं और लोकसंस्कृति को नवजीवन देनेवाली

प्रकृति का सान्निध्य ही मनुष्य को लोक जीवन से जोड़े रखता है। आज यह प्राकृतिक परिवेश हमारे जीवन की उच्च आकाँक्षाओं में सम्मिलित कैसे रह पाए..? यह बहुत ही गंभीर प्रश्न है और चिंता का कारण भी। हम जब से प्रगतिशील बने, प्रयोगवादी बने और बहुत आगे बढ़कर भौतिकवादी बने तब से ही हम अप्राकृतिक व्यवस्था के शिकार हो गए।

वत्सला माताएँ हैं। हमारे लोक जीवन में वर्षा ऋतु अत्यंत मनोहारी रूप में आती है। जहाँ संयोगी वनिताएँ अपने पति के साथ आमोद - प्रमोद से रहतीं हैं। वहीं जिसका पिया परदेस गया है और वह कल आने वाला है। ऐसे में मूसलाधार बरसात हो रही है। पति के मार्ग में गहरी नदिया बह रही है। वह विरहिणी नदी से कहती है मेरे पति को सकुशल मेरे पास आ जाने दो... एक और चित्र देखें...

भादों की काली अँधियारी रात का अँधेरा साँय- साँय कर रहा है। हाथ को हाथ नहीं सूझे ऐसी कृष्णपक्षी रात। मूसलाधार पानी साँझ से ही बरसे जा रहा है। मानो बदरा फट गये हों..। झप्पर तर - तर है। पौर में कींच मची है। औसारे में तलैया बन गयी है। बरसा की ठंडी फुहारें नागिन की तरह फूँफकार - सी दाह दे रहीं हैं। गाँव को नदिया ने घेर रखा है। चारों ओर पानी ही पानी है। ऐसी वीभत्स रात में पोर - पोर विरहाग्नि से दहकती विरहिणी की मनोदशा पागल- सी हो रही है। वह भोर होने का इंतजार कर रही है। क्योंकि आज साँझ तक उसका परदेशी प्रियतम घर लौटकर आनेवाला है। जैसे ही पौ फटती है प्रतीक्षारत विरहिन नदी के तट पर पहुँचकर करुण सुरों में गाते हुए नदी से प्रार्थना करने लगती है....

मोरे सैंयाजी उतरैंगे पार
नदिया धीरे बहो....।।

भारतीय नारी का यह स्वरूप मन को उद्वेलित करता है। संवेदनाओं की आग को हवा देता है। आत्म सौंदर्य को घनीभूत करता है। यों तो आज के यांत्रिक जीवन में संस्कार , जीवनमूल्य , संबंध , चरित्र आदि शब्द अपना अर्थ खो चुके हैं। खोखले हो चुके हैं। हमें इस निषेध वाली पाशविक वृत्ति से मुक्तिगामी होने के लिए लोकजीवन को पुनः प्रकृति के सान्निध्य में लाने के उपाय खोजने ही होंगे।

हमारे परम पावन बुंदेलखंड में नर्मदा से लेकर यमुना, बेतवा, सिंध, चंबल, धसान, टोंस, नून, सोन, केन, बागैन जामनेर, सुखनई, पहूज आदि अनेक नदियाँ हैं जिनमें से कुछ तो साल भर बहती रहतीं हैं। केवल कुछ नदियाँ वर्षा काल में ही बहती हैं। इसके अतिरिक्त हमारा बुंदेलखंड वन संपदा से परिपूर्ण है। यहाँ वनों में साल, सागौन, तेंदू, महुआ, खैर, बाँस, आम, इमली शरीफा, चिरौंजी, ताड़, खजूर, बेल, पीपल, नीम चिरौल, हर्र, आंवला, बहेड़ा, पाकड़, पलाश आदि अनेकप्रकार के वृक्ष पाए जाते हैं। इतना सब कुछ होने के बावजूद भी यह वनांचल क्षेत्र अनेक विकासों से अछूता है। इसका प्रमुख कारण है कि हमारे यहाँ जो प्राकृतिक संसाधन है उनका संरक्षण नहीं किया, उन्हें पल्लवित, पुष्पित होने का अवसर नहीं दिया। हम केवल उनका दोहन ही करते रहे। आज जब पूरी दुनिया में पर्यावरण

संतुलन को लेकर चिंता की जा रही है।तब यह भी याद रखना होगा कि यदि हमें अनेक आपदाओं, महामारियों से बचना है तो फिर हमें प्रकृति का संरक्षण करना ही होगा। हमें वृक्ष में वन देवता और वनदेवी की विराट अभिधारणा स्वीकार करनी होगी। नदियों को प्रदूषण से मुक्त करके उन्हें जीवनदायिनी बनाना होगा। जंगली क्षेत्र में जो औषधीय वृक्ष हैं, पौधे हैं, लताएं हैं,

गुल्म हैं। पेड़ और पहाड़ हैं। पठार हैं, पर्वत हैं, नदियाँ हैं, झरने हैं, अनेक कलरव करते पंछी हैं, चौपाये हैं, शेर-हिरण, चीता, भालू इत्यादि जो भी वन्य पशु हैं उनका संरक्षण करके हम मानव जाति को सर्वनाश से बचा सकते हैं। हमारा प्रकृति संरक्षण बहुत छोटी - छोटी बातों पर निर्भर है। गाँव में गैया, हलधर भैया , घर में गौरैया और तुलसी मैया यह सभी प्राकृतिक संतुलन के लिए जीवन को वरदान हैं, उनका संरक्षण करना होगा। गाय, गंगा, गीता, गायत्री, गणेश में जो वैज्ञानिकता है, जिनके पीछे कोई पाखण्ड नहीं है, कोई आडंबर नहीं है जो विज्ञान सम्मत एक सांस्कृतिक व्यवस्था है, उसे महत्व देना है। जिससे हमारा पर्यावरण संतुलित रहे , लोकजीवन उन्नत बने, मनुष्य ही नहीं अपितु समस्त प्राणीमात्र निरोग और चिरायु को प्राप्त हों ऐसी लोक मंगलकामना का संदेश प्रकृति युगों से देती आई है।आज आवश्यकता है हम उस प्रकृति संरक्षण के प्रति अपने को सजग और सचेत करें। आज हम जिस भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के शिखर पर खड़े हैं , उसके शिखर का निर्माण करने वाले कण लोकपरंपरा की नदी में बहकर आते हैं और हमारी संस्कृति को अभिसिंचित करके उसके फूलने फलने में सहायता करते हैं। लोकधर्मी परंपराएं लोक जीवन का प्राण हैं। लोक संस्कृति की प्राणतत्व इन परंपराओं का संवर्धन एवं संरक्षण आज के इस यांत्रिक युग की महती आवश्यकता है, जिससे लोकजीवन शुद्ध वैज्ञानिक एवं जीवनदायिनी प्रकृति से वंचित न रह सके। इस आलेख का समापन किसी कवि कविता से करता हूँ जो जीवनबोध कराती है -

फूल बन उगूँ
फूल चुकूँ तो
सूखने से पहले
पँखुरी - सा बिखर जाऊँ
सार्थकता से कटूँ नहीं
जो कुछ भी सुरभि है
उसे बाँट दूँ
और
चुपचाप झर जाऊँ
जब तक थोड़ा भी रस है
दोनों हाथों से उलीचूँ
अविराम - अविरल
निर्झर - सा झरूँ
चुकते ही
अभिराम हो जाऊँ।।*

कांव.कांव

(लघुकथा)

"सुनते हैं जी! सुबह से राजू अग्रवाल का पाँच बार फोन आ चुका है। पूछ रहा था तिवारी बाबा कहाँ है? उनसे बात करनी है।"

"तो तुम क्या कही उससे?"

"हम कहे कि बाबा पूजा करवाने एक जगह गए हैं।मोबाइल चार्ज नहीं था यो घर पर ही छोड़ गए हैं।"

ठीक है। लाओ मेरा मोबाइल पूछे कि क्या बात है?"

पंडिताइन मोबाइल लाकर तिवारी बाबा को दी। तिवारी बाबा राजू अग्रवाल का नम्बर डायल किया। पहली ही रिंग पर उधर से फोन उठा लिया गया। ऐसा लग रहा था कि राजू अग्रवाल बाबा के फोन के इंतजार में ही बैठा था।

उधर से फोन पर राजू अग्रवाल बाबा को प्रणाम करते हुए चिंतित स्वर में बोला-"बाबा बड़ी परेशानी में हूँ इन दिनों। आजकल दोपहर होते ही घर में कुछ कौवे का झुंड़ आकर कांव-कांव करने लगता है।

मुझे लगता है कि शायद मकान में भूत-प्रेत का वास हो गया है। आप कोई उपाय कीजिए बाबा इस कांव-कांव से छुटकारा पाने का।"

सुनकर तिवारी बाबा ने कहा-" राजू जी! यह कब से हो रहा है? क्या आपने मकान में कोई निर्माण बगैरह करवाया है क्या?"

यह सुनकर राजू अग्रवाल कुछ याद करने लगा और थोड़ी बाद बोला-निर्माण तो नहीं करवाये हैं बाबा! हाँ! मरम्मत करवाये हैं। छत पर पानी टँकी के पास गढ्ढा हो गया था। उसमें पानी जमा रहता था।उसको भी भरवाए हैं बस।

यह सुनकर बाबा को समझते देर नहीं लगी कि गर्मी के दिनों में कौवे का झुंड उस पानी से अपनी प्यास बुझाता था। अब पानी नहीं मिलने से सब कांव-कांव करता है।

उन्होंने राजू अग्रवाल से कहा कि आप छत पर पानी से भरा कोई बर्तन रख दीजिए।आपकी समस्या का समाधान हो जाएगा।

पर भूत प्रेत के डर से डरा राजू अग्रवाल को बाबा के द्वारा बताया समाधान सही नहीं लगा। उसने कहा-"नहीं बाबा!आप आइए और कोई जाप बगैरह कर दीजिए। मेरी पत्नी का भी कहना है कि यह उपद्रव भूत प्रेत की वजह से ही हो रहा है। आप खर्चा और दान-दक्षिणा की चिंता नहीं कीजिए।भरपूर मिल जाएगा।"

तिवारी बाबा उसे लाख समझाते रहे पर राजू अग्रवाल जप-तप की बात पड़ अड़ा रहा।तिवारी बाबा ने दूसरे दिन जप-तप के लिए बीस हजार रुपया का प्रबंध कर रखने की बात कह फोन काट दिया और पंडिताइन से बोले-" स्सला को समझाए पर नहीं माना। ठीक ही है जब तक इंसान के मन में डर बैठा रहेगा अपना धंधा चलता रहेगा।"

पंकज कुमार पाण्डेय

लघुकथा

लंगर बाबा

साढ़े ग्यारह बजे रात को दरवाजा खटका। डिम्पी समझ गई कि इतनी रात को कौन हो सकता है।चट से दरवाजा खोला और तुरत ही प्रश्न दागे-
"क्या मम्मी आज तो हद ही कर दिया आपने। आपको पता भी है कितने बज रहे हैं। आज इतनी देर क्यों कर दी? आखिर थी कहाँ??"
कुछ नहीं बेटा एक जगह बर्तन मांजने का काम और शुरू कर दी हूँ।
मम्मी ने डिम्पी से नज़र बचाते हुए कहा और आटा निकालने लगी।
"अरे! ये क्या कर रही हो, खाना बनाओगी इतनी रात को। पता भी है कितने बज रहे हैं।"
डिंपी रजाई फेंक कर उठी और तिलमिलाते हुए बोली "क्या साधू चाचा मर गए हैं जो आज खाना बना रही हो। तीन महीने से तो हम लोग वहीं से खाते रहे हैं। हम ही क्या हमारी पूरी बस्ती खाती है।"
मम्मी पहले तो चौंकर डिंपी की तरफ देखा फिर जबरन चेहरे पर सहजता का भाव लाकर थोड़ा डरते हुए कहने लगी....
"नहीं बेटा बात वो नहीं है, आज मैं उस गली से आई ही नहीं।" थोड़ा डरते हुए मम्मी ने कहा
"हम जा रहे हैं वहीं से खाना लेकर आते हैं मुझे पाँच रुपए दो।" डिम्पी ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा
मम्मी टालमटोल करना चाहती थी---
"अरे पाँच मिनट ही लगेगा बेटा मैं बना देती हूँ। इतनी रात गए कहाँ जाओगी इस कड़ाके की ठंड में।"
"अरे मम्मी थक कर आई हो.. अब खाना बनाओगी!
पता भी है कितने बज रहे हैं।"
मम्मी ने हथियार डाल दिए। आँचल के कोने में बंधे पाँच रुपए निकाल कर दे तो दिए लेकिन उनके चेहरे पर पता नहीं क्यों पसीने निकल आए । डिंपी पैसे लेकर जितनी ही तेजी से सड़क की ओर भागी मम्मी की धड़कन उतनी ही तेजी से बढ़ रही थी। दस मिनट बाद हाँफते हुए डिंपी वापस आई।
"मम्मी-मम्मी वहाँ पर तो साधू चाचा हैं ही नहीं।" वहाँ पर कुछ पुलिस हैं जो बड़े-बड़े काले कुत्तों के साथ घूम रहे हैं, और दस-बीस लोग तमाशा देख रहे हैं।
"कोई नहीं बेटा मैंने रोटियाँ बना दिए हैं, आओ खा लो।"
"अरे...लेकिन मम्मी मैं तो खाना लेने गई थी तो फिर क्यों आप बनाने लगी..."
"नहीं बेटा सोचा बना दूँ तो कल सुबह भी रोटियाँ काम आ जाएंगी। सुबह थोड़ी जल्दी रहती है न..."
"हाथ धोते हुए डिंपी ने कहा आओ मम्मी ...आप भी आओ साथ में खा लें"
"नहीं बेटा मुझे भूख नहीं है, मैं सुबह खा लूंगी। बहुत थक गई हूँ तो अब नींद आ रही है।"
मम्मी लेट तो गई लेकिन नींद कहाँ .. सोचने लगी कि अब डिंपी के निःशुल्क ट्यूशन का क्या होगा, हम लोगों की भूख का क्या होगा, हमारी इस भिखार बस्ती का क्या होगा।
सबसे बड़ी चिंता थी डिम्पी की पढ़ाई और भविष्य का। अगले दिन जब डिम्पी बगल की पाठशाला पहुँची तो बच्चे अक्षर मिलाकर पढ़ने का प्रयास कर रहे थे-
स पर आ के मात्रा सा...., ध पर ऊ के मात्रा धू साधू च.....
साधू चाचा से निःशुल्क ट्यूशन लेने वाली तेज तर्रार डिम्पी एक झटके में अपनी बारी आने पर अखबार में छपी खबर पढ़ कर नौ बच्चों और एक शिक्षक की पूरी कक्षा को सुनाने लगी--
"नहीं रहे गरीबों के मसीहा लंगर बाबा विपक्षी दल के लोगों ने की गोली मारकर हत्या"
गरीब बच्चों को मुफ्त शिक्षा तथा झुग्गी-झोपड़ियों को मुफ्त भोजन कराने वाले लंगर बाबा की रात आठ बजे गोली मारकर हत्या कर दी गई। सूत्रों की मानें तो विपक्षी दल को लंगर बाबा से विशेष खतरा था। हर चुनाव में विपक्षी दल इन्हीं झुग्गियों से वोट बैंक लेकर जीत हासिल करती थी। लंगर हटाने तथा पार्टी में शामिल होने को लेकर विपक्षी दल का लंगर बाबा से आए दिन विवाद होता रहता था। लंगर बाबा के चले जाने से झुग्गी-झोपड़ियों में शोक की लहर दौड़ पड़ी है। जीवन भर गरीबों के मसीहा के रूप में कार्य करते हुए किसी भी पार्टी में शामिल न होने के संकल्प का निर्वाह करते हुए बच्चों के प्यारे साधू चाऽऽऽ.....

सत्यशील राम त्रिपाठी

चाहत

चाहत को अपने यूँही बर्बाद न कीजिए
जिन्दगी को खुली यूँही जाने न दीजिए

चाहत देश के लिए जरुरी है
अपनी जवानी को
यूँही चाहत न समझिए|
चाहना किसी को बुरी बात नहीं है
चाहकर खुद को मिटाना,
ये जरूरी नहीं है|
मगर चाहत,
चाहत में फर्क होता है
चाहत देश के लिए नहीं,
ये अच्छी बात नहीं है|
चाहत का क्या कभी भी
बदल सकती हैं
आज फेसबुक पर तो,
कल वाट्सअप पर जा सकती है
चाहत को इतना सस्ता मत बनाओ यारो
ये चाहत ही
आपकी देश के काम आ सकती है|
देश के चाहत के लिए ही,
कितने वीरो ने बलिदान दिया
हर आतंकवाद,
नक्सलवाद का सामना किया
चाहत ही थी,
जो वीरों ने देश को आजाद किया
चाहत ही हैं जो हमें,
अपनों ने ही बर्बाद किया |
देश की चाहत,
राष्ट्र की चाहत आबाद होनी चाहिए
हमें अपनों के परे,
भारत माँ की चाहत होनी चाहिए
धर्म, जात से परे
राष्ट्रधर्म की चाहत बड़ी होनी चाहिए
चाहत में दम हो और
हमारे देश की उन्नति होनी चाहिए |
चाहत तो मेरी भी है,
मगर देश से ज्यादा नहीं
प्यार तो मुझे भी हैं,
मगर वतन से ज्यादा नहीं
रिश्तें तो बहुत हैं,
भारत माँ जैसा रिश्ता नहीं
अपने तो बहुत हैं,
मगर स्वदेश जैसा कोई नहीं|

वर्षा मोरे – पावडे

कमली

कमली ....कमली ....कमली

पुकार पुकार के बच्चे उसके पीछे हाथ में पत्थर लिए दौड़ रहे थे।अपने फूले पेट को आंचल से ढ़के वह बेबस हिरनी की तरह इधर-उधर भाग रही थी। अचानक एक ड्योढ़ी का द्वार खुला..... एक संभ्रांत महिला बाहर निकली वह सभी बच्चों को हड़काते हुए गुस्से से बोली, "शर्म नहीं आती किसी बेबस लाचार को सताते हुए " कमली तीव्रता से भागकर ड्योड़ी के भीतर घुस गई। महिला ने उसके सर पर हाथ फेरते हुए... बेटे को पानी का गिलास लाने को बोला ...वह घबराई सी उसकी और देख रही थी...महिला पानी का गिलास उसे थमाते हुए बोली, "ड़रो मत बेटी,यहां तुम्हें कोई खतरा नहीं,तुम पूर्णतया सुरक्षित हो".... बात करते करते ध्यान उसके पेट पर जाकर अटक गया था।महिला समझ गई थी कि वह गर्भवती है झट से भीतर जाकर उसके लिए खाने पीने का सामान ले आई।न जाने कितने दिनों से उसने भरपेट खाना नहीं खाया था। वह खाने पर लगभग टूट सी पड़ी थी।महिला शांति से उसकी और निहारती रही ...पेट भर खाना खाने के बाद कमली के चेहरे पर तृप्ति के भाव टपक रहे थे.. एकाएक वह उस महिला का हाथ थाम गली की नुक्कड़ की तरफ इशारा करते हुए मासूमियत से शिकायत करने लगी... "देखो न उसने मुझे निकाल दिया, मुझे खाना भी नहीं देता और...ssss

मुझे भीतर भी नहीं आने देता माँ ....कहते हुए रूआंसी हो गई।
महिला ने परेशान सी होकर प्रश्न सूचक नजरों से देखते हुए पूछा, "कहां रहती हो तुम?"
वह फिर से गली के नुक्कड़ की तरफ इशारा करते हुए बोली, "मंदिर में" .....
यह सुनते ही महिला ने 'एक ठंड़ी गहरी आह भरी' अब उसे कुछ और पूछने की आवशयकता न रही थी।

विजेता सूरी

नदियां

नदियाँ बहतीं जगत के हित में, सबको नीर दें।
खेत सींचतीं, मंगल करती, सबकी पीर लें।।

सरिता अपना धर्म निभातीं, बहती ही रहें।
कोई कितना कर दे मैला, सहती ही रहें।।
हर नदिया गंगा सी पावन, इतना जान लो।
हर नदिया पूजित, मनभावन,यह तो मान लो।।

नदियाँ सबकी प्यास बुझातीं, सबकी पीर लें।
नदियाँ बहतीं जगत के हित में, सबको नीर दें।।

नदियाँ हैं भगवान की रचना, जिसमें ताप है।
कितना उपकृत करतीं हमको, कभी न माप है।।
नदियाँ युग-युग से धरती पर, जीवनदायिनी।
शुभ-मंगल के गीत सुनातीं, पुण्यप्रदायिनी।।
गंगा-यमुना सी हर नदिया, प्रमुदित भावना।
रोग,शोक,संताप हरे जो, पुलकित कामना।।

नदियाँ हरदम उपकारी है, पीड़ा चीर दें।
नदियाँ बहती जगत के हित में, सबको नीर दें

प्रो (डॉ) शरद नारायण खरे

1.बाढ़

बहुत सी नदियाँ थीं
धरती पर !
कुछ ज़िंदा हैं अब तक...
कुछ विलुप्त हुईं
प्रेम भी
एक विलुप्त होती नदी-सा है!

हम-तुम
वक़्त की कश्ती पर
सवार...
इस विलुप्त होती नदी के
उस पार जाने वाले
अन-बूझे सफ़र के
मुसाफ़िर!

काश!
इस नदी में बाढ़ आ जाए!

2. पेड़ और नदियाँ

सूख रहे हैं,
कुछ पेड़ ...
विलुप्त हो रही हैं,
कुछ नदियाँ !

पेड़ वही...
जो उद्धत हैं,
झूमने और लहराने को...
विलुप्त होती नदियों के किनारे!

और नदियाँ वो...
जो बांधना चाहती हैं
ख़ुद को,
उन पेड़ों की जड़ों से !

पेड़ों का सूख जाना,
नदियों का विलुप्त होना,
लील जाता है प्रायः ...
कितने घने, हरे,
सदाबहार जंगल!!

अंजना

नवगीत

जब से बच्चे बड़े हुए हैं.

साथ समय के टहल टई का,
बदल गया पैमाना.
भौतिकवादी सोच लिए अब,
आया नया जमाना.
मात - पिता दो रोटी खातिर,
बीच कचहरी खड़े हुए हैं.

जली कटी कह बहू सास का,
नित अवसाद बढ़ाती,
गम खाकर बापू की इच्छा,
आँसू पी सो जाती
नभ छूते वो बेशर्मी में,
ये लज्जा से गड़े हुए हैं.

बेबस होकर खड़ी बुढ़ौती,
यौवन करे किनारा.
तिनके कहो डूबते का अब,
बनते कहाँ सहारा,
जनरेशन का गैप बताकर,
ख्यालों के दो धड़े हुए हैं.

राजपाल सिंह गुलिया

व्यग्र पाण्डे

आओ पेड़ लगाएं...

आओ पेड़ लगाएं हम
समझे और समझाएं हम ॥
आम जामुन शहतूत खजूर
पीपल नीम वट हो भरपूर
मीठे फल औषधि के दाता
जंगल फिर से उगायें हम।
फिर से हमसब करें विचार
मित्र सम हो इनसे व्यवहार
पोषित और सुरक्षित रखें
नियम ऐसा अपनाएं हम।
मानसून का इनसे नाता
पेड़ आक्सीजन के दाता
प्रदूषण के महासंकट से
धरती मुक्त कराएं हम।
छांया इंधन इनसे मिलता
धरा का संतुलन संभलता
ऋतुओं के जो संगी साथी
गुण इनके सब गायें हम।
आओ पेड़ लगाएं हम ॥

बरसा पानी ...

आज फिर बरसा पानी
छत भीगी, ओलाती टपकी,
पेड़ों पर आई रवानी।

आज सुबह बहुत थी गर्मी
मौसम में ना थी नरमी
सूरज बाबा आग उगलते
कर रहे थे मनमानी।
आज फिर बरसा पानी ॥

तब ही अचानक खिड़की से
ठंडी हवा का झोंका आया
सूरज छिप गया बादल छाया
आँधी ने की हरकत बिचकानी।
आज फिर बरसा पानी ॥

पहली बारिश मौसम की
इच्छाएं सब रोशन की
छोड़ी सोंधी गंध माटी ने
धरती लगने लगी सुहानी।
आज फिर बरसा पानी ॥

गिराने लगा गगन फुहार
लगता खुशियों का अंवार
बच्चे निकले घर से बाहर
नहाने की जिनने ठानी।
आज फिर बरसा पानी ॥

आहत था लू से जन जन
पड़ी बूँद सब खिल गए मन
गयी छोड़ कर गर्मी यहाँ से
लगता उसे बुलाया नानी।
आज फिर बरसा पानी ॥

व्यंग्य

“आओ, भड़ास निकालें”

-रामकिशोर उपाध्याय

जब-जब किसी साहित्यकार को पुरस्कार मिलता है तब-तब मेरे शरीर में एक अजीब सी झुरझुरी पैदा होने लगती है | अब यह पुरस्कार छोटी-मोटी राष्ट्रीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय संस्था के द्वारा दिया जा रहा हो ,सरकारी या फिर गैर सरकारी हो मुझे मिर्ची लगनी लाजिमी है | पुरस्कार में जब नकद राशि दी जा रही हो तो मेरा चित्त विचलित हो जाता है, जिव्हा पर छह –छह इंच लंबे कांटे उग आते हैं और लेखनी विष-वमन करने को बेज़ार हो जाती है | पता नहीं क्यूँ ? इसी कारण मित्रों ने मेरा नाम भड़ास किशोर कर दिया है | अब मैं भी करूँ भी तो क्या करूँ ? लागि छूटे ना | आखिर मेरे जैसे उत्कृष्ट लेखक होने के बावजूद यह लक्ष्मी मैया इधर आने के बजाय हर बार इधर -उधर क्यों चली जाती है ? उत्कृष्ट लेखक होने का निष्कर्ष मेरा अपना है और इस विषय में मैंने किसी अन्य का कोई अहसान नहीं लिया है | अपुन चार दशकों से अधिक समय से रोजी –रोटी से लेकर प्रशंसा करने तक के हर मामले में आत्मनिर्भर हैं | अतः आप इसे अपने दिल पर मत लेना कि मैं स्वयं की प्रशंसा कर रहा हूँ | भाई, आप लोग न तो प्रशंसा करते हैं और न ही कोई सम्मान - नकद पुरस्कार देते हैं,तो मेरे लिए आत्मप्रशंसा के अतिरिक्त विकल्प कोई हो तो मुझे बताया जाय | साहित्यिक-पुरस्कार राशि को सहेजने के लिए मैंने एक चमड़े का शानदार बैग ऑर्डर देकर बनवाया है ठीक वैसा ही जैसा देश का वित्तमंत्री बजट पेश करने के लिए सदन में लाता है | पिछले बीस साल से मैं इसको लेकर हर साहित्यिक समारोह में जाया करता हूँ लेकिन मेरे उत्कृष्ट लेखन के बाद मेरा यह लेदर बैग सम्मान-राशि का चेक या नकदी संभालने के लिए अभी भी तड़प रहा है| जब कोई नोटिस ही नहीं करता तो मेरी मानसिक स्थिति को आप राजस्थानी के इस लोकगीत से समझ सकते है ---

सगळा साथी परण्या
मैं तो रयो कँवारो टाबरियो

लोकगायक कालूराम प्रजापति के श्रीमुख से यह लोकगीत मैंने उन्नीस सौ अस्सी में जोधपुर प्रवास के दौरान सुना था | तब से यह मेरे जेहन में बैठ गया है | दिल में एक हूक सी उठती है |पुरस्कारों के समय तो यह बिन बजाए मेरे अन्तर्मन में स्वतः बज उठता है | आप भी इस लोकगीत को यू ट्यूब पर सुन सकते हैं | इस स्थिति के चलते होता क्या है कि जैसे ही कोई संस्था पुरस्कार की घोषणा करती है,मैं बिना साबुन से हाथ धोये उसके पीछे पड़ जाता हूँ | पुरस्कार-गृहीताओं से पता करता हूँ कि उन्हें यह उपलब्धि कैसे हासिल हुई | अभी एक लेखक को एक संस्था ने सम्मानित किया तो मैंने पूछा कि आपको तो उत्तरप्रदेश का यश भारती सम्मान मिल चुका है तो इस छोटे सम्मान को क्यों ले रहे हैं ? क्या जुगाड़ लगाया ? मेरे विचार से हर संस्था पैसे लेकर साहित्यकारों को सम्मानित करती है क्योंकि हर साहित्यकार सम्मान की अमिट भूख लिए जीता है | बस इसी अनुमानित निष्कर्ष के सहारे मेरी लेखनी भड़ास निकालने के लिए आतुर हो जाती है | अब मेरे इस निष्कलंक मन को कौन समझाये कि सभी संस्थाएं ऐसा नहीं करती हैं ,आखिर कुछ लोग तो लेखन प्रतिभा या योग्यता का भी सम्मान करते ही हैं | फिर यह सम्मान देने वालों की मर्जी वे किसी को सम्मानित करें या न करें | हम कौन होते हैं दाल-भात में मूसरचंद |लेकिन मेरा विघ्नसंतोषी मन नहीं मानता कि ये संस्थाएं मेरी तरह से किसी का अकारण अपमान भी तो नहीं कर रहीं हैं |

मेरे इस भड़ास निकालो अभियान में मेरी कटु वाणी के बाद मेरे सहायक बनते हैं- कुछ न बिकने वाले छुटभैया टाइप के समाचार पत्र | उनके अखबार में इन सब बातों के लिए प्रचुर स्थान होता है और वे स्पष्टीकरण लिए बिना कुछ भी छाप देते हैं | उन्हें भी तो आखिर अपने विज्ञापनदाताओं को संतुष्ट करना होता है |

” भाई ,तुम यह सब किसी के विषय में क्यों उल्टा सीधा अखबारों में लिखते रहते हो ?" एक दिन गृहागत मेरे मित्र अनोखे लाल गार्गी ने पूछ ही लिया |

" भाई , इन पुरस्कारों के कारण साहित्य का बहुत नुकसान हो रहा है | यह मेरा साहित्यिक दायित्व है कि मैं पाठकों को सत्य से अवगत कराऊँ | आप तो ठहरे व्यापारी ,आप साहित्य, साहित्यकार की सूक्ष्मताओं और पाठक-वृंद को नहीं समझते | अच्छे लोग पुरस्कार नहीं प्राप्त कर रहें है ,यही मेरी चिंता है जिसे मैं अखबारों में लिख कर उजागर करता रहता हूँ ताकि जन-जागरण हो सके (अब उन्हें यह तो कह नहीं सकता कि कोई मुझे पुरस्कृत नहीं कर रहा है)|

मित्र अनोखे लाल गार्गी साहित्य के विषय में अनभिज्ञ होने के कारण तत्क्षण चुप होकर आत्मचिंतन करने लगे | लेकिन वे सब समझते थे, आखिर उन्होंने भी जीवन में बहुत बार टोपियाँ बदली हैं | कॉंग्रेस के परिवारवाद, समाजवाद, बहुजनवाद के रास्ते अब राष्ट्रवाद की डोर बखूबी थाम चुके हैं | उत्तर भारत के शाही सीमेंट के होलसेल डीलर हैं |अतीत में सीमेंट में मिट्टी मिलाने के अपराध में जेल में कुछ दिन सैर सपाटा का अनुभव भी रखते हैं | अल्प विराम के बाद कहने लगे , "भाई अपुन तो बिजनेसमैन हैं | हमें बस यह पता है कि किस अधिकारी को कितने पैसे देकर काम निकलवाना है | साहित्य -वाहित्य तुम जानो | तुम ठहरे बड़े लिक्खाड़ |"

यह सुनकर मैं मुस्कराये बिना न रह सका | मित्र अब कहाँ रुकने वाले थे ,फिर बोल उठे, ‘सुना है पुरस्कार तो किताब लिखने वालों को मिलते हैं| तुमने अभी तक कितनी किताब लिखी हैं ? हमें किसी लोकार्पण या विमोचन में आज तक कभी नहीं बुलाया |’ इसका उत्तर देता इसके पहले मेरी चुप्पी को तोड़ते हुये मित्र ने सुझाव दे डाला कि तुम एक किताब लिखो , भड़ास पर |

" भड़ास पर ? "

' हाँ, आपका इस क्षेत्र में बहुत व्यापक ज्ञान है | इसी ज्ञान से अर्जित ख्याति की बदौलत आप कईयों का अच्छा खासा बैंड बजा चुके हो | आपने तो कभी ‘जज’ का इम्तेहान भी दिया था | अतः कानूनी दांवपेच खूब जानते हो कि कैसे मानहानि का मुकदमा झेले बिना किसी को अपमानित किया जाता है | उस पुस्तक का शीर्षक रखो "आओ भड़ास निकालो " | कहकर मित्र संडास की ओर भागे | लौटकर आये तो फिर कहने लगे कि इसका विमोचन सरकार द्वारा सम्मानित किसी ऐसे व्यक्ति से करना जिसे पुरस्कार में कोई राशि न मिली हो ,क्योंकि तुम्हें पुरस्कार राशि से घृणा हैं | आजकल समाज के हर क्षेत्र में भड़ास निकालने वालों की संख्या में दिन-प्रतिदिन बेतहाशा वृद्धि हो रही है | अतः प्रकाशित होते ही यह पुस्तक बेस्ट सेलिंग बुक्स की श्रेणी में खड़ी दिखाई देगी और आपका चिर अतृप्त लेदर बैग हरे और गुलाबी नोटों से अपनी भूख मिटाने लगेगा |

मित्र की यह बात सुनकर मेरा मन द्विगुणित उत्साह से बल्लियों उछालने लगा भर गया | उनके प्रस्थान करते ही दर्पण के सामने जाकर खड़ा हुआ तो देखा मेरे चेहरे पर घृणा के दागों के स्थान पर दिव्य आभा दिप –दिप कर टपक रही थी | कलतक नामक राष्ट्रवादी चैनल पर खबर चल रही है कि ख्यात साहित्यकार भड़ास किशोर की प्रथम पुस्तक “आओ ,भड़ास निकालो" लिखने का काम अंतिम चरण में है | कई अखबार और पुस्तक -प्रकाशक प्रिंट राइट लेने की जुगत भिड़ा रहें हैं |

जल का संरक्षण : प्रमोद कुमार

जल का संरक्षण।
समय की माँग।
वसुधा बंजर।
हो कर बन।
जाएगी वीरान।
जो न समझे।
हम इंसान ।।

सूखा पड़ना।
भू जल गिरना।
क्या होगा।
इसका परिणाम ।।

जल का संरक्षण।
समय की माँग।
वसुधा बंजर।
होकर बन।
जाएगी वीरान।
जो न समझे।
हम इंसान ।।

तालाब पोखर।
और जलाशय।
हे इंसान।
इनके महत्त्व
को जान।।

जल का संरक्षण।
समय की माँग।
वसुधा बंजर।
होकर बन।
जाएगी वीरान।

जो ना समझे।
हम इंसान ।।

वर्षा जल संचयन।
और पुनर्भरण का।
हे मानव आप ।
समझो ज्ञान।

जल का संरक्षण
समय की माँग।
वसुधा बंजर होकर।
बन जायेगी वीरान।

जो ना समझे।
हम इंसान ।।

जल का संरक्षण।
समय की मांग ।।
वृक्ष हवा को।
शुद्ध है करते।
वर्षा जल।
को सोखा करते।
भू जल को।
रिचार्ज है करते।
जानो इनका।
महत्व विधान ।।

जल का संरक्षण।
समय की माँग।
वसुधा बंजर।
होकर बन।
जायेगी वीरान

जो न समझे।
हम इंसान ।।
जल का संरक्षण।
समय की मांग।
वसुधा बंजर।
होकर बन।
जायेगी वीरान।

संकट में जीवन

"अरे... तू सभ यहाँ रात के काहे अयली? तोहरा के रहे खातिर और कहीं जगह नई खे भेटल ? " दलित के दालान के कोने में बने रोशनदान पर रखे लालटेन के पास दो बच्चों संग भटक कर आई मैनी को यह आवाज जैसे ही सुनाई पड़ी ,उसने झट से पलट कर देखा , नीचे ... कच्ची जमीन हिल रही थी, मानो अंदर से आवज़ आ रही हो | सन्नाटे में यह रहस्यमय आवाज सुन वो सहसा काँप उठी। मन ही मन बुदबुदायी, " हे भगवान ! यहाँ भी खतरा है !"

लेकिन हिम्मत बाँध कर मैनी ने जवाब दिया ,"क्या करूँ ! चार दिनों से मैं और मेरे बच्चों ने एक घूँट पानी नहीं पीया है! प्यास से हमारे कंठ, तालू सूख रहे हैं ! इस भीषण गर्मी में डबरा , तालाब सब सूख गए ! बारिश का कोई आसार नहीं दिख रहा है ! दिन में लू चलती है।ओह! मेरे बच्चे प्यासे मर जाएंगे !" दोनों बच्चों को सीने से लगाकर वह रोने लगी।

मैनी को इस तरह व्याकुल देख जमीन के नीचे से फिर आवाज आई,
" सुन, ई सब आधुनिक मानव के दोष हइ | वही लोगन जंगल काट के बेहिसाब अट्टालिका खड़ा कर देलकै ! नदी पर बड़का-बड़का पुल और बाँध बना कर ओकरा बाधित कर देलकै। तइसे नदी के बहे के स्वतंत्रता छिन गइल ! ओकर पेट में बालू भर गइल हइ ! जकरे कारण पानी पाताल चल ... "

अभी उसकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि मैनी ने झुँझलाते हुए कहा ,
" भाषण देना बंद करो | इससे पहले मेरे सामने दोनों बच्चे मर जाएँ , हम तीनों एक साथ लालटेन में भरे मिट्टी तेल को पी कर प्राण त्याग देते हैं ! ताकि कल सबेरे मीडिया वालों को पता चल जाएगा कि पानी के खातिर दलित के घर में मैनी ने दो बच्चों संग आत्महत्या की है !

फिर देखना कितना अफरातफरी मचेगी ! आत्महत्या का फोटो अखबार में छापेगा ! तभी सरपंच , मुखिया से लेकर सरकारी महकमे नींद से जागेंगे ! जांच-पड़ताल शुरू होगी। हमारे जात-बिरादरी को पानी के लिए आत्महत्या नहीं करना पड़े , इसी आतंक से दो-चार सूखे तालाब, डबरा का उगाही भी किया जाएगा। जो मेरे जीते जी नहीं हुआ वो मरने का बाद जरूर होगा ! लेकिन, कृपया करके तुम कौन हो बता दो। ताकि मुझे संतोष रहे कि हमारी आत्महत्या करने से पहले किसी की संवेदना जगी थी।"
मैनी की वेदना सुनकर जमीन को फाड़ता हुआ हो.. हो..आवाज करके अमृत स्रोत फूट पड़ा | उसने अश्रुपूरित नयनों से कहा," बहना, मैं जल हूँ।"
सुनकर मैनी को लगा,जैसे तप्त रेत पर देर तक चलने के बाद सावन बरस गया !
" दोनों बच्चों के संग मैनी भाई से लिपट कर तृप्त होने लगी |"
सबेरे होते ही ग्रामीण, पत्रकार एवं मीडिया वालों की भीड़ जुट गई , फोटो भी खूब खींचे गए। लेकिन मैनी के आत्महयता की नहीं ... जमीन से जलस्रोत फूटने की।

मिन्नी मिश्रा

बिटिया!!!

लघुकथा

बिटिया, बदल गई तुम!

मेरी प्यारी बिटिया, ढेरों प्रेम भरा स्नेह और आशीर्वाद।

जानता हूँ अपने मेल बॉक्स में मेरी मेल देखकर तुम हैरान अवश्य हो रही होगी, क्योंकि शायद ही कभी मैंने तुम्हें कोई पत्र लिखा होगा और वह भी इस आधुनिक ढंग से। दरअसल आज सुबह से ही तुमसे कुछ कहना चाहता था, लेकिन फ़ोन पर कह सकूँगा या नहीं; इस बात में संशय था। फिर पत्र में लिखकर भेजने का विचार आया, लेकिन डाक में इसका जल्दी मिलना भी संभव नहीं था। और मैं अपनी बात तुम तक; जितना जल्दी हो सके पहुँचा देना चाहता था। अनायास ही मेरे मन में विचार आया कि क्यों न मैं अपनी बात तुम्हें मेल के जरिये कहूँ। और फिर यही विचार फाइनल होने के बाद आखिर रात के दूसरे पहर में मैंने अपना लैपटॉप उठा लिया। मैं ये पत्र तुम्हें कभी नहीं लिखता और शायद ये सब जान भी नहीं पाता, यदि तुम्हारी अपनी माँ से हुई बातों की जानकारी मुझे नहीं मिलती। मुझे पता ही नहीं लगता कि तुमने अपनी बचपन की सखी के 'एक गलत फैसले' पर न केवल उसका समर्थन किया है, बल्कि उसके फैसले में मददगार भी बनने जा रही हो। बिटिया, कहते हैं कि घर में एक बच्चा 'गर्ल चाइल्ड' तो होना ही चाहिये। देवी का रूप होती हैं लड़कियाँ। लेकिन मेरे परिवार की तो 'चाइल्ड गर्ल' भी तुम ही थी और 'चाइल्ड बॉय' भी तुम। और वैसे भी ये दैवीय रूप तो हर बच्चे में होता है, बस जरूरत है इसे दिल से महसूस करने की। सच कहूँ तो हमारे जीवन का तो ध्येय ही तुम रही और लक्ष्य भी तुम ही रही। तुम हमारे लिए हमेशा ही एक इन्द्रधनुषी सपना रही हो जिसके रंगों में हमें तुम्हारा हंसना,बोलना,रुठना,रोना और तुम्हारा सोना-जागना, सभी कुछ नजर आता रहा है। इन्हीं इन्द्रधनुषी रंगों के आसमान में अपने रंग बिखेरते-बिखेरते तुम कब इतनी सयानी हो गई कि कब अपने प्रश्नों के उत्तर पूछते-पूछते तुम हमारे प्रश्नों के उत्तर भी देने लगी, हमें पता ही नहीं लगा।. . . शायद तुम्हें याद होगा, कि जब एक दिन 'लिंग-विभेद' के प्रश्न पर मैंने तुम्हे समझाना चाहा था कि 'इट्स नेचुरल बेटा; होता है ये समाज में।' तो सहज ही कितने प्रश्नों की झड़ी लगा दी थी तुमने?

"नहीं पापा... इट्स नॉट नेचुरल। नहीं होना चाहिए ऐसा... और आप तो कभी नहीं करते पापा। और जो करते हैं, नासमझ हैं वे, अशिक्षित हैं वे लोग... उन्हें तो अपनी बेटियों को पढ़ाना चाहिए पापा। आखिर यही तो रास्ता है इन रूढ़ियों को काटने का।"

मैं अक्सर सोचता था। अगर ऐसे प्रश्न पूछने वाली बेटियाँ, बहुएँ हमारे समाज में जाग्रत हो जाए तो कोई कारण नहीं कि हमारा समाज नारी से जुड़ी विसंगतियों पर अंधकार के माहौल में रहे। ऐसी विचारधारा से तो इन विसंगतियों का अंत होना निश्चित ही है। लेकिन . . . आज तुम्हारी बात ने मुझे अपनी बात पर फिर से सोचने पर विवश कर दिया है। मुझे लगता है कि हमारी शिक्षा में ही तो कोई कमी नहीं रह गई थी जो आज तुम वह करने जा रही हो, जिसके लिए मेरे विचार कभी तुम से सहमत हो ही नहीं सकते। सुनो बिटिया, हमारे लिए तो तुम बेटी भी रही हो और बेटा भी। हमने हमेशा तुम्हें कहा था कि जब भी तुम्हें लगे कि बेटी होने के कारण हमने तुम्हारे साथ कोई फ़र्क़ किया है, तो चुप मत रहना; विरोध करना हमारा; लड़ जाना हमसे, लेकिन झुकना मत हमारे सामने। ये समाज भी तब ही बदलेगा, जब तुम्हारे जैसी बेटियां आक्रोश रूपी विरोध की मशाल लेकर इस समाज की वंशवादी सोच को ध्वस्त करेंगी। मुझे बहुत शर्म आती है ये कहते हुए कि कभी हमारे इस 'महान देश' में हजारों बेटियों को जन्म लेते ही मार दिया जाता था। समय बदला। लोग पहले से अधिक शिक्षित हो गए, लगा अब ऐसा नहीं होगा। लेकिन नहीं, हालात नहीं बदले। हाँ सच में हालात नहीं बदले। हाँ तकनीक जरूर बदल गई, तरीके बदल गए हैं। अब बेटी को जन्म लेने की प्रतीक्षा नही करनी पड़ती। अब कोख में ही पहचान करने की तकनीक एक 'कँटीला वरदान' जो बन गई है, कुछ हृदयहीन मानव रूपी दैत्यों के लिये। दरअसल उन्हें सच में नहीं पता कि बेटियाँ क्या होती हैं? जिन लोगों ने स्वर्ग देखा ही नहीं, उन्हें उसके सुख का अनुभव हो भी नहीं सकता।. . .

बस बिटिया! अगर समझ सको तो यही सब बताना है तुमने, इस गूंगे और बहरे समाज को। उस समाज को जो न सच बोलना चाहता है और न सच सुनना चाहता है। हाँ ये हो सकता है, तुम्हें भी लगा हो कि पितृसत्ता में वंश का बहुत महत्व होता है। क्योंकि ये बात युगों-युगों से भारतीय सभ्यता के मन में कूट-कूट कर भर दी गई है। इसी कारण पुत्र की कामना हर भारतीय परिवार में की जाती है। लेकिन ध्यान रखना बेटी, इंसान अपने कर्मों से अपनी पहचान बनाता है। वंश और परम्पराएं, ये सब तो एक छलावा है जो हर युग में इंसान को छलती आई हैं। बिटिया, तुम्हारा जन्म बेशक एक नारी रूप में हुआ है, लेकिन सिर्फ इसी से तुम्हारा महत्व कम नहीं हो जाता। सृष्टि के लिए जितनी जरूरत पुरुष की है उससे कहीं अधिक स्त्री की है। यही बात समझानी है तुम्हें अपनी सखी को। हो सकता है कि वह भी किसी दबाव में ही ऐसा निर्णय ले रही हो या हो सकता है वह तुमसे नाराज हो जाए, तुम्हारे इस असहमति और असहयोग भरे उत्तर से। लेकिन दोनों ही स्थितियों में तुम्हें अपने निर्णय पर डटे रहना होगा। अपने निर्णय से अपनी सखी को ही नहीं, उसके परिवार को भी सहमत करने का प्रयास करना होगा। अपने निर्णय का औचित्य बताना होगा सबको। जानता हूँ कि बहुत कठिन है यह सब, लेकिन यदि तुमने एक परिवार को भी इस नेक कार्य के लिए सहमत कर लिया तो ये एक बहुत उपकार का कार्य होगा बेटी। बस यह मान लो कि अपनी सखी के आसपास छाए दबाव और असमंजस के बादलों का छांटना ही तुम्हारी प्राथमिकता होनी चाहिए।. . . और क्या कहूँ बिटिया, बस एक बात हमेशा याद रखना कि हमने तुम्हें स्त्री रूप में ही एक सम्मानित जीवन देने का पूरा प्रयास किया है और हम हमेशा चाहेंगे कि तुम भी किसी आने वाली 'स्त्री शक्ति' के जन्म का विरोध करने वाली न बनों, बल्कि उसके लिए स्वयं एक शक्ति बनकर सामने खड़ी हो जाओ। बहुत कुछ कह चुका हूँ अपना अधिकार समझकर, एक बार सोचना जरूर। मेरा कर्तव्य था तुम्हें ये सब याद दिलाना। अब आगे क्या करना है, यह निर्णय तुम्हारा है, आख़िर तुम स्वयं बहुत समझदार हो।

अनगिनत उम्मीदों के साथ. . . स्नेह और असीम आशीर्वाद सहित तुम्हारा पिता।

. . . वीर

विरेंदर 'वीर' मेहता

गिफ्ट

शमीम साहब हैरान-परेशान है,सप्ताह दिन से नेता जी को खोजते फिर रहे है,पर नेता जी है कि अपना टेबल कुर्सी छोड़ न जाने कहां गायब हो गए है। नेता जी से शमीम साहब का भेंट होना बहुत जरूरी था परन्तु नेता जी से शमीम साहब का भेंट हो भी तो कैसे हो ? किसी से पुछे तब न कोई कुछ बताये उन्हें। कहां मिलेंगे, कब मिलेंगे ! वह तो मन ही मन राधा रानी की तरह कृष्ण को खोजते फिर रहे थे जैसे!

ओभरसियर से नये नये सिविल इंजीनियर बने थे शमीम साहब, सो सुबह-शाम ठेकेदारों से मेल जोल बढ़ाने में भी लगे हुए थे। लेकिन जिनकी कृपा से तारापुर कोलियरी में उनकी एज ए इंजीनियर पोस्टीन्ग हुई थी उनसे अभी तक मुलाकात न होना अब उसे अखरने लगा था। बेचैन करने लगा था।

और फिर नेता जी तो कोई खधरधारी नेता थे नहीं,जो दूर से ही खदबदाते हुए नजर आ जाते,उनकी साफ छवि और सादगी भरा जीवन किसी भी छुट भैये नेताओं पर भारी ही पड़ता रहा है और ऐसे लोग भीड़ में नहीं -एकला चलो की राही होते है। अच्छे काम और अच्छे परिणाम पसंद लोगों के बीच ही ऐसों का बसेरा होता है।

नेता जी भी एकदम से किसी कोने से नेता नहीं लगते ! साधारण कपड़े, पेंट-शर्ट, साधारण पहनावे में वह बिल्कुल अलग ही लगते थे -फिल्मों के आलोक नाथ जैसे।

देह-दशा में भी नेता नहीं लगते ।बारह साल आफिस में काम करके भी पसली में पाव भर मांस नहीं चढ़ा तो और क्या ढुंढिएगाश, नेता का एक भी लक्षण ढुंढने से नजर नहीं आता। पूरा वेष भूषा एक दम गंवई ! एक दम मजदूर से भी गए गुजरे हैं हमारे नेता बाटुल दा।

अरे नेता माने नेता-देह से, कपड़े से, चलने-फिरने, उठने-बैठने, में झलक आनी चाहिए जिनमें ये सारी खुबियां हो वो आज का नेता !

जिनमें अक्कड न हो वो किसी एंगल से नेता नहीं माना जा सकता है। उसकी हर बात में नेता गिरी की झलक आनी चाहिए। पर हमारे बाटुल दा ने ई सब सीखा ही नहीं ! सुना है आज तक कंपनी क्वाटर भी नहीं लिया है। दूसरा होता तो दो चार क्वाटरों में अलग से कब्जा कर दबंग नेता का खिताब पा चुका होता। लेकिन यह तो अपना एंटीना सीधे गांव से जोड़ रखा है। आज भी अपनी फटफटी से घर से आना जाना करते हैं। इसका वो दो फायदे कायदे से बताते हैं-" गांव के लोगों से जुड़ाव बना रहता है और दूसरा परिवार के साथ जीवन गुजारना परम सुख की प्राप्ति होती है जो शहर या क्वाटर में रहकर आप कभी नहीं पा सकते हैं।"

लो कर लो बात,आज भला परम सुख के पीछे कोई भागता है भला, सभी को बाप बड़ा ना भैया, सबसे बड़ा रुपैया " पसंद है और हमारे बाटुल दा परम सुख के पीछे पड़े थे।

लगता है न अद्भुत विचार का धनी !

किसान परिवार से मर खपकर कोलियरी तक पहुंचे हैं!

नेता गिरी कहां से सीखते बाटुल दा ! वरना इतना अच्छा काम करते हैं मजदूरों का -इनको तो अभी तक मजदूरों का बड़ा नेता हो जाना चाहिए था। खादी -वादी पहन कर रहना चाहिए, पर ये तो मजदूरों को सुधारने की बात करते चलते हैं "शराब मत पियो,जुआ मत खेलो, इससे कई पीढ़ियां अपंग हो जाती है...।"

अरे नेता माने नेता होता है, खादी-वादी पहनो, मजदूरों के बीच दस में नौ झूठ बोलो। लोगों के बीच बड़ी बड़ी डीन्गे हांको, फलना-ढकना को ढंक कर रखो और चिलना को चलान करवा दो और ऊपर से एक आध बात फोड़ दो-" कौन अफसर मेरा कहा नहीं मानेगा,ऐसी जगह ले जाकर पटकुंगा कि जहां दारू भी नहीं मिलेगा आदि आदि....!

तो बाटुल दा ने बड़ा निराश किया शमीम साहब को, वो खधडधारी नेता जी को खोजते फिर रहे थे और मिला बाटुल दा मामूली किरानी के रूप में !

" गजब का चकमा दिये आपने बाटुल दा,हम तो समझे थे, नेता जी मतलब कोई बड़ा नेता होगें "

" हम चौथी बार मिल रहे हैं...!" बाटुल दा ने जवाब में कहा था।

" हां.. और हर बार आपको पहचानने में हमसे भूल होती रही ...!"

गिफ्ट के तौर पर कई पैकेट सामने टेबल पर रखते हुए हाथ जोड़ लिए थे शमीम साहब ने।

" गिफ्ट माने रिश्वत ! मुझे काम चाहिए गिफ्ट नहीं। यहां रहना है तो ईमानदारी से काम करना होगा। आपका काम ही हमारे लिए गिफ्ट होगा...!"

" आपको निराश नहीं करूंगा नेता जी...!"

श्यामल बिहारी महतो

कैमरा

आचार्य जब तक शिक्षक के पद पर थे तब तक हमेशा कर्मच्युत ही रहे, लेकिन आचार्य की व्हीलचेयर पर बैठने के बाद धर्म, न्याय, नीति, कर्तव्य और निष्ठा पर घंटों तक भाषण देने लगे। सभी शिक्षकों के काम पर कड़ी नज़र रखने लगे। आज़ आचार्य ने शिक्षकों को कर्मनिष्ठ बनाने के लिए एक चिंतन शिविर का आयोजन किया है। शिविर शुरु होने से पहले शर्मा जी बोले- "आज़ बीमार मां की ख़बर पूछने के लिए मुझे मजबूरन वर्गखंड में मोबाइल का उपयोग करना पड़ा। लगता है आज़ बड़े साहब की डांट सुननी पड़ेगी।"
चावड़ा जी- "धीरे बोलो! यहां दीवारों के भी कान होते हैं। हो सकता है बड़े साहब का कोई भेदिया यहां पर बैठा हो! अब पढ़ाते समय पूरा ख्याल रखना, क्योंकि सभी वर्गखंडों में सीसीटीवी कैमरे लगा दिएं हैं।"
त्रिवेदी जी- "अधिकारी से एक क़दम आगे नहीं चलना चाहिए और गधे के एक क़दम पीछे।"
जाडेजा जी- "मज़ा तो है मौन रहने में। जो हो रहा है होने दो, जो चल रहा है चलने दो। बस चुपचाप देखते जाओ।"
राणा जी- "अधिकारी की जी-हजूरी करना सीख जाओ, जीवन में कोई मुश्किलें नहीं आएगी।"
रावल जी- "साहब, इसके लिए ईमान को बेच देना पड़ता है।"
पवन कुमार- "नौकरी को छोड़ सकता हूं, लेकिन अपने ईमान को नहीं बेच सकता।"
इतने में आचार्य आ गये और आते ही कर्त्तव्यनिष्ठ पवन कुमार को झपट में ले लिया- "आज़ आप पहला पीरियड शुरू होने के पांच मिनट बाद वर्गखंड में गएं हैं। यदि आपको मेरी बात पर विश्वास न हो तो सीसीटीवी कैमरे में देख लीजिए।"
पवन कुमार को अपने अस्तित्व पर जैसे कुठाराघात लगा और बेधड़क होकर बोले- "साहब जी, कैमरे लगाकर अपने कर्मचारियों पर नज़र रखते हो और अपनी गुप्तचर एजेंसी के द्वारा उनकी सूक्ष्मातिसूक्ष्म जानकारी प्राप्त करते हो, लेकिन क्या कभी आईने के सामने खड़े होकर आत्ममंथन किया है कि आज़ तक मैंने किया क्या है? साहब जी, कैमरा लगाना ही है तो ख़ुद पर लगाइए, ताकि आपको भी अपना असली चेहरा दिख सके।"
चिंतन शिविर में बैठे हुएं सभी शिक्षकगण एक दूसरे को देखने लगे और मन ही मन पवन कुमार की वाहवाही करने लगे। आचार्य मुंह से एक शब्द भी नहीं बोल पाए और आत्म-चिंतन करने के लिए विवश हो गए।

समीर ललित उपाध्याय

लघुकथा श्यामल बिहारी महतो

बेटा बना साढू

शाम के सांझ बाती के समय गांव के मंदिर में भजन आरती हो रही थी तभी गांव के इस छोर से उस छोर तक हल्ला मच गया-" गांव के महेश ने मौसी संग बिहा कर लिया..बिहा..आ ....!"
जीटी रोड से सटे गांव डोमनीडीह में जैसे डमरू बजा उठा था।
जिसने सुना उसी ने चार गाली सुनायी " देखो आज का युवा जाने, किस दिशा में जा रहा है "
" मौसी, माय बराबर ! उसके साथ बिहा..!"
" अब कौन विश्वास करेगा कि यह सब भाई बहन के बीच नहीं होगा..?"
" महेशवा ने गांव गंधा दिया ..!" कुछ लड़के भी भड़के भड़के से दिख रहे थे।
" मोबाइल युग में सब मनमौजी हो गया है, ताक-झांक काफी बढ़ गया है.। कल ही रमेशवा छिप कर कपड़े पहनते हुए भाभी का फोटो खींचते पकड़ाया है !बाप रे बाप कौन किस पर भरोसा करें !" औरतें भी खूब भचर भचर करने लगी थीं।
" हद हो गई है! डायन भी अपने घर में मुंह मारने के पहले हजार बार सोचती है पर यह महेशवा साला मौसिये पर हाथ डाल दिया ..!" भगतु बुढ़ा बैठे बैठे कुढ रहा था।
साल भर से महेश का अपने ही मौसी मालती के साथ लव सव चल रहा था। जब इसकी भनक महेश के घर वालों को हुई तो कड़ा एतराज जताया गया और रिश्ते को कलंकित न करने की चेतावनी दी गई ! पर महेश और उसकी मौसी मालती अपने बढ़े कदम पीछे खींचने के बजाय छिप छिपकर मिलना जारी रखा और जब दूरियां बर्दाश्त नहीं होने लगी तो दोनों दो कदम और आगे बढ़ आये और समाज और संस्कार को धकियाते हुए एक दिन मंदिर में जाकर शादी कर दोनों थाने पहुंच गये। दारोगा जी ने दोनों के परिवार को थाने बुलाया और कहा " जो करना था इसने कर लिया। दोनों जवान है। दोनों कोर्ट मैरिज के लिए रजिस्ट्रेशन भी करा लिया है। अब आपके मानने न मानने से इस पर कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है.. क्या कहते है आप लोग....?"
बाप ने बिफरते हुए कहा-" मैं इस रिश्ते को जीते जी स्वीकार नहीं कर सकता हूं ! मेरे घर के दरवाजे इसके लिए हमेशा से बंद !"'
" आज से यह मेरी बेटी नहीं है। जाए कहीं डूब मरे। मेरे दरवाजे पर कदम रखा तो खैर नहीं....!" मालती का बाप बोला।
डोमनीडीह में हुआ यह प्रेम विवाह क्षेत्र में चर्चा का विषय बन गया था ।विकट स्थिति यह हो गई थी कि इस रिश्ते को कोई मानने को तैयार नहीं था। इस शादी के बाद बेटा बाप का साढू और बड़ी बहन सास बन गई थी। घर वालों के विरोध के बावजूद दोनों अलग होने को तैयार नहीं। नतीजा घर के दरवाजे उनके लिए बंद।
उस रात दोनों ने एक शुभ चिंतक के घर रात गुजारी और सुबह दोनों ने हैदराबाद की ट्रेन पकड़ ली। महेश ने गांव और घर दोनों को अलविदा कह दिया। महेश वहां एक प्राइवेट कंपनी में काम करता था।
अब गांव में एक कहावत खूब चल पड़ी थी:
-
" तोर मैइयो जिंदाबाद और तोर मौसियो जिंदाबाद "

जिन्दगी क्यूं नहीं खास होती है,
हरदम सबसे यही बात होती है!

रोज मिलती है नयी परेशानियाँ,
सुख से नहीं कभी रात होती है!

ख्वाहिशें तो कई होती है सबकी,
मगर पूरी तो एक आध होती है!

इसी चाहत में जी रहे है जीवन,
नहीं किसी से अब बात होती है!

मशवरा क्या देगा कोई हमको,
नहीं दोस्ती भी अब खास होती है!

"ललित" मर ही जाना है सबको,
फिर क्यूं आपस में तकरार होती है!

ललित प्रताप सिंह

व्यवस्था

अम्मा..... अम्मो.....
क्या है रे.... चिल्ला रहा है
"अरे जल्दी चल दीदी के जीजा आए हैं"
दीदी के जी.... क्या बकता है?
अरे रामपुर वाले जीजा आए हैं बहुत सारा सामान लेकर। अच्छा आई...
अम्मा मन ही मन बुदबुदाती है
हाय राम! दामाद बबुआ.... घर में तो चाहपत्ती भी नहीं है, "अच्छा तू चल मैं आती हूँ"
"हाँ अम्मा बहुत सारा सामान लेकर आए हैं जीजा"
अम्मा इस समय लेवा में एकदम सनी हुई थी। सीधे धन्नों की गुमटी पर गईं सौ रुपए की उधारी कर सामान काली पन्नी में बाँधकर घर की ओर मुड़ीं। सोचा था कि पिछवाड़े से घर में दाखिल हो जाएगी लेकिन पिछवाड़े दामाद जी दातुन कर रहे थे। उनसे बचने के लिए बँसवारी की शरण ली जिससे साड़ी में बाँस का किल्ला लग गया अन्दर घुसते ही रामू ने कहा " माँ दीदी की चिट्ठी आयी है"..... मैं पढ़ता हूँ
नये खिलौने के जोश में रामू चिट्ठी जोर लगाकर पढ़ने लगा....
"अम्मा, यहाँ पर सब ठीक है। इनकी ड्यूटी वहाँ के पास एक गाँव में लगी है। सुबह दो-तीन घंटे रहेंगे लेकिन इनसे ऐसी कोई बात न करना जिससे हमारी गरीबी का पता चले। दूसरे के खेतों में काम करना, गोबर पाथने जैसी बातों की तो भूलकर भी चर्चा न करना। रामू के खिलौने में सबसे बचाकर काजू, बादाम और घी के लड्डू रख दिए हैं, ये सब इनके जलपान के लिए है और कपड़े में एक हजार रूपए हैं, पाँच सौ इनकी विदाई और पाँच सौ मुझे इनके हाथों भिजवा देना। इससे तुम्हारा सम्मान बढ़ेगा और मेरा भी। ध्यान रहे घर की व्यवस्था की ज़रा सी भनक इनके कान में नहीं जानी चाहिए....
रामू के ऊँची आवाज में चिट्ठी पढ़ने के बाद अम्मा एकाएक धीरे-धीरे पानी गिरने की आवाज़ सुनी तो बाहर निकलकर देखा कि दामाद जी बाहर कबसे कुल्ला करके घर की व्यवस्था का गुणगान सुन रहे हैं। अब दामाद जी से कुछ बताने या छुपाने की जरुरत नहीं थी। घर की व्यवस्था की कलई खुल चुकी थी और अब दामाद जी को यहाँ रुकना एक पल भी एक वर्ष लग रहा था।अम्मा भी मरने से बहुत पहले ही दामाद जी की नजरों में मर चुकी थीं। अम्मा को अपने मरने से ज्यादा चिंता पति की नजरों में गिर चुकी अपनी बेटी का था।

सत्यशील राम त्रिपाठी

शून्य सा यह जीवन मेरा

शून्य सा ये जीवन मेरा
जिम्मेदारियों का घना घेरा
फिसलते हाथों से ढूंढता
एक पल जो हो संपूर्ण मेरा
शुन्य सा यह जीवन मेरा,

हो लघु या पर्वत शिखर
या वन के घन में रात हुई ,
मोह विसर्जित तारे की
मृत्यु की शुरुआत हुई,
छाया अंबर पीर घनेरा
शून्य सा ये जीवन मेरा,

रागिनी भी गीत गाती
संजोकर हृदयो की थाती,
अंधकारओ को बुलाए
चंचल जुगनूओ की पाती,
ढूंढता क्षितिज भी सवेरा
शुन्य सा यह जीवन मेरा,

अधरो पर बैठे हुए हैं
घेरा डाले जल लताएं,
जो मर्म है अंतर्मन का
कैसे भला वो बाहर आए,
डूबे आशा जैसे संझा बेरा
शुन्य सा ये जीवन मेरा,

चल रही बिकट हवाएं
कैसे भला खुद को बचाए,
या धारा पर छोड़ दे या
रेत पर लिखे से मिट जाए,
है अचंभित लहरों का पगफेरा
शुन्य सा ये जीवन मेरा,

प्रेम तो वरदान रहा है
हृदयो का सदा मधुशाला,
जग से सदा रहा प्रताड़ित
जो डूबा इसे पीने वाला,
आशा निराशा का अंधेरा
शुन्य सा ये जीवन मेरा,

चल रहे हैं आज पथ पर
जिसकी कोई राह नहीं,
मुझे मिले तख्तो ताज
ऐसी भी कोई चाह नहीं,
मृगतृष्णाओ सा मन मेरा
शुन्य सा ये जीवन मेरा,

उठ रहे हैं पीर अंबर
छा रही घनघोर घटा ,
वक्त की इन आंधियों से
हृदय धूलो से जाता अटा,
बनता जाए आंहो का डेरा
शुन्य सा ये जीवन मेरा

रेखा शाह आरबी

बेबस

राजमार्ग पर सड़क किनारे लगे एक मील के पत्थर के करीब बैठी शून्य में ताकती वृद्धा के हवाले उसकी पोती की और कहा, "ये ले काकी, तेरी पोती! काफी देर पीछा करने के बाद आखिरकार उठाईगीर पकड़ में आ ही गए। अच्छा किया कि मोबाइल से तुरंत सौ नंबर पर फोन करके सही से सूचना दे दी। क्षेत्रीय गश्ती दल तुरन्त पीछे लगा, तभी पकड़े गए। एक बार नजरों से ओझल हो जाते तो हम लकीर पीटते रह जाते।"
"यह बुढ़िया आपको दिल से आशीर्वाद देती है, दारोगा बाबू! राम जी गरीबों की गुहार सुनने वाले आप जैसे इंसान को सुखी रखें।"
"पर काकी! शौचालय बनवाने के लिए सबको सरकारी अनुदान मिला था तो शौचालय बनवाना था। इस तरह सड़क के किनारे गड्ढों का इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं पड़ती। या फिर सरकारी अनुदान खा पीकर हजम कर लिया?"
"हम अनपढ़-गँवार, न जान-पहचान, न घर में मरद-मानुष, हमें कहाँ पैसे मिले शौचालय बनवाने के। ऊ तो बड़कन लोग ..."
"सार्वजनिक शौचालय भी तो बने हैं। उसमें जा सकती हो ना।"
"अरे बाबू! ऊ बड़ा गंदा रहत है।"
"हद है काकी! अब हम क्या पुलिस की नौकरी छोड़ कर भंगी की नौकरी पकड़ लें? सार्वजनिक शौचालय उपलब्ध करवाना सरकार का काम है, पर उसके बाद गंदा रहे तो इसमें भी सरकार की गलती है? शौचालय इस्तेमाल करने के बाद ढंग से पानी-वानी डालो, चंदा-वंदा करके उनकी साफ सफाई करवाओ। सबकी सुरक्षा तो बनी रहेगी।
आज लड़की नहीं मिलती तो बस्ती के लोग सड़क रोक आंदोलन पर बैठ जाते। टायर जलाते, और पूरा राजमार्ग जाम कर देते, पुलिस-प्रशासन मुर्दाबाद के नारे लगाते, मुफ्त का बड़ा बखेड़ा खड़ा हो जाता", पुलिस वाले झल्लाते हुए गाड़ी से निकल गए।

नीना सिन्हा

लघुकथा : देश–प्रदेश

बरसों पहले उसके पिता रोजी-रोटी की तलाश में आए थे इस देश में, फिर उनका वापस लौटना नहीं हुआ। पहले छोटी सी नौकरी, फिर अच्छा अवसर मिलने के बाद व्यवसाय की शुरुआत, फिर निरंतर तरक्की की राह पर आगे बढ़ते उनके कदम। और इन सब के बीच वह कब यहीं के होकर रह गए, पता ही नहीं चला। लेकिन पिछले कुछ समय से जाने क्यों, तमाम सुख-सुविधाओं के बावजूद उसे अपने पिता के चेहरे पर एक बेचैनी दिखाई देती थी। ऐसा लगता, मानों वह अपनी जन्म-भूमि को मिस कर रहे हों। आख़िर एक दिन वह उनके पास बैठ गया। . .

"डैड, मैं जानता हूँ आप अपनी जन्मभूमि को बहुत मिस करते हो। अगर आप कहें तो हम वापिस अपने देश लौट चलते हैं, हम वहीं कोई दूसरा बिजनेस. . .!"

"नहीं बेटा, जीवन में एक बार सैटल होना बहुत कठिन होता है; और ऐसे में दोबारा फिर से शुरुआत करना... नहीं, ऐसी सलाह मैं नहीं दूंगा।"

"लेकिन डैड, यहां पराए लोगों के बीच 'अपनी ज़मीन' के लिए आपकी बेक़रारी मुझे बहुत बेचैन करती है।"

"पराए लोग... अपनी ज़मीन!" उसके पिता के चेहरे पर एक मुस्कान आ गई। "नहीं बेटा, अपनी जमीन वह नहीं होती, जहां हम जन्म लेते हैं, अपनी जमीन तो कर्मों की जमीन होती है जहां हम अपने कर्मों से अपनी पहचान बनाते हैं।"

"लेकिन डैड, वह हमारे पूर्वजों की जमीन!"

"हाँ बेटा, वह हमारे पूर्वजों की जमीन!" पिता उसके मन की बात समझ गए। "उसकी कसक तो मन में रहती ही है और अपना देश छोड़ यहाँ बस जाने की विवशता तो आख़िरी सांस तक रहेगी। अब तो यही इच्छा है कि अंतिम समय में बस मेरी राख उस मिट्टी में मिल जाए, जहां मेरे पुरखों की राख़ समाई है। पर बेटा तुम कर सको, तो कुछ ऐसी कोशिश जरूर करना..." कहते हुए उसके पिता ने भावुक हो कर उसके हाथों को थाम लिया। "...कि लोग रोटी की तलाश में अपनी ज़मीन छोड़ने के लिए कभी विवश न हों।" पिता की आँखों की नमी उसके हाथों में उतर आई, लेकिन पिता के शब्दों को जीवन का मूल मंत्र बना लेने का निश्चय, उसकी आँखों में झिलमिलाने लगा था।

विरेंदर 'वीर' मेहता

चल पड़ी जो नदी

चल पड़ी जो नदी
मुड़ेगी नहीं
अंगार बरसें, आग या शोले |

मार कर ठोकरें
पहाड़ों से निकल आई
धरा के चरण छूकर
बालिका सी मुस्कराई
लाँघ कर खाइयाँ
वर्जना के पाश खोले |

रोकना मत राह इसकी
बिफर कर उफन जाएगी
राजशाही ठाठ सारे
फनफनाती निगल जाएगी
धरे रह जाएँगे
फूलों सजे
झूले -हिंडोले |

यजन, पूजन, आरती
काम कुछ आती नहीं
तिलक चंदन दीप- माला
दूर तक जाती नहीं
ये करिश्में आपने
चाश्नी में खूब घोले |

बीमारियों से घर भरा
बिस्तरे खाली पड़े
नश्तरों की धूम हैं
साँस के लाले पड़े
वार्ता में बँट रहे
नारियल गोले |

डॉ.मनोहर अभय

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

श्रम से जीवन का रंग बदलते देखा है...

बिन श्रम के मिले सफलता, हम गलत संगत अपनाते हैं।
ऐसी सफलता से पहले हो खुशियाँ, बाद में पछताते हैं।।

सच में श्रम से खुलता है, सफलता का द्वार,
हमें जीवन में खुशियाँ, मिलती हैं अपरंपार।
हम श्रम करते नहीं, भाग्य को कोसते रहते,
श्रम बिन सफलता, पास आने से करे इंकार।

धन दौलत के लिए लोग, असद पथ पर बढ़ जाते हैं।
पद व शोहरत के लिए, किसी हद तक गिर जाते हैं।।

भाग्य के भरोसे रह, हम न तजें श्रम करना,
श्रम के मृदु स्वाद का, सच! में क्या कहना।
असंभव को संभव बनाता, हमारा परिश्रम
बिन श्रम के कष्ट मिले, हमें पड़ता है सहना।

भौतिकता की चमक में, हम आसानी से भटक जाते हैं।
कुपथ के चक्रव्यूह से, फिर हम कभी न निकल पाते हैं।।

श्रम के बल पर, रंक से नृप होते देखा है,
आलस होने पर, नृप से रंक होते देखा है।
जीवन में परिश्रम का, कोई विकल्प नहीं,
श्रम से जीवन का, यूँ रंग बदलते देखा है।

जब हम झूठ के, मायावी मकड़जाल में फंस जाते हैं।।
तब सत्पथ की शिक्षा देने वाले, हमें नहीं सुहाते हैं।।

दृढ़ संकल्प व कड़ा श्रम, हम करते जाएँ,
पथ में अवरोध मिले, कदापि न घबराएँ।
साहस दिखलाएँ व धैर्य रखें, अंतर्मन में,
सफलता की सीढ़ियां, हम यूँ चढ़ते जाएं।

श्रम के बल पर हम अपने जीवन में, जो कुछ कमाते हैं।
उसी में हमें सुकून मिले, इक सुखमय संसार बसाते हैं।।

अनिता शरद झा की दो लघुकथाएं...

1- ब्रह्म मुहूर्त के ब्रह्मराक्षस

''चलो मुझे स्कूल तक स्कूटर से छोड़ दो बेटा?''

नमन ने रजाई को अपने आस-पास कसते हुए कहा, ''मम्मी! मैं अभी-अभी ही सोने लगा था। रातकड़कड़ाती ठंड से परेशान पढ़ाई नहीं कर पाया। सोचा अभी पूरी कर लेता हूँ, फ़िर आराम से सोऊँगापर आपकी की आवाजें! आपने अपने रिक्शे वाले को इतना सिर चढ़ा रखा है कि ठंड के दिनों में इतनीसी शीत लहर आने के नाम पर उसकी बहाने बाज़ी शुरू हो जाती।'' नमन ने बोलते बोलते ही स्कूटर भीनिकाल ही लिया था। स्कूटर पर बैठते ही अनु ने राहत की साँस ली। आज समय पर स्कूल पहुँचकरप्रिंसिपल की नोक झोंक से बच जायेगी। अगले ही मोड़ पर ट्रेफ़िक सिग्नल के पास हवलदार ने रोक लिया? हेल्मट ना पहनने पर चालान काटनेलगा तो नमन ने अनुरोध करते हुए कहा, ''सिग्नल पार करने की ग़लती तो हमने नहीं की, फिर जुर्मानाकिस लिये?''

''हेल्मट नहीं लगाया, इस लिये।''

''ये हेल्मट स्कूटर की डिकी में रखा है।''

''तो लगाया क्यूँ नहीं? ऊपर से जवाब सवाल करते हो। 1000 रु. की रसीद काटता हूँ। नहीं तो 500 रुपए निकालो?''

अनु ने अपने पर्स से 500 रुपए निकालकर दे दिए। नमन भुनभुनाया, ''सुबह सवेरे 500 रुपए का नुकसान हो गया।

''ये ब्रह्म मुहूर्त के ब्रमराक्षस हैं, जो अपनी जेबें भरने में लगे रहते हैं। कोई इन्हें मदद के लिये पुकारे तोअपनी ड्यूटी का बहाना करते हैं।'' अनु ने कहा।

''हाँ मम्मी! सोचता हूँ, मैं भी पढ़-लिखकर हवलदार की नौकरी करूगाँ पैसे कमाऊँगा।'' किशोर नमन ने गिरह लगाई।

''क्या कहा? मेरी सच्चाई और संस्कारों का यही ईनाम दोगे?''

''आप जैसी ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ शिक्षिका को केवल राज्य/राष्ट्र स्तरीय पुरस्कार, मान इज़्ज़तकी पड़ी है। क्या रखा है इन बातों में?''

''यही तो मेरी पूँजी है बेटा जो तुम्हें विरासत में दे सकूँ। मैंने एक को भी, कामयाब इन्सान बनाने में मददकी तो एक ब्रह्मराक्षस बनने से रोक लूँगी।

''और जो डॉक्टर, इंजीनियर, बड़े अधिकारी, व्यवसायी पूँजीपति नेता ब्रह्म मुहूर्त के ब्रह्मराक्षस बनतेजा रहे हैं उनका क्या?''

''अब बस करो नमन मेरा स्कूल आ गया। घर आने पर शाम को आपकी पूरी बातें सुनूँगी और फिरपढ़ने बिठाऊँगी। अपनी तरह टीचर ही बनाना है तुम्हें, जो आने वाली पीढ़ी की आँखे खोलकर सच्चाई के रास्ते अमल कर भारत माता के सच्चे सपूत कहलायें।"

(2) मीरा

पण्डित जी ने बदहवास मीरा को देखकर पूछा,- "मीरा! तुम्हारी आँखों में ये आँसू? ये बिखरे बाल तुम्हेंक्या हुआ??" परकटी सी मीरा ने कहा "पुजारी जी, मेरे चाचा को पुलिस पकड़ ले गई! आप जानते हैं, मेरा उनकेसिवाय और कोई नहीं है। उन्होंने मुझे आपके पास रहने को कहा है, इसीलिए मैं यहाँ आई हूँ।" स्वतंत्रता संग्राम के समय का एक दिन था वह, पुलिस ज़रा से शक पर लोगों की धर-पकड़ कर रहीथी। पुजारी का मन द्रवित हो गया। उन्होंने मीरा को प्रसाद खाने को दिया।

प्रसाद खाने के बाद मीरा कहने लगी, "लोगों को भजन सुनाकर और फूलों की माला बनाकर जीवनव्यापन कर लूँगी। अपनी कुटिया में स्थान दे दीजिएगा।" पुजारी स्वयं वृद्ध थे। बेटे बहु शहर में रहते थे। वे भी शामिल की आरती के बाद अपने बाल बच्चों के पास शहर चले जाते थे। मीरा दिन में पुजारी जी की सेवा कर,पुजारी जी कुटिया में रात गुजारती। कुटिया के सामने पीपल का पेड़ जिसमें मधुमक्खियों ने छत्ता बना रखा था। मीरा पेड़ के नीचे बाँसुरी की धुन के साथ गाना सुनाती और फूल बेचती। लोगों की घूरती नज़रें, तरहतरह की बातें, लोगों के अभिप्राय, प्रलोभन वह ख़ूब समझती थी। पर जैसे ही कोई उससे ज़बरदस्तीछेड़छाड़ की कोशिश करता, वह पीपल के पेड़ पर बने मधुमक्खियों के छत्ते को कंकरी फेंककर हिलादेती और छेड़ने वाले भाग जिते। उसे लगता किशन जी उसकी रक्षा को आये हैं। पुजारी जी कहते रोज़इतने लोगों से सामना होता है। तुम्हें कोई पसंद आये तो तुम्हारी शादी करा दें। हमें तो ये कुटिया मंदिरपरिसर मालिक के बेटे को सौंपनी होगी। यहाँ फार्म हाउस बनाने वाला है। तभी अचानक एक रात, एक अनजान मुसाफ़िर कुटिया में शरण लेने पहुँचा। मीरा घनघोर बारिशदेखते शरण तो दे दी, पर भयभीत भी थी। मुसाफ़िर को समय काटना था। उसने मीरा की आप बीतीकहानी सुनी।सुबह जब वह जाने को तैयार हुआ तो पुजारी और दूसरे लोग भी आ गये और तरह तरह की बातें करनेलगे ।जब पुजारी जी ने मीरा का पक्ष लिया और निर्दोष युवक को कलंकित होने से बचाया तो परिसरके लोगों ने मन्दिर के मालिक से जाकर कहा - हमें ऐसे ढोंगी हवस के पुजारी की आवशकता नही हैं।इसने तो पहले ही अपने परिवार को अपने से दूर रखा है। पर मुसाफ़िर मीरा की आँखों की गहराई पहचान गया। उसने कहा - "मेरा नाम वास्तव में किशन है, मेरेपिता और मीरा के चाचा एक ही जेल में बंद हैं। मुझे इस अंधी दुनिया में कमल रूपी मीरा की हीतलाश थी । पुजारीजी अब आप हमारी शादी करवा दीजिए अपने कर्तव्य से मुक्त हो जाइये।"

गोखरू

समय की पगडंडियों पर
गोखरू किसने बिखेरे

पाँव घायल हो चले हैं
भावना के तन्तुओं के
चलन में आये मुखौटे
बाध्यकारी जन्तुओं के

रोष की शब्दावली को
प्रेम धुन में कौन टेरे

स्वप्न बोये जा रहे हैं
ये नगर रमणीक होगा
फूल को विश्वास है कि
अन्त में सब ठीक होगा

आजमाइश में लगे हैं
सिरफिरे गहरे अँधेरे

बोलने की भूमिका में
पड़ न जाये शाप सहना
पत्थरों ने तय किया है
दृश्य में चुपचाप रहना

उड़ गये पंछी सफर में
बच गये सूने बसेरे

धुल गये परिप्रेक्ष्य सारे
क्या पता है कौन जीता
भोर पढ़ती जा रही है
नये युग की नई गीता

हो गये पद चिह्न धूमिल
जो नक्षत्रों ने उकेरे

सूर्य प्रकाश मिश्र

नफ़रत का पौधा उगाते हैं

राजेन्द्र कुमार सिंह

सुर्ख़ियों में रहना मेरा करम
भूचाल लाना मेरा धरम
तिकड़म लगाया और मुद्दा गरम
ज़हर बो जाते हैं
नफ़रत का पौधा उगाते हैं,
मामला सुलगाते हैं

रहें कैसे हमेशा काबिज
ना नमस्ते, ना खुदा हाफ़िज़
शांति सोई है सुकूं से अगर
तय हो अपना, कैसे डगर
बहसबाजी बेमतलब
विज्ञापनों से कराते हैं
नफ़रत का पौधा उगाते हैं,
मामला सुलगाते है

चैन से रहना भाता नहीं
इंसानियत का परिभाषाआता नहीं
मतभेद उभरता है कैसे
कागज का पेज बदलने के जैसे
नमक में मिर्च को लगाते हैं
नफ़रत का पौधा उगाते हैं,
मामला सुलगाते हैं

मामला हो चाहे कितना पुराना
उखाड़ कर मुर्दा पटल पे है लाना
आदमी के बीच खाई बनाना
रोटी सेंकते व भुनाते हैं
नफ़रत का पौधा उगाते हैं,
मामला सुलगाते हैं

सुर्ख़ियों में रहना मेरा करम
भूचाल लाना मेरा धरम
तिकड़म लगायाऔर मुद्दा गरम
ज़हर बो जाते हैं
नफ़रत का पौधा उगाते हैं,

प्रचंड गर्मी

कैसी है गर्मी यह, हर लेगी प्राण।
चू रहा पसीना है, मुश्किल अब त्राण।।

थपेड़ा है लू भरा, झुलसाता गाल।
जीवन है जीव-जीव, लगता बदहाल।।

इस क्षण वे दिन आए, यादों में जाग।
बचपन में अइया से, पाया अनुराग।

दृग में भर देती छवि, आँसू की धार।
लेकिन वे अइया कब, माने थीं हार।

आँखों में उतरा वह, उनका जो रूप।
सहन नहीं होता है, अधुना वह धूप।।

सिर पर का आँचल वे, लेतीं उतार।
पाँवों का बन जाता, एकल रखवार।।

बैठा मैं रहता था, अपने उस बाग।
सहसा वे बचपन के, दिन आए जाग।।

चल कर वे आतीं थीं, मेरे जब पास।
आँचल में पाता था, उनके उल्लास।।

झकझोरे पछुवा कब, लेसे कब आग।
यादों के फटे हुए, चित्र रहा ताग।।

बहती पुरवइया जब,हो जाती जाम।।
अधरों पर होते तब, रस भरे आम।।

गर्मी यह लाती थी, ऐसा सौगात।
कवियों की भाषा में, वाह!वाह बात।।

बुरा नहीं मानो हे, मेरे मनमीत।
गर्मी के मौसम के, निकले जो गीत।

जैसे यह लगती है, घटित आज बात।
बहती है तेज बहुत, हवा तात-तात।।

बंधु सहन करो इसे,गर्मी-बरसात।
आएँगे-जाएँगे,जीवन के घात।।

गर्मी जब शीश चढ़े, होती बरसात।
हर्षित तब होते हैं, कृषकों के गात।।

देखो अब आएँगे, रस भरे आम।
उमस भरी गर्मी का, पाना परिणाम।।

बाबा कल्पनेश

लगते आषाढ़

जब काले बादल
झुक आते हैं बगिया पर

भ्रमर सांवरे पुतली बन कर
लस जाते हैं अंखिया पर

कोइलर काली मंतर मारे
जैसे नन्ही अंबिया पर

रूपमती मद में अलसायी
चित लेटी हो खटिया पर

खुले अलक छितरे हों जैसे
गोरी गोरी बहियां पर

कभी मंद और कभी तेज
हवा चले कभी सिसिया कर

जैसे सजनी हंस हंस रस ले
साजन जी की बतिया पर

घन कारे संझा से घिर कर
उमस मचावें रतिया भर

जैसे पियु की याद रुलावे
कजरा छूटे तकिया पर.....

साधना मिश्रा

आखिरी पराजय

रामानुज अनुज

प्रोफेसर सिन्हा फॉर्म हाउस के बाहर लगे छोटे से उद्यान में चहल-कदमी कर रहे थे, वे धीरे-धीरे चलकर मुख्य गेट तक जाते, थोड़ा ठहरते, सड़क मार्ग से अपने गंतव्य को जाते हुये पथिकों को देखते फिर बोझिल कदमों से लौट आते थे। वापसी में उनके कदमों की चाल आज बदली-बदली सी लग रही थी। उद्यान के बीचों-बीच रखी दो खाली कुर्सियां इस बात की साक्ष्य दे रही थीं कि कोई आने वाला है, जिसका बेसब्री से इंतज़ार प्रोफेसर सिन्हा कर रहे हैं।

"चाय बना लाऊं साब।" केशव ने पूछा।

"रहने दो अभी, मन नहीँ है, फिर कुछ देर से।"

"क्यों? रोज तो इसी टेम पीते थे, दीपा मेम के साथ, आज वो नहीँ आई इसलिये बोलते हैं, मन नहीं।"

"ठीक है...ठीक है, बना लाओ...तुमसे कौन बहस करे।"

"बहस कर लो साब! बहस बहुत जरूरी है, छिपी बात बाहर निकल आती है, मन हल्का हो जाता है।" केशव किसी दार्शनिक की तरह बोल गया।

"तुम शायद ठीक कहते हो। आज मैं तुम्हारे साथ बहस करूँगा, इसलिये दो कप चाय लेकर आना, एक मेरे लिए और एक अपने लिए, फिर चाय पीते हुये, हम आपस मे बहस करेंगे। जो हार जायेगा उसे रात का भोजन बनाना होगा, तैयार हो ना।" मुस्कुराते हुए प्रोफेसर सिन्हा बोले।

"शर्त नही लगाते साब।"

"डर गये न पराजय से।"

"नहीं साब, वो बात नहीं है, दरअसल आपको पराजित होते देखना मुझे अब बर्दास्त नहीं होता है, आप दूसरों की खुशी के लिये हमेशा जान-बूझकर पराजित होते आये हैं। मुझे मालुम है, आदत अनुसार आज भी पराजय स्वीकार कर लेंगे। कल दीपा मेम से हारे, आज मुझसे हारेंगे। कल किसी और से...क्या फर्क पड़ता है, आपको। लोग जीतने के लिये पूरा छल-बल झोंक देते हैं। एक आप हैं जो अन्य की खुशी के खातिर सब कुछ हार देते है, पराजित होने की आपकी आदत जो पड़ गई है। लेकिन अब ऐसा नही होने दूँगा।" नम हो चली आंखों को हथेली से मलता हुआ केशव भीतर दाखिल हो गया।

"उँह... इसे पता नहीं हैं, पराजय में जो आनन्द है वह विजय हासिल करने में नहीँ हैं। लेकिन यह समझ में सिर्फ उसी के आता है जो हार को वरण करता है। विजय से तो अहंकार पनपने लगता है। मै किसी से पराजित नहीँ हुआ हूँ, बल्कि जीतने में हर किसी की मदद की है। दीपा मेम से अभी पराजित नही हुआ हूँ। अभी जंग जारी है। केशव, तुम्हें कैसे समझायें, वह भी कमजोर खिलाड़ी नहीँ है। उसे भी दूसरों की जीत के लिए पराजय स्वीकार करने की आदत है। अब की बार मुकाबला बहुत कड़ा है, जबरदस्त प्रतिद्वन्दी से भिड़ंत है।"

प्रोफेसर सिन्हा पत्नी के निधन के बाद नितांत अकेले हो गये थे। महाकाल की नगरी उज्जयिनी के बीचों- बीच उनकी भव्य कोठी थी। कल-कल-निर्झर-निर्मल, सलिल-प्रवाहिनी, पवित्र क्षिप्रा नदी का सुलभ दर्शन कोठी के दालान से नित्य था। महाकाल मंदिर के गुम्बज में बैठे नागदेव का दर्शन भी दालान से सहज सुलभ था, नित्य भोर में होने वाली भष्म आरती के उपरांत जय घोष सुनकर वे महाकाल का स्मरण करते हुये दिनचर्या की शुरूआत करते थे। महाकाल की इस नगरी से उन्हें बेपनाह मुहब्बत थी, प्रथम बार जब भगवान भोलेनाथ के दर्शन को सपत्नीक आये थे तब महाकाल से उनके सानिध्य/शरण में रहने की इच्छा जाहिर की थी। उन्होंने अपनी नगरी में उन्हें रहने की जगह भी दी। सुंदर होनहार दो बालक भी दिये और अच्छी खासी कालेज में नौकरी भी दिये। औघड़दानी से उन्होंने जब भी, जो भी मांगा, उन्होंने सदैव एवमस्तु कहा। प्रोफेसर सिन्हा की गिनती हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा के प्रकांड विद्वानों में से होती थी, वे इन तीनो भाषाओं में पी.एच-डी. थे। लेकिन अपने नाम से पहले उन्होंने डॉक्टर लिखना कभी स्वीकार नहीं किया, उनका मानना था कि डॉक्टर सिर्फ वही हैं जो रोग का निदान करते

हुए चिकित्सा करते हैं। अन्य उपाधि के लोगों को नाम से पहले डॉक्टर लिखकर कम शिक्षित जनता को भ्रमित नहीँ करना चाहिये। उनके पास शोधार्थी लड़के आया करते थे। बदले में 'किसी से कुछ न चाहिये' के नियम पर अडिग रहने वाले प्रोफेसर सिन्हा हर शोधार्थी के लिए सहज-सुलभ थे। उनके दोनो लड़के सुमित और अमित पढ़ लिखकर डॉक्टर हो गये थे, बड़ा लड़का सुमित रूस चला गया और वहीं गृहस्थी बसा ली। छोटा भी बड़े के नक्शे कदम का अनुसरण करते हुए अमरीकी नागरिक हो गया था।सुमित हमेशा अपनी माँ से कहता-- "पापा को समझाइये माँ, यूएसए आ जायें। आप लोगों के साथ रहना अच्छा लगेगा। इंडिया में जो पैसा महीने भर में मिलता है, पापा एक घण्टे के लेक्चर में कमा लेगें। इधर इंडियन माइंड की बहुत डिमांड है।"

उनकी पत्नी हमेशा यह कहकर टालती रही कि..."ठीक है बेटा, पापा से तुम्हारी बात कहूँगी।"

लेकिन उन्होंने स्वदेश छोड़कर अमेरिका या रूस में जाकर बसने की बात उनसे कभी नही कही, उन्हें मालुम था प्रोफेसर सिन्हा महाकाल के चरण छोड़कर कहीं नहीँ जाने वाले हैं। इसी तरह से विद्यार्थियों के सानिध्य में पढ़ाते- पढ़ते हुये प्रोफेसर सिन्हा का समय व्यतीत हो रहा था कि अचानक एक रोड एक्सीडेंट ने उनकी सबसे प्रिय वस्तु छीन ली, भयानक बस एक्सीडेंट था। कालेज के अन्य स्टाफ के साथ ओंकारेश्वर दर्शन को वे भी सपत्नीक गये हुए थे। वहाँ से वापसी में यह हादसा हुआ। सिन्हा जी के साथ अन्य सहयात्रियों को भी कमोवेश चोटें आयी थी, लेकिन उनकी पत्नी को लगी चोट जान लेवा साबित हुई। इस घटना के बाद वे भीतर से टूट गये थे, लड़के आये हुये थे। वे साथ चलने की जिद भी किये, लेकिन प्रोफेसर सिन्हा यह कहकर उन्हें निरुत्तर कर दिये कि इधर का सब व्यवस्थित करने के बाद आ जाऊँगा। लेकिन वे गये नहीं। उनके भीतर चल रहे द्वंद को कोई समझ नहीं पा रहा था, वे स्वयं भी बड़ी उलझन में रहे। अन्तः एक दिन महाकाल नगरी उज्जयनी की कोठी बेचकर वहां से बाइस किलोमीटर दूर भोपाल रोड पर एक फार्म हाउस खरीद कर रहने लगे। वे कालेज की नौकरी से भी इस्तीफा लगा चुके थे। इधर मिलने-जुलने को कोई दोस्त-यार भी नहीं आते थे। शोध करने वाले विद्यार्थी तो कब का किनारा कर चुके थे। किसी ने बहुत सही कहा है...

"कौन होता है किसी का, कौन आ मिलता गले।

छोड़ देती साथ छाया भी, सदा सूरज ढले।"

लेकिन केशव इस कथन का अपवाद निकला, वह सदैव उनके साथ चलता रहा, भोर होने से लेकर रात्रि उनके शयन तक।

"चाय साब।" केशव की आवाज के साथ ही विचारों की कड़ी टूट गयी। "हूँ....लाओ।" वे केशव के हाथ से कप लेकर चाय पीने लगे।

"केशव।"

लेकिन उन्होंने स्वदेश छोड़कर अमेरिका या रूस में जाकर बसने की बात उनसे कभी नही कही, उन्हें मालुम था प्रोफेसर सिन्हा महाकाल के चरण छोड़कर कहीं नहीँ जाने वाले हैं। इसी तरह से विद्यार्थियों के सानिध्य में पढ़ाते- पढ़ते हुये प्रोफेसर सिन्हा का समय व्यतीत हो रहा था कि अचानक एक रोड एक्सीडेंट ने उनकी सबसे प्रिय वस्तु छीन ली, भयानक बस एक्सीडेंट था।

"जी साब।"

"मेरी समझ मे यह नहीं आ रहा है कि मुझसे ऐसी कौन सी भूल हुई जो महाकाल ने मेरी जिंदगी छीन ली। मुझे भी साथ उठा लेते तो, कितना अच्छा होता। मुझे यहाँ छटपटाने के लिये क्यों अकेला छोड़ गये हैं?"

"साब, मुझे तो कभी-कभी लगता है, भोलेनाथ उज्जयिनी छोड़ कर और कहीं चले गये हैं, वे जो होते तो देवी स्वरूपा मालकिन को एक्सीडेंट में जरूर बचा लेते।"

"तुम ठीक बोल रहे हो, इसीलिये तो वहां की कोठी बेचकर एकांत में यहाँ आ गये।"

चाय का खाली कप केशव के हाथ मे पकड़ाते हुये प्रोफेसर सिन्हा बोले।

"मैंने आपकी किताबें सब जमा दी हैं, और कपड़े भी जो वहाँ से साथ लाये थे, अच्छे-अच्छे बहुत से कपड़े तो आप वहीँ छोड़ दिये हैं। साब, ओ नीला वाला सूट नही मिल रहा है, बहुत इधर-उधर देखे, फिर भी।"

"नहीँ मन होता केशव, कुछ भी पहनने-ओढ़ने का और न पढ़ने का। देख लो, जो कपड़े तुम्हें ठीक लगें, उठा ले जाओ इस्तेमाल कर लेना। मुझे तो यह कुर्ता पाजामा पर्याप्त है।"

"आज रात में क्या बना लें, सब्जी में गोभी-आलू बना लें?"

केशव कुछ देर सिन्हा साहब को ताकता हुआ खड़ा रहा कि शायद वे कुछ कहेंगे लेकिन उन्हें खामोश देखकर चाय के जूठे कप उठा कर वह वहाँ से चला गया। आज से छै माह पहले की बात है, प्रोफेसर सिन्हा उद्यान में चहलकदमी कर रहे थे कि चालीस-पैतालीस साल वय की गौर वर्ण आकर्षक देहयष्टि की एक भद्र महिला उनके फॉर्म हाउस के पास ऑटो-टैक्सी से उतर कर सीधे सिन्हा साहब से पूछ बैठी...."प्रोफेसर रजत सिन्हा का फॉर्म हाउस यही है?"

"एस।"

"उनसे मिलना चाहती हूँ, क्या वे इस समय मिल सकते है?"

"जी, रजत सिन्हा मै ही हूँ... बताइये।"

"अंदर आने को नही बोलेंगे सर।"

प्रोफेसर सिन्हा झेंपते हुये आगे बढ़े और गेट खोल दिये। वह भद्र महिला भीतर आते ही हाथ मिलाने की गरज से दाहिना हाथ आगे कर दी थी। प्रत्युत्तर में प्रोफेसर सिन्हा ने दोनों हाथ जोड़ लिये और उसे खाली कुर्सी में बैठने का इशारा कर दिये थे।

"थैंक्स सर, मेरा नाम दीपा कुलश्रेष्ठ है। एक हफ्ते पहले ही रतलाम डिग्री कॉलेज से ट्रांसफर होकर कन्या महाविद्यालय उज्जैन में ज्वाइन की हूँ। मैंने आपके बारे में बहुत सुना है। कालेज में आते ही मैंने स्टाफ से आपके बारे में पूछा, मुझे जो बताया गया, वह सुनकर मुझे आत्मिक दुःख हुआ है, कॉलेज से ही पता लेकर आपसे मिलने को चली आई।"

"मुझसे क्या चाहती हैं?" सीधा-सपाट सवाल सुनकर वो असंयमित हो गई, फिर स्वयं को

संयमित करती हुई बोली--अब शायद कुछ नहीं।"

"साफ-साफ बताइये?"

"जी, दरअसल आपके अंडर में पी.एच-डी. करना चाहती थी, पर आप कालेज छोड़ चुके हैं।"

"कोई बात नहीं, पी.एच-डी. हो जायेगी। मेरे कई मित्र हैं, मैं किसी को भी बोल सकता हूँ, आप कहें तो।"

"जी ठीक है, लेकिन बीच-बीच मे यदि आपसे गाइडेंस मिल जाता तो?"

"ओके।"

औपचारिक बात-चीत और चाय-कॉफी के बाद वह उठकर चली गई थी, लेकिन अपनी घण्टे भर की मौजूदगी का असर वह छोड़ गई थी। मुंह फट केशव बोल भी दिया था--"देखा साब! इनकी चाल-ढाल, बात-चीत का लहजा, साड़ी बांधने का ढंग बिल्कुल मालकिन की तरह है।"

"चुप कर यार! साड़ी पहनने का यह आजकल आम फैशन है।" सिन्हा जी ने उसे डांट दिया था।

डांट ख़ाकर केशव चला गया था, लेकिन उसके कथन को वे भी तस्दीक कर रहे थे। कैसा विचित्र साम्य है, केशव की कही बात मुझे भी सही लग रही है। लेकिन उसका सीधा और सपाट चेहरा, बिना चूड़ी की कलाई....क्या वो विधवा है? या अभी तक शादी नही की? पर मुझे इससे क्या? प्रोफेसर सिन्हा गर्दन को एक झटका दिये और कुर्ते की आस्तीन ठीक करते हुए भीतर दाखिल हो गये। दीपा आने लगी थी, कभी-कभी तो प्रतिदिन, कभी दो-चार दिन का गैप लेकर...प्रोफेसर सिन्हा भी उसका इंतजार किया करते थे। लगभग दो घण्टे भर डिस्कशन चलता था, जरूरी पॉइन्ट वह डायरी में लिखती जाती थी। एक दिन गजल के मिज़ाज़ और अरूज़ पर बात चल रही थी....दीपा, तुम्हारा शोध टॉपिक थोड़ा अटपटा लग रहा है, अरे ग़ज़ल तो गजल है, एक छंद है, बोली भाषा परिवर्तन से ग़ज़ल का स्वरूप थोड़ी बदल जाता है।

"शायद आप दुरुस्त कह रहे हैं सर, गजल को हिंदी गजल, संस्कृत गज़ल या अंग्रेजी ग़ज़ल कहना हास्यास्पद लगा था, इसलिये आपके टोकने से पहले ही "गजल के बदलते हुये मिज़ाज़" कर लिया है।"

दीपा मुस्कुराकर बोली थी। उसकी मुस्कुराहट में भी गजब का आकर्षण था...प्रोफेसर सिन्हा उस आकर्षण के तिलस्म में बंधे हुये पलकें झपकाना भूल गये। अकस्मात नज़रें चार हुई और वे झेंप मिटाते हुये वे भी मुस्कुरा दिये। इसी तरह से दीपा का फॉर्म आकर डिस्कशन करना, डायरी में पॉइंट नोट करना, चंद बातें करना, तर्क करना, सहमति-असहमति का दौर चलता रहा, न जाने कब छः माह व्यतीत होने चले थे, समय जब मन अनुकूल हो तब उसकी गति तेज लगती है, प्रतिकूल समय में तो समय-घड़ी के कांटो की

औपचारिक बात-चीत और चाय-कॉफी के बाद वह उठकर चली गई थी, लेकिन अपनी घण्टे भर की मौजूदगी का असर वह छोड़ गई थी। मुंह फट केशव बोल भी दिया था--"देखा साब! इनकी चाल-ढाल, बात-चीत का लहजा, साड़ी बांधने का ढंग बिल्कुल मालकिन की तरह है।"

टिक-टिक रुक सी गई प्रतीत होती है। दीपा के आने-जाने से घर मे पुनः खुशी लौटती हुई लग रही थी, दीपा मेम को लेकर केशव बहुत आशान्वित था। वह सदैव भगवान से यही मांगता था कि भगवान! दीपा मेम को इस घर मे भेजकर मौत के इंतज़ार में बैठे मेरे मालिक की जिंदगी बचा ले। एक दिन का वाकया खास गौर तलब है, आसमान में बादलों का डेरा तो कई दिनों से पड़ा था, लेकिन गरजने-बरसने का शुभ मुहूर्त शायद आज शाम को ही था। गरज-चमक के साथ पानी के छीटे धरती का दामन गीला करने लगे थे। दीपा और प्रोफेसर सिन्हा भीतर आ गये थे, केशव उस दिन कॉफी के साथ गर्म-गर्म पकोड़े तल कर रख गया था। लेकिन दीपा को लौटने की फिक्र के चलते पकोड़े बेस्वाद लगे। अभी भी तेज हवाओं के साथ ठहर-ठहर कर बरसात जारी थी, अंधेरा पैर पसार चुका था, गांव से बिजली नदारत थी, सो अलग...चारो तरफ घना-घुप्प अंधियारा। केशव सड़क तरफ ऑटो -रिक्सा का पता करने गया हुआ था, लौट कर उसने बताया..."शहर से गाँव तरफ ऑटो लौट रहें हैं। गांव से शहर तरफ कोई ऑटो नहीं जा रहा है।"

"कोई बात नही, मैडम आज अपने घर की मेहमान रहेंगी। तुम खाना तैयार करो फिर कमरे में इनका बिस्तर लगा देना।"

"नहीं, नहीं सर! मेरे इधर ठहर जाने से जितनी मुँह उतनी बातें उठेंगी, मेरा जाना निहायत जरूरी है।"

"और.....खुदा-न-खास्ता राह बीच आपके साथ कोई हादसा घट जाये, तो हम लोग अपने -आप को माफ नहीं कर पायेंगे।" लालटेन की लौ बढ़ाता हुआ केशव बोला।

"चुप करो केशव! तुम हमेशा निगेटिव सोचते हो, जब बोल दिया मैडम यहीं रूकेंगी तो रूकेंगी...दैट्स ऑल...ऐसे खराब मौसम में पच्चीस किलोमीटर दूर शहर जाने की हम अनुमति नहीं दे सकते। अब इस विषय पर कोई बहस नही होगी।"

केशव रसोई वाले बगल के कमरे में चला गया था, पानी अब भी गिर रहा था। अचानक तेज रौशनी और भयंकर आवाज के साथ कहीं बिजली गिरने का अंदेशा हुआ। दीपा भय से सिहर उठी थी। प्रोफेसर सिन्हा अपनी जगह से उठे और दरवाजा बंद कर दिये।

"दीपा, एक बात मेरे जेहेन में हज़म नही हो रही है। बात यद्यपि तुम्हारी पर्सनल है, जरूरी नहीं कि जवाब दो।" लालटेन की लौ को और तेज करते हुये प्रोफेसर सिन्हा बोले।

"पूछिये सर।"

"तुमने अभी तक शादी क्यों नहीं की?"

"कोई मिला नहीं।" उसने हँसते हुए जवाब दिया।

"ये कैसे हो सकता है। स्वस्थ हो, सुंदर हो, कालेज में असिस्टेंट प्रोफेसर हो। तुम्हारे लिए तो हजारों रिस्ते लाइन में खड़े मिलेंगे।"

"आप करेंगे मुझसे शादी?"

"क्या? तुम होश में तो हो।"

"जी, मै पूरे होशोहवास से दोबारा पूछ रही हूँ। क्या आप मुझसे शादी करेंगे?"

वह एक-एक शब्द पर जोर देते हुये बोली थी।

"दीपा! मैं वो ठूँठ हूँ, जिसमें कोपलें नही फूट सकती, जरा सी हवा में हम उखड़कर जमीन में आ सकते हैं।"

"आपके इस तर्क को मै सिरे से खारिज़ करती हूँ। नवीनता प्रदत्त करना नियति का काम है, हम भले ही उस नवीनता को स्वीकृति दें या न दे, नियति किसी की असहमति को लेकर अपना निर्णय नही बदलती है, पतझड़ के बाद सभी वय के दरख्तों में नवीन कोपलें जरूर फूटती हैं।"

ज्यों ही धरा जलेगी, आकाश रो पड़ेगा।

दामन दिवा-निशा का, मुस्कान से भरेगा।

है कौन रोक लेगा? कुदरत के इस नियम को,

कलियां नयी खिलेंगी, ज्यों ही चमन झड़ेंगा।"

"वाह दीपा... आज तुमने अपनी काबिलियत का परिचय दे दिया। तुम्हें किसी पी.एच-डी. की अब दरकार नहीं है, मुझे तुम स्वयं शोध का विषय लग रही हो, तुम्हारी कविता और तर्को से समक्ष निरुत्तर है, प्रोफेसर रजत सिन्हा।"

'तब चिंतन-मनन किस बात का। मुझे स्वीकार कीजिये सर। मैं आपको दिल की गहराइयों से चाहने लगी हूँ।"

इस बार दीपा का दाहिना हाथ बिना प्रयास प्रोफेसर साहब की ओर बढ़ गया था। प्रोफेसर सिन्हा का हाथ भी बढ़ते-बढ़ते रुक गया था। तभी बिजली आ गयी थी, दूधिया बल्ब कमरे में दूधिया प्रकाश परोसने लगे थे। टेबल पर खाना लगा दिया गया था। रोटी और लौकी की सब्जी, चटनी, सलाद, अचार सब कुछ तो था। दोनो आमने-सामने बैठे हुये रोटियों के ग्रास बनाकर पेट के सुपुर्द करने की असहज कोशिश में लगे थे---खामोश! कोई किसी से कुछ नही कह रहा था, जैसे कहने को अब कुछ बचा ही न हो। केशव ने द्वार खोल दिया था---सिहरन भरी सर्द हवा कमरे में घुसने लगी थी।

"बन्द रहने दो।" प्रोफेसर सिन्हा का आदेशात्मक स्वर से कमरे की खामोशी भंग हुई। दोनो ने अपेक्षा से कम भोजन किया था। किसी तरह से दो रोटी प्रोफेसर सिन्हा ने खाई। उस रात किसी को नींद नहीं आई थी। सभी लड़ रहे थे, अपने-आप से, एक अघोषित युद्ध, जिसका कोई आदि नहीं, अंत नही, जीत -हार की अटकलें लगाना जहाँ सम्भव ही न हो। सुबह नवीनता लिए हुये आयी, सूर्य देव आकाश-पथ से रथ में विराजमान होकर सम्पूर्णता के साथ जगती को ऊष्मा के साथ रौशनी परोसने लगे थे, रात चली तेज हवा से पुराने-बीमार पत्ते टहनियों से टूट कर जमीन में अपनी-अपनी मुकम्मल जगह तलाशने में लग गये थे। समूची कायनात घड़ी-घड़ी, पल-पल, नवीनता की तलाश में रंग बदलती रहती है, इससे उस नियंता की शक्ति का पता

वह स्वयं को सम्हाल पाती, उनके अभिवादन का उत्तर दे पाती कि पहले ही कर्कश हॉर्न बजाती हुई टैक्सी सड़क में दौड़ पड़ी थी। प्रोफेसर सिन्हा जाती हुई टैक्सी को तब तक देखते रहे जब तक वह आंखों से ओझल नहीं हो गयी, उन्हें आज सब कुछ अपना जाता हुआ महसूस हुआ, बेजान जिस्म को मोड़कर किसी तरह से उद्यान में रखी कुर्सी तक लाकर धँस गये और आंखे बंद कर ली।

चलता है, जो समूची कायनात को नियंत्रित करता है, उसका कोई निजी हित नहीं है, सम्पूर्ण सृष्टि को नवीनता प्रदान करने का मात्र उद्देश्य होता है। वह चाहता है कि सम्पूर्ण जगती के चर-अचर, स्थावर, जंगम, कुम्भज प्राणी अपनी जरूरत अनुसार रंगों का कैनवास अपने जीवन मे उतारते चले जायें, फीके हुये रंगों की परत पुराने फ़टे वस्त्र की तरह त्यागते हुये। लेकिन ऐसा होता नही है, हर प्राणी जिस रंग में शुरू से रंग दिया गया है, उसे ही अपनी तकदीर मान बैठा है। तकदीर के खिलाफ इंकलाब बोलने की असीम क्षमता के बावजूद भी वह अज्ञात भय के दायरे में सिमटा हुआ खड़ा है। हम में से कितने लोग है, जो इस दायरे से निकलने की छटपटाहट महसूस करते हैं। शायद बहुत कम.....दीपा की हर कोशिश नाकामयाब हुई थी। उसका कोई निजी स्वार्थ यहाँ पर साबित नहीं होता है, वह तो जीवन से निराश हुये, मौत के इंतज़ार में बैठे प्रोफेसर सिन्हा को जीवन के शेष दिनों में खुशी के पल देने आयी थी।जाने को उद्यत दीपा बाहर आ खड़ी हो गयी थी, बगैर किसी औपचारिक संवाद किये हुये प्रोफेसर सिन्हा उसे सड़क तक टैक्सी में बैठाने गये थे।उसके.टैक्सी में बैठते ही उन्होंने औपचरिकता बस हाथ भी जोड़े थे, लेकिन आंखों में छलक आये आँसओं की वजह से दीपा को कुछ दिखाई नहीं दिया था। वह स्वयं को सम्हाल पाती, उनके अभिवादन का उत्तर दे पाती कि पहले ही कर्कश हॉर्न बजाती हुई टैक्सी सड़क में दौड़ पड़ी थी। प्रोफेसर सिन्हा जाती हुई टैक्सी को तब तक देखते रहे जब तक वह आंखों से ओझल नहीं हो गयी, उन्हें आज सब कुछ अपना जाता हुआ महसूस हुआ, बेजान जिस्म को मोड़कर किसी तरह से उद्यान में रखी कुर्सी तक लाकर धँस गये और आंखे बंद कर ली।

"पानी साब!" केशव की आवाज सुनकर वे ऐसे चौंके जैसे उनकी चोरी पकड़ ली गई हो।

"ये ठीक नही हुआ साब! दीपा मेम बिना नास्ता किये चली गई। मैं तो रसोई में गाजर का हलवा तैयार कर रहा था, आपको उन्हें नास्ते के बाद जाने देना चाहिए था।"

"वेरी..वेरी सॉरी, मुझे तो कुछ याद ही नही आया। वे जाने को तैयार हो गयीं, मै टैक्सी तक छोड़ आया। ये ठीक नही हुआ केशव, मुझसे बड़ी भूल हो गयी।"

"छोड़िये, अब कोई फायदा नहीं पछताने से--- मैं आपकी दवाइयां और चाय लाता हूँ। फिर मुझे घण्टे भर के लिए खेत तरफ जाना होगा, आप अपना ख्याल रखियेगा।"

चाय देकर केशव खेत तरफ चला गया था, वे विचारमग्न कुर्सी में बैठे हुए उद्यान में लगे बीही के पेड़ को देख रहे थे, पेड़ में फल आये हुये थे, डालियां फलों के भार से झुक गयीं थी, उसमें पक्षियों का एक जोड़ा बैठा था, नीली आंख, नीले पंख वाला। परिंदों का यह जोड़ा पहली बार बगीचे में दिखा था, वे अपनी बोली में बातें करते हुये एक दूसरे से चोंच लड़ाते, पंख

जोड़ते हुये चुहल कर रहे थे। उन्हें उनकी चुहलबाजी अच्छी लग रही थी, कि बैठे-बैठे ही अचानक आंख लग गई। वे देखते है कि सामने उनकी स्वर्गीय पत्नी इंदु खड़ी-खड़ी मुस्कुरा रही है और ताज़्जुब यह कि वह भी उसी कलर की साड़ी पहने है, जो दीपा पहन के आयी थी।

"किसलिये अपने-आप को दुख दे रहे हैं, दीपा का प्रेम निवेदन अस्वीकार कर के आपने ठीक नही किया। आप कशमकश में जी रहें हैं, इससे बाहर निकलिए।"

"इंदु तुम??"

"जी मै आपकी इंदु थी, अब दीपा हूँ, मुझे पहचानिये, मुझे अपने हदय से दूर मत कीजिये। औरत सिर्फ शरीर बढलती है, आत्मा नहीं। प्लीज, मै इस बार असमय मृत्यु नहीं चाहती, मै आपके साथ ही जीना-मरना चाहती हूँ।"

"इंदु, यह वादा-खिलाफ़ी होगी।"

"नहीं, जीवन-चक्र के साथ पूरा चक्कर घूमना जरूरी होता है। दो टूटे हुये पहिये लेकर आप नहीं घूम सकते। दीपा का सानिध्य स्वीकार कीजिये। नियति चक्र के ठहराव विंदु पर मैं आपका इंतजार कर रही हूँ।"

प्रोफेसर सिन्हा इंदु को छूने के लिए कुर्सी से उठकर आगे बढ़े थे लेकिन छू नही पाये। वह उतनी ही दूर आगे चली गई थी, जितना वे आगे बढ़े थे।रुकिए सिन्हा साब! मेरी प्रतिछाया दीपा में देखिए, तभी मुझे सुकूँ नसीब होगा। जाइये उसे मना कर घर लाइये, कही ऐसा न हो---वह भी मेरी तरह मृत्यु का वरण कर ले।"

नहीं---नही---नहीं---प्रोफेसर सिन्हा जोर से चीखे उठे थे। खेत में काम कर रहा केशव चीख सुनकर दौड़ा पड़ा था, उन्हें देखकर वह हक्का-बक्का रह गया। प्रोफेसर सिन्हा कानों को हथेलियों से ढँके हुये, बुत सरीखे खड़े थे।

"क्या हुआ साब?" उसने आते ही पूछा।"

"आ गये केशव! एक काम करो मेरा ब्राउन कलर का सूट निकालो, जूते मोजे, कमीज, टाई सब निकालो---फ़टाफ़ट तुम भी तैयार होकर आओ। हमें तुरंत उज्जयनी चलना है।"

कुछ देर बाद वे उज्जयनी नगरी की तरफ ले जाने वाली सड़क पर कार दौड़ा रहे थे, पीछे की सीट पर बैठा हुआ केशव अचरज से भरा था, वह कुछ पूछने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था कि उसकी

परेशानी समझ कर सिन्हा साहब बोले---"मै फिर पराजित हो गया, केशव, लेकिन इस पराजय के बाद हम जय-पराजय के बंधन से मुक्त हो जायेंगे। यह मेरी आखिरी पराजय है।"
"साब !! हम लोग दीपा मेम को बुलाने उज्जयिनी चल रहें हैं न?"
"हां..ठीक समझे।"
"जय हो महाकाल! आपने मेरी विनती सुन ली।" श्रद्धा से केशव ने सर झुका लिया था।
"साब, दीपा मेम को लेकर हम लोग भगवान महाकाल के दर्शन को जायेगें, वे उज्जयिनी वापस आ गये है।"
"हां केशव! जीवन को हम पुनः नए तरीके से जीने का मकसद लेकर घर से चल पड़े हैं, यह सब उन्हीं की प्रेरणा से सम्भव हुआ है।"
"जय हो महाकाल!" केशव ने जयकारा लगाया।

ग़ज़ल

दौर कोई हो हमेशा यही हसरत रखना
ख़्वाहिशें नेक़ सदा दिल में मुहब्बत रखना

टूटता रोज़ ग़रीबों का हो सपना लेकिन
उनके सपनों में कभी अपनी भी क़िस्मत रखना

ज़िंदगी में हो तड़प पाने की उसको लेकिन
ख़ुद से पहले ज़रा माशूक़ की इज़्ज़त रखना

उससे बातें तो हुई होंगी तुम्हारी लेकिन
देखना नाम लिखा उसका न तुम ख़त रखना

जिसकी बाँहों में मिला करता है जन्नत का सुकून
'भवि' उसी शख़्स से तू रिश्त-ए-उल्फत रखना

शुचि 'भवि'

तुमको छुपा लूं पलकों में

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

तुमको छुपा लूं पलकों में मैं
चाहत मेरी पुरी हो जाए
ना ना ना ऐसा न होगा
पहले मोहब्बत हो जाए।

दिल ने चाहा है सच कहती हूं
तुमसे मोहब्बत मैं करती हूं।
बातें प्यार की तुमसे
देखो सच मैं कहती हूं।

ना ना ना ऐसा न होगा
पहले प्यार की बरसात हो जाए

तुमको छुपा लूं पलकों में मैं.....

तुमसे बंधी है प्रीत की डोरी
अब कैसी है यह चोरी।
कब तक रहूंगी दूर मैं तुमसे
अब तो प्यार करना जरुरी है।

तुम न हमें भूला पाओगे
ना ना ना ऐसा न होगा

तुमको छुपा लूं पलकों में मैं....

देखो यह मौसम प्यार का है
प्यार करने दो मुझे।
मुझको सताना छोड़ो
दिल में रहने दो मुझे।
ना ना ना ऐसा न होगा
पहले आंखें चार हो जाए..

तुमको छुपा लूं पलकों में मैं
चाहत मेरी पुरी हो जाए।
ना ना ना ऐसा न होगा
पहले मोहब्बत हो जाए।

लघुकथा मोहन राजेश

लुटेरे

आज ऑफिस में कुछ ज्यादा ही देर हो गई थी। न चाहते हुए भी निकलते निकलते 9:00 बज ही गए थे , इत्ते बड़े शहर में रात के 9:00 बजे कोई खास रात नहीं होती। सड़कों पर सुबह सी चहल पहल ही दिखाई देती है, अलबत्ता आफिस और घर के बीच कृषि मण्डी से लेकर मेवाड़ी गेट तक का रास्ता सात बजे के बाद कुछ सुनसान सा हो जाता है ....पर इसमें डरने की क्या बात है ? -- उसने स्कूटी स्टार्ट करते हुए सोचा -- अभी आधे घंटे मैं घर पहुंच जाएगी। चिंता की कोई बात नहीं, वैसे भी उसने मम्मी को फोन करके पहले से ही बता दिया था कि आज ऑफिस में काम ज्यादा है और वह नौ - दस बजे तक ही घर पहुंच पाएगी ..... प्राइवेट नौकरी है, मम्मी भी जानती समझती है....

ऑफिस और घर के बीच लगभग दो -ढाई किलोमीटर का रास्ता कुछ सुनसान सा रहता है और आज तो कुछ ज्यादा ही सुनसान दिखाई पड़ रहा था। वह कान में कोर्डलेस इयरफोन लगाए, अपनी पसंद के गाने सुनते हुए बेफिक्र सी चली जा रही थी कि अचानक एक जोरदार झटका लगा , मोटरसाइकिल पर सवार दो लड़के इस तरह से उसके सामने आ गए थे कि उसे अचानक स्कूटी को ब्रेक लगाना ही पड़ा।

दोनों लड़के हेलमेट पहने हुए थे और शायद कोरोना से बचाव के लिए मास्क भी लगा रखे थे। .....वह कुछ समझ पाती इससे पहले ही एक लड़के ने अपनी जेब से रिवाल्वर निकाल कर उसकी और लहराते हुए कहा , " गाड़ी साइड में लो" और वह कुछ कह पाती इससे पहले ही दूसरे लड़के ने उसे गाड़ी सहित धकेलते हुए पटरी के नीचे झाड़ियों के बीच घसीट लिया। डर के मारे उसकी घिग्घी बंध चुकी थी , उसके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकल सका।

अंधेरे में आते ही उसकी आत्मा सिहर उठी," आज तो इन दरिंदों से बचना मुश्किल है। " -- उसने सोचा कहीं कल के अखबार की सुर्ख़ियों में ना छा जाए वह....

"अपना मोबाइल और पर्स हमारे हवाले कर दो।," --- उसने देखा दूसरे लड़के के हाथ में भी एक बड़ा सा चाकू था। उसकी कंपकंपी छूट गई .... ना - नुकुर कि कोई गुंजाइश ही नहीं थी। उसने चुपचाप अपना पर्स उनके हवाले कर दिया और भयभीत स्वर में बोली --" मोबाइल इसी में है ।"

उसने सोचा -- अब यह लोग उसे खाई में घसीट कर ले जाएंगे और.....कोई चमत्कार ही उसे इन दरिंदो की दरिंदगी से बचा सकता है। अभी इस सूनी सड़क पर गला फाड़ने से भी कोई फायदा नहीं होना है। यदि दोनों के हाथों में हथियार नहीं होते तो शायद वह उनसे भिड़ने का हौसला भी जुटा लेती किन्तु इस हालात में तो..... उसने मन ही मन हनुमान चालीसा का पाठ आरंभ कर दिया।

रिवाल्वर वाले युवक ने उसके गले में पड़ी पतली सी चांदी की चेन और पहनी सस्ती घड़ी पर हिकारत भरी नजर डाली और पर्स को खोलकर देखा, उसमें दस,बीस और पचास के नोटों की शक्ल में दो ढाई सौ रुपए होंगे और मोबाइल भी कोई खास कीमती नहीं लगा।

पर्स को भलीभांति टटोलने के बाद लड़के ने किंचित सहज स्वर में पूछा ,--क्या करती हो ? इस वक्त कहां से आ रही हो ?

लड़की ने डरते डरते बताया कि एक प्राइवेट फाइनेंस फर्म में काम करती है, और अभी ऑफिस से ही आ रही है।

ऑफिस से छुट्टी का यही टाइम है तुम्हारा ?

--लुटेरे दूसरा प्रश्न दागा।

..... नहीं, छुट्टी का समय तो छह बजे का है पर सात - आठ बज़ ही जाती है, आज काम कुछ ज्यादा था इसलिए...

वह जवाब दे ही रही थी कि उसके फोन की घंटी बजने लगी।

"किसका फोन है ?"

-- लड़के ने डायल दिखाते हुए पूछा।

मम्मी का है... उसने फोन पर नजर डाले बिना ही कह दिया, उन्हें चिंता हो रही होगी।

"पापा क्या करते हैं ?

लुटेरों का दूसरा सवाल था। वह समझ नहीं पा रही थी कि वे लोग उसे लूटने आए हैं या इंटरव्यू लेने। उसे खामोश देखकर दूसरा लड़का कड़क लहज़े में बोला "तेरे बाप - भाई को चिंता नहीं है ...?

-- "पिताजी नहीं हैं" " ....."उसने रुआंसे स्वर में कहा, "भैया अभी छोटा है।" "

"ओ माई गॉड !" पहले युवक ने उसका पर्स वापस लौटाते हुए कहा," सॉरी मैडम, माफ करना इस बेरोजगारी में चोरी- चकारी लूटपाट हमारी मजबूरी बन गई है पर आप हमसे ज्यादा मजबूर हैं... इसके बावजूद मेहनतकश और खुद्दार हैं। आप को लूट कर हम ताजिंदगी खुद को माफ़ नहीं कर सकते। ....आप बेफिक्र जाइए,यह हमारा इलाका है और अब आप आइंदा कोई नहीं रोकेगा। फोन का जवाब दीजिए और जल्दी जाइए मम्मी इंतजार कर रही होगी।"

वे दोनों लुटेरे मोटरसाइकिल स्टार्ट कर अंधेरी में विलीन हो गए और अपनी स्कूटी स्टार्ट करते हुए वह सोच रही थी ," वे लुटेरे थे तो लूट कर क्या ले गए?"

असली लुटेरा तो उसकी फर्म का मैनेजर है, जो आधी तनख़्वाह में दुगुना काम लेता है और दिन भर बेशर्म निगाहों से उसका जिस्म नोंचता रहता है।

सरकार

लघुकथा : विजय कुमार

एशियाई खेल प्रतियोगिताएं चल रही थीं, और उनका सीधा प्रसारण टीवी पर किया जा रहा था। रवि और मनोज एक ढाबे में बैठे कुछ खा-पी रहे थे, और साथ ही उन प्रतियोगिताओं का आनंद उठा रहे थे, "लो यह 800 मीटर की दौड़ में भी अपना एक गोल्ड मैडल पक्का हो गया। जियो बेटा, क्या कमाल का दौड़े हो", रवि ने एथलीट की प्रशंसा करते हुए कहा, "भारत का नाम ऊंचा कर दिया आज तो।"

"सही में यार, इस बार तो अच्छी मात्रा में मैडल ला रहे हैं हमारे देश के खिलाड़ी।" मनोज ने समर्थन किया।

"अब तक का सबसे अच्छा प्रदर्शन रहा है भारत का। और सबसे बड़ी बात यह है कि ऐसी -ऐसी प्रतिभाएं निकल कर सामने आ रही हैं, जो बिल्कुल पिछड़े और दूरदराज क्षेत्रों की हैं, और अत्यंत गरीब भी हैं।" रवि ने कहा।

"सच में यार", मनोज बोला, "पर अब गरीब नहीं रहेंगे। हर राज्य की सरकार द्वारा लाखों-करोड़ों के ईनाम रखे गए हैं पदक जीतने वाले खिलाड़ियों के लिए। दूसरी कंपनियां या अन्य लोग अलग से देंगे। और तो और, अब नौकरी भी पक्की, वह भी आईएएस-आईपीएस स्तर की। वारे-न्यारे हो जाएंगे सबके...।"

"वह तो ठीक है यार, पर जिस तरह से हमारे देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है, हमारी सरकार को चाहिए कि इन छुपी हुई प्रतिभाओं को ढूंढ़ निकाले, और उन को प्रशिक्षित करे, ताकि ज्यादा से ज्यादा पदक हमारे देश को मिलें। दूसरे अमीर व्यक्तियों, संस्थाओं और कंपनियों को भी आगे बढ़कर ऐसे कामों में मदद करनी चाहिए, और खिलाड़ियों को खेल से पहले ही सुविधाएं देनी चाहिए, न कि बाद में।"

"बिल्कुल सही", मनोज ने फिर समर्थन किया, "ऐसा ही होना चाहिए। फिर तो पदक ही पदक आ जाएं।" तभी उनकी बातें सुन रहा, ढाबे पर काम करने वाला वह लड़का, जिसे सभी छोटू-छोटू कहकर बुला रहे थे, हिम्मत जुटाता हुआ उनके पास आ खड़ा हुआ, "साहब जी, मुझे भी एथलेटिक्स का बड़ा शौक है। मैं भी पदक ला सकता हूं।"

"फिर?" मनोज ने कहा। "साहब जी, मेरा भी जुगाड़ करवा दो ना कुछ?" छोटू उनकी तरफ देखता हुआ बोला, "आप कह रहे थे ना अभी...।" "वह तो सरकार करेगी, या कंपनियां, हम थोड़े ही...", रवि के मुंह से निकला, "चल जा...।" 'सरकार? कौन सी सरकार?...', छोटू मन ही मन सोच रहा था।

कोख का बंटवारा

लघुकथा

रामनरायण के दो बेटों का नाम रमेश और सुरेश है। युवा अवस्था में रामनारायण के मृत्यु होने के बाद उनकी पत्नी रमादेवी ने रामनारायण के जमा पूंजी और पूर्वजों से मिली संपत्ति से दोनों बेटों का परिवरिश किया। रमादेवी का बड़ा बेटा रमेश पढ़ लिखकर शहर में सरकारी विभाग पर बड़े बाबू के पद पर आसीन हुआ तो छोटा बेटा सुरेश गांव में ही खेतीबाड़ी सहित अन्य सामाजिक कार्य करने लगा।

एक भाई शहर में, तो दूसरा गांव में अपने परिवार के साथ रहने लगा। रमादेवी अपने छोटे बेटे सुरेश के साथ गांव में ही रहती थी। रमेश और सुरेश दोनों के रिश्ते सामान्य थे तथा दोनों एक दूसरे के भावनाओं का पूरा सम्मान करते थे। सुरेश कभी अपने बड़े भाई के सामने ऊंची आवाज में बात नहीं करता।

खैर दोनों भाई अपने-अपने तरीके से अपने परिवार के पालन पोषण में लगे रहे और दोनों के बच्चें पढ़ लिखकर शहर में नौकरी करने लगे। कुछ दिनों बाद रमेश भी रिटायर हो सरकारी विभाग से पेंशन लेने लगा और सुरेश गांव में ही रमेश से साथ आपसी रजामंदी से हुए बंटवारे में मिली अपने हिस्से की जमीन पर धन अर्जन का साधन बना अपना जीवन बिताने लगा।

कुछ सालों बाद अचानक एक दिन सुरेश को करोड़ों रुपए की लाटरी लग गई। ये बात जब रमेश को पता चला तो वह छोटे भाई के बदलते हालात देख बड़ा खुश हुआ, पर रमेश के बीवी और बच्चों को सुरेश के परिवार की ये खुशी फूटी आखें नही सुहाई और रमेश की बीवी, बच्चे रमेश को ताने देने लगे और सुरेश के साथ हुए बंटवारे को न मानने और उसपर सुरेश के द्वारा बनाई गई संपत्ति में हिस्सेदारी मांगने के साथ जयजाद के पुनः बंटवारे की बात को कहने लगे। पहले तो रमेश अपने बीवी बच्चों की बात नजरंदाज करता रहा। लेकिन आखिर में रमेश पर ये कहावत चरितार्थ हुई कि "जो किसी से सामने नही झुकता उसे उसके अपने झुका देते है।"

अंतः रमेश भी अपने परिवार के दबाव में आ छोटे भाई सुरेश के साथ पूर्व में आपसी रजामंदी से हुए बंटवारे को ना मानते हुए उस पर सुरेश द्वारा बनाई गए चीजों में हिस्सा मांगने लगा। ये देख सुरेश ने रमेश से कहा भैया जैसे आपने अपने पूरे जीवन में नौकरी किया और अब आप सरकार से मिलने वाली लाखों रुपए के पेंशन के हकदार बने, वैसे मैंने भी अपना पूरा जीवन आपसी सहमति से हुए बंटवारे से अपने हिस्से में मिली जमीन पर इन चीजों का निर्माण करने में लगा दिया ताकि इसके होने वाले दो रुपए के आमदनी से मैं अपना जीवन बीता सकूं।

रमेश की अंतरात्मा तो सुरेश के इन बातों को सही बता रही थी। पर बीवी और बच्चों के जिद् के कारण रमेश इसे सहर्ष स्वीकार नहीं कर पा रहा था और पूर्व में हुए बंटवारे को मानने को तैयार नहीं हो रहा था। सुरेश भी अपनी कही बातों को बार-बार दुहराये जा रहा था। धीरे-धीरे इन बातों का सिलसिला बहस और झगड़े का रूप ले तेज ऊंची आवाज के साथ पूरे कमरे में गूंजने लगी।

होते शोर के बीच कमरे में एक किनारे बैठी इनकी मां रमादेवी अपने नम्र आंखों से ऊपर छत की तरफ देखते हुए ईश्वर से कह उठी "हे ! ईश्वर, ये तू संपत्ति का बंटवारा नही करवा रहा बल्कि मेरे कोख का बंटवारा करवा रहा है ।"

अंकुर सिंह

ग़ज़ल

दुःख सुख का ये ताना बाना लाज़िम है
जीवन है तो खोना पाना लाज़िम है

याद तेरी जब नींद उड़ाकर ले जाये
तारे गिन गिन रात बिताना लाज़िम है

जिनमें बिखरी है अब भी बचपन की धूल
उन गलियों में आना जाना लाज़िम है

लिखना भी लाज़िम है मेहँदी में लेकिन
लिखकर तेरा नाम छुपाना लाज़िम है

चाहत की बूँदाबाँदी हो जब दिल पर
सौंधी सौंधी ख़ुश्बू आना लाज़िम है

क़ैद में रख चाहे आज़ाद उड़ा लेकिन
हसरत के पंछी को दाना लाज़िम है

रिश्तों के जिन फूलों को सींचे न कोई
इक दिन तो उनका मुरझाना लाज़िम है

सहरा में पानी की छाया देख 'सिफ़र'
उम्मीदों के बादल छाना लाज़िम है

अंजलि सिफ़र

निशानेबाज़ मानवी का शौक़ ही बना उसका जुनून

आकलैंड विद्यालय शिमला में कक्षा 6ठी की विद्यार्थी रही थी उस समय जब मानवी सूद ने शिमला स्थित इंदिरा गांधी खेल परिसर में पहला कदम रखा था और वह भी तायकोंडो मार्शल आर्ट सीखने के लिए। कुछ दिन इस विधा में अभ्यास के बाद उसके मन में खेलों में ही कुछ अलग करने की चाह पनपने लगी ।इसी उत्सुकतावश वह खेल- परिसर में ही अन्य खेलों को दूर से देखने परखने लगी।

धीरे-धीरे वहाँ अन्य बच्चों को शूटिंग रेंज में अभ्यास करते देखकर इस खेल के प्रति आकर्षित हुई और वहीं एक अच्छा निशानेबाज बनने का सपना बुना। उन्होंने अच्छी तरह सोच-समझकर एयर रायफल प्रतियोगिता को चुना तथा वह मात्र 11 वर्ष की आयु में हीनिशानेबाजी प्रतियोगिता में भाग लेने भी लग गयी थी।

इस उभरती प्रतिभावान खिलाड़ी का जन्म 4फ़रवरी 2006 को हिमाचल प्रदेश राज्य की राजधानी शिमला में एक व्यवसायी परिवार में हुआ था ।परिवार भी इस खेल के प्रति आगे बढ़ने के लिए मानवी को पूरा सहयोग देने के प्रति दृढ़ संकल्प है।

उनके पिता राजीव सूद व माँ अर्चना सूद दोनों का ही विश्वास है कि वैसे भी लड़कियाँ स्वभाव से मेहनती,कमिटेड व फलेक्सिबल लर्नर के साथ साथ उनमें एकाग्रता का स्तर भी ज़्यादा होता है उनमें अपेक्षाकृत अधिक धैर्य होता है जिसकी वजह से उनके अंदर एक स्थिरता बनी रहती है । संभवतः यही गुण मछली की आँख भेदने अर्थात् लक्ष्य-संधान करने में सर्वोपरि माना जाता है।

मानवी सूद पहली बार उस समय राज्य खेल परिदृश्य पर चर्चा में आइ जब वर्ष 2018में अंडर 15 एन आर कटेगरी में ज़िला स्तरीय स्पर्धा में उन्होंने 10 मी राइफल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता था। इस प्रतियोगिता में कुल 400 पोईंट के लिए 40 शॉट लगाने निर्धारित थे। इसमें मानवी ने 351 पोईंट हासिल कर गोल्ड पर क़ब्ज़ा किया था।

मानवी का मानना है कि निशानेबाज़ी एक प्रतिस्पर्धात्मक किंतु बेहद रोमांचक खेल है ।इस खेल का शौक़ ही उसका धीरे धीरे जुनून बंनने की ओर अग्रसर है ।प्रायः यही जुनून किसी खिलाड़ी को सफलता के शिखर तक पहुँचाता भी है।

गत वर्ष नवम्बर माह में भोपाल में आयोजित 64 वीं राष्ट्रीय शूटिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता में हिमाचल प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं और वह चौथी अंतरराष्ट्रीय शूटिंग प्रतियोगिता में भारतीय टीम के चयन के लिए भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ द्वारा आयोजित चयन ट्रायल के लिए भी क्वालिफ़ाइड है ।अक्टूबर 2021 में, देहरादून में पहली स्नाइपर शूटिंग चैंपियनशिप के दौरान "चैंपियन ऑफ द चैंपियन" का खिताब भी मानवी द्वारा जीता गया है।

उनके कोच सूबेदार (सेवानिवृत्त) रवींद्र प्रकाश ने हौसला अफ़जाही करते हुए कहा कि “हम इस निशानेबाजी के खेल में उनके उज्ज्वल कैरियर के लिए शुभकामनाएं देते हैं और वह निश्चित रूप से हिमाचल राज्य के साथ-साथ भारत देश का भी नाम रोशन करेंगी।”

यहाँ ज्ञातव्य है कि पुराने समय में राजा महाराजाओं का मनोरंजक शौक़ रहे निशानेबाज़ी का अब वर्तमान समय में स्तर बेहद बढ़ चुका है। निशानेबाजी को शूटिंग का रूप देकर ओलंपिक खेलों में भी शामिल किया जा चुका है।

निशानेबाजों के लिए खास तौर से डिजाइन की जाने वाली आकर्षक वेशभूषा जिसमें विशेष प्रकार की जैकेट, ट्राउजर, जूते;सिर पर कैप जिन्हें आमतौर पर पहनकर चलना भले ही मुश्किल हो, लेकिन राइफल शूटिंग करने वालों का टशन देखकर आज लोग विशेषकर युवा इस खेल की तरफ खूब आकर्षित होते हैं।

-चन्द्रकान्त पाराशर, खनेरी शिमला हिल्स

महिला खिलाड़ियों की राह में उत्पीड़न के रोड़े!

सोनम लववंशी

बलात्कार और यौन अपराध समाज के हर क्षेत्र में व्याप्त है। इससे खेल भी अछूते नहीं रहे हैं। खेल संस्थानों में प्रशिक्षण के दौरान यौन उत्पीड़न की शिकायतें वर्तमान दौर में बढ़ती जा रही है। कहने को तो खेलों को एक सुरक्षित क्षेत्र माना जाता रहा है। लेकिन यौन उत्पीड़न के बढ़ते मामलों ने खेल के क्षेत्र को भी सवालों के घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है। अभी हाल ही में अंतराष्ट्रीय स्तर की साइकिलिस्ट और महिला नाविक खिलाड़ी के साथ उनके ही कोच द्वारा यौन उत्पीड़न की घटनाओं ने देश को शर्मसार किया है। कोच द्वारा महिला खिलाड़ी को यौन सम्बन्ध नहीं बनाने पर उसका करियर बर्बाद करने की भी धमकी दी गई। यह कोई पहली घटना नहीं जब किसी महिला खिलाड़ी ने यौन अपराध की शिकायत दर्ज कराई हो। राष्ट्रीय स्तर की महिला नाविक ने भी अपने कोच पर जर्मनी यात्रा के दौरान उन्हें असहज महसूस कराने को लेकर शिकायत दर्ज कराई है। आश्चर्य की बात है कि यह कोच तीन बार का ओलंपियन है और भारतीय नौसेना का कोच है। वहीं दूसरा कोच वायुसेना में अपनी सेवाएं दे चुका है। ऐसे उत्कृष्ट पद पर रहकर जब कोई कोच इस तरह की घटनाएं करता है तो यह कई सवाल खड़े करता है।

वर्तमान समय में खेल में बढ़ता यौन अपराध चिंता का विषय बनता जा रहा है। एक महिला को खेल के क्षेत्र में कितना संघर्ष करना पड़ता है। यह किसी से छुपा नहीं है। यहां तक कि घर परिवार के सदस्यों द्वारा भी महिलाओं को खेलने से रोका जाता है। उन्हें खेल के क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ने दिया जाता है। ऐसे में महिलाओं के साथ खेल के क्षेत्र में यौन हिंसा के बढ़ते मामले चिंता का विषय बन सकते है। साल 2020 के आंकड़ों पर नज़र डालें तो पिछले 10 वर्षों में स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने यौन उत्पीड़न के 45 मामले दर्ज किए है। जिनमे से 29 मामले कोच के खिलाफ यौन उत्पीड़न से जुड़े हुए है। गौर करने वाली बात यह है कि यौन उत्पीड़न के मामलों में कोई ठोस कार्रवाई तक नहीं की जाती है। जिससे भी उत्पीड़न के मामले बढ़ते जा रहे हैं।

वर्तमान दौर में लैंगिक असमानता बढ़ रही है। जिसका असर खेलों पर भी साफ देखा जा सकता है। दुनिया भर में खेलो की लोकप्रियता ने खेल कवरेज में लैंगिक भेदभाव को बढ़ावा दिया है। बेशक महिला खेल जोखिमों से ग्रस्त है। यहां तक कि स्पोर्ट्स मीडिया भी पुरुष प्रधान है। आंकड़ो की माने तो 90.1 प्रतिशत संपादक और 87.4 प्रतिशत पत्रकार पुरुष है। इसके अलावा टेलीविजन मीडिया की बात करें तो 95 प्रतिशत एंकर व सह एंकर पुरूष हैं। यही वजह है कि महिलाओं को खेलों में पुरूष खिलाड़ियों की तुलना में कम कवरेज़ दिया जाता है।

ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल की हालिया रिपोर्ट ने भी खेल के क्षेत्र में बढ़ते यौन शोषण (सेक्सटॉर्शन) पर चिंता व्यक्त की है। भ्रष्टाचार के मामलों पर नजर रखने वाली यह संस्था रोमानिया, जिम्बाब्वे, मेक्सिको व जर्मनी जैसे देशों पर नजर बनाए हुए है। जर्मनी के एथलीटों के बीच किए गए सर्वेक्षण में तीन में से एक मामला यौन शोषण से जुड़ा हुआ पाया गया है। यहां तक कि जिम्नास्टिक व फुटबॉल जैसे खेलों में भी कई हाई प्रोफाइल मामले यौन शोषण से जुड़े हुए है। जबकि अधिकतर मामलों में खिलाड़ी शिकायत तक नहीं करते है। कई बार शिकायत नहीं करने के पीछे करियर बर्बाद होने का डर भी रहता है। खेल के क्षेत्र में यौन शोषण (सेक्सटॉर्शन) के कई हाई प्रोफाइल मामलों ने लोगो का ध्यान भले अपनी और जरूर खींचा है। लेकिन खेल के क्षेत्र में बढ़ते यौन अपराध की प्रमुख वजह शीर्ष स्तर पर महिलाओं की संख्या कम होना है। खेल में लैंगिक असमानता भी किसी से नहीं छिपी है। अधिकतर क्षेत्रों में महिला एथलीटों को कम वेतन दिया जाता है। जिससे खेल के क्षेत्र में उनकी रुचि कम हो जाती है।

हालिया टोक्यो (जापान) ओलिम्पिक खेलों की बात करें तो 64 खेलों के कोचों में से सिर्फ 4 खेलों की ही महिला कोच रहीं। खिलाड़ियों द्वारा कोचों के यौन शोषण का शिकार होने के पीछे का सबसे बड़ा कारण भी यही है कि खेल संस्थानों में महिला कोचों की संख्या बहुत कम है। लिहाजा खेल संस्थानों में सभी स्तरों पर महिला कोचों की संख्या बढ़ाने की आवश्यकता है। जिससे महिला खिलाडिय़ों की पुरुष कोचों पर निर्भरता कुछ कम की जा सके, वहीं दोषी कोचों के विरुद्ध कठोर दंड दिया जाना चाहिए जिससे यौन अपराध पर अंकुश लगाया जा सके।

कहानी

लास्ट एंड फाउंड

दिलीप कुमार सिंह

मुंबई के उपनगर मीरा रोड के बैंजो लेन में पहले तल पर "जाज " ओपन एयर रेस्टोरेंट की ये एक उदास शाम थी। इस रेस्टोरेंट में सब कुछ खुला ही था यहां तक किचन भी ,सिर्फ वॉशरूम ढके -मूंदे थे। "जाज " रेस्टोरेंट की खासियत ये थी कि यहाँ गीत-संगीत हमेशा गुंजायमान रहता था। उनके पास पेशेवर गाने वाले लोग थे जो कस्टमर की डिमांड पर गाने गाया करते थे और हर वीकेंड पर एक स्पेशल कलाकार का शो होता था ,वो कलाकार अच्छे मगर सस्ते होते थे,जाहिर है हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में काम पाने की कोशिश कर रहे लोगों मजमा यहां जमा होता था। मीरा रोड आर्ट और कल्चर का उत्तरी मुंबई में नए केंद्र के तौर पर उभर रहा था। सबसे निचले लेवल के कलाकारों से लेकर थोड़े बहुत कामयाब कलाकार भी यहां इकट्ठे होते थे।

टीवी अभिनेता, सिंगर, म्यूजिक से जुदर लोग काम -धाम की मीटिंग के लिये "जाज " रेस्टोरेंट को मुफीद मानते थे।

कहने को ये मीरा रोड की एक अच्छी जगह थी ये लेकिन पहले माले पर स्थित इस रेस्टोरेंट के नीचे की सड़क पर गाड़ियों के हॉर्न की जो चीख -पुकार मचती थी उससे शायद ही किसी संगीत प्रेमी को तसल्ली से कुछ सुनने को मिल पाता होगा। लेकिन यही तो मुम्बईया ज़िंदगी का फलसफा था कि सुकून किसी को नहीं और सुकून की तलाश सभी को रहती थी।

मंगेश पालगांवकर को ये जगह इसलिये खास पसंद थी क्योंकि मीरा रोड की इन्हीं गलियों में उसका बचपन बीता था ,सो वो गाहे -बगाहे इस जगह आने की गुंजाइश निकाल ही लिया करता था। हालांकि उसके बचपन की कोई निशानी अब बाकी नहीं था , उसका स्कूल टूटकर शॉपिंग माल बन चुका था, उसका चाल वाला किराए का घर अब बारह मंजिली बिल्डिंग में तब्दील हो चुका था। लेकिन फिर भी कोई कशिश थी जो उसे इस इलाके में खींच लाती थी। अपने बचपन और किशोरावस्था के दिनों को याद करते हुए उसने एक सिगरेट निकाल कर होंठो से लगा ली।

मंगेश ने सिगरेट के कुछ ही कश लगाए थे तब तक वेटर उसके पास आकर खड़ा हो जाता है। वेटर को देखकर मंगेश अपना सिर ऊपर करता है तो वेटर उसे इशारे से साइन बोर्ड दिखाता है ,जिस पर लिखा होता है

"टेबल पर बैठ कर शराब और सिगरेट पीना सख्त मना है "।

मंगेश सिगरेट लेकर बाहर चला आता है, सड़क पर ।वो वहीं खड़ा होकर सिगरेट पी रहा होता है ,तभी एक 36-37 के उम्र की एक लेडी फोन पर चीखती हुई जाती है –

"पेमेंट नहीं होगा तो मेरा क्या होगा मैं तो रोड पर आ जाऊंगी।मेरी इंसल्ट होने से अच्छा है कि मैं अब सुसाइड ही कर लूं ।लेकिन मैं सुसाइड करूँगी तो बहुत लोगों को लेकर जाऊंगी। सुना तुमने लालवानी को बता देना।मैं कुछ भी कर सकती हूँ"।

तब तक उधर से फोन कट होने की आवाज़ आती है।उधर से फोन कटते ही औरत झल्ला के कहती है-

" रासकल्स, बिच कहीं के "

ये कहते हुए वो तेजी से जाकर मेज पर बैठती है और हाइपरटेंशन की दो टेबलेट निकालकर खाती है ।वो आंख बंद कर लेती है टेंशन के मारे।

तनाव से आंखे बंद करके दो टेबलेट दवाई के निगल चुकी महिला करीब पांच मिनट यूँ ही चुपचाप निकाल देती है।

उसकी जिस्मानी तकलीफें कुछ कम हुईं तो उसे अतीत ने आ घेरा। वो अपनी वर्तमान ज़िंदगी से नाखुश थी तो उसे अपने अतीत का रह -रह कर वही दृश्य याद आता है जब उसने एक बड़ा निर्णय लेते हुए अपनी पुरानी ज़िंदगी से छुटकारा पाते हुए ये जिंदगी चुनी थी।

उसे वो दिन अक्सर याद आता था जब एक छोटे से कमरे में उसका सामान बिखरा पड़ा है जिसे वो बड़ी तेजी से बैग और सूटकेस में पैक कर रही है और एक पुरुष सिगरेट के लंबे कश लगाते हुए बड़े असमंजस में उसे देखे जा रहा था, लेकिन उसके मुंह से बोल नहीं फूट पा रहे थे। उस महिला को आंखे बंद किये देखकर मंगेश चौंक पड़ा। वो उम्मीद कर रहा था कि वो महिला आंखे खोले, उसे देखे ,कुछ प्रतिक्रिया दे तभी वो अपना अगला कदम उठाए। मंगेश ने सोचा कि अगर वो महिला उसे देखकर ठीक ढंग से बर्ताव करेगी तो वो भी हाय -हैलो कह देगा और अगर उस महिला ने कुछ गलत ढंग या गुस्से से उसे देखा तो वो भी उसके पास नहीं जाएगा।उसे देखकर मंगेश को याद आया कि ऐसे ही वो आठ साल पहले भी गयी थी तब उसने यंग मंगेश को" रास्कल " कहा था और मंगेश ने उसको थप्पड़ जड़ते " बिच" कहा था।

अंततः उससे लड़ झगड़ कर वो फ्लैट छोड़ कर चली गयी थी।

पांच मिनट तक उस महिला के आंखे ना खोलने पर मंगेश का धैर्य जवाब दे गया। वो अपनी टेबल से उठकर उस महिला की टेबल पर आ गया और कुर्सी खींचकर बैठने की कोशिश करने लगा। कुर्सी खींचने की आवाज से उस महिला की तन्द्रा टूट गयी।

वो लेडी जब आंख खोलती है तो सामने के टेबल पर मंगेश को बैठा पाती है ।पहले तो लेडी के चेहरे पर बहुत हैरानी आती है लेकिन फिर वो फीकी हंसी हंसते हुए कहती है -

"तुम ,इतने बड़े शेयर मार्केट के एनालिस्ट इस मामूली जगह पर ।तुम्हे तो अपनी शाम किसी फाइव स्टार के बार में बितानी चाहिए"

मंगेश भी हंसते हुए कहता है-

"हाँ अमृता गुप्ता नाम की एक टॉप मॉडल को देखने के लिये पीछे पीछे चला आया "।

ये सुनकर वे दोनों हंसने लगते हैं।दोनों की

परेशानियां कुछ पल के लिये काफूर हो जाती हैं और उनके चेहरों पर उल्लास नजर आने लगता है। एक वेटर आता है वो कहता है
"आर्डर प्लीज "।
मंगेश मुस्कराते हुए कहता है-
"मुझे तो चाय ही पिला दो ,मैडम से पूछ लो वे क्या पियेंगी । उनके स्टेटस के लायक इस रेस्टोरेंट में कुछ मिलता भी है या नहीं "?
"ब्लैक कॉफी विदाउट शुगर, और साहब के लिये चाय "
फिर मंगेश की तरफ मुखातिब होते हुए अमृता ने कहा – " टॉप मॉडल इस चिल्लमचिल्ली वाली थर्ड क्लास रेस्टोरेंट में 15 रुपये वाली काफी पीने नहीं आती है । किस एंगल से मैं तुमको मॉडल लग रही हूँ। 37 की ऐज में आंटी बन चुकी हूँ। शुगर,ब्लड प्रेशर, हाइपरटेन्शन ,कोई भी ऐसी बीमारी नहीं है जो मुझको ना हो। पिछले आठ सालों में ही मैं बीस साल बूढ़ी हो गयी हूँ। जवानी तो चली गयी ,मैं कब चल दूं पता नहीं"
ये कहते हुए अमृता ने लम्बी सांस छोड़ी।
मंगेश ने उसके चेहरे को एकटक देखते हुए कहा – "क्यों वो तुम्हारा मेहरोत्रा कहाँ गया जो कहता था कि तुमको टॉप मॉडल बनाएगा ,बाद में एक्टिंग के असाइनमेंटस भी दिलवायेगा ।उसी सब के लिये तो घर छोड़ा था तुमने"।
अमृता ने थोड़ी देर तक चुप्पी साधे रखी ।
मंगेश की बेचैनी और उकताहट देखकर धीरे से बोली – " अब ये सब मत पूछो ,इतना समझ लो कि जवान लड़की में एक रस होता है ,उस रस को हर कोई पीना चाहता है ।जब तक आदमी को वो रस नहीं मिलता वो कुत्ते की तरह लार टपकाता रहता है, एक बार आदमी वो रस पी लेता है तो फिर उसके लिए वो लड़की एक ठूंठ रह जाती है,खाली ड्रम की तरह ।जैसे मैं तुम्हारे लिये हो गयी थी ,तुम्हारी नजरों से उतर गयी थी ।मर्दों की एक आदत होती है ।अपनी उसी आदत के हिसाब से मैं सबके लिये बेकार होती चली गयी ।तुम कहो रितिका रस्तोगी के साथ खुश तो हो ना तुम ।उसने तो तुमको बच्चा दे ही दिया होगा ।कितने बच्चे हैं तुम दोनों के "
ये कहते हुए अमृता ने मंगेश के चेहरे पर आंखे गड़ा दी। तब तक वेटर चाय और काफी ले आता है ।वो कप रखकर चला जाता है दोनों दो तीन घूंट पीते हैं फिर अमृता कहती है-
"आई एम सारी ,मुझे कोई हक नहीं बनता तुम्हारी लाइफ के बारे में पर्सनल सवाल करने का ,ये तुम्हारी ज़िंदगी है जैसे चाहो जियो"ये कहते हुए अमृता सर झुका लेती है और धीरे - धीरे काफी सिप करती रहती है।
मंगेश थोड़ी देर तक मुस्कराता रहता है फिर हंसते हुए कहता है - "एक बेबी गर्ल है 5 साल की लेकिन वो रितिका और उसके पति की बच्ची है,मेरी नहीं।मेरे और रितिका के बीच कभी कुछ था ही नहीं । उसने सिर्फ मेरे आइडियाज पर पैसे लगाए थे शेयर मार्केट से प्रॉफिट कमाने के लिये। जब शेयर मार्केट क्रैश हुआ तो मैं भी बैंकरप्ट हो गया और उसका भी सारा पैसा डूब गया"। ये कहकर मंगेश चुप हो गया ।अमृता ने सिर ऊपर उठाया और सवालिया नजरों से उसे देखनी लगी। थोड़ी देर ठहरकर मंगेश ने शब्दों को चबाते हुए बोलना शुरू किया – " शुरू में उसको प्रॉफिट हुआ तो तो वो खुश थी । फिर उसने अपनी सारी पर्सनल सेविंग्स मुझे शेयर बाजार में लगाने को दे दी ,जब मार्केट क्रैश हो गया और उसके पैसे के साथ मेरा भी पैसा डूब गया तो वो मुझे ही दोषी समझने लगी कि मेरी ही गलती या लापरवाही से पैसा डूब गया है। उसने सिर्फ अपनी पर्सनल सेविंग्स मेरे जरिये शेयर मार्केट में इन्वेस्ट करवाई थी सबसे छुप -छुपा के ,सिर्फ यही था कोई अफेयर वगैरह नहीं। उसकी अपनी ज़िंदगी थी उसने बाद में शादी कर ली । अब वो और उसका हसबैंड मिलकर भयंदर में कोई कोचिंग क्लास चलाते हैं।मैंने उसका मोबाइल नम्बर ब्लॉक कर रखा है लेकिन इतने साल बीत जाने के बावजूद अपने हसबैंड के चोरी-चोरी वो नए -नए नम्बरों से मुझे काल करती है और मुझसे अपने पैसे मांगती है । प्रॉफिट के सब साथी लॉस में सिर्फ मैं दोषी।अब मैं उसको पैसे कहाँ से दूं। जब सारी कैपिटल डूब गयी तो मैंने शेयर मार्केट भी छोड़ दिया। लेकिन इस शेयर मार्केट से अब भी मेरा पीछा नहीं छूट रहा है । दुनिया की नजरों में चोर ,बेईमान भी बना। इसी वजह से तुम्हारे जैसी वाइफ भी मुझे छोड़ गयी।इस मार्केट ने मेरा सब कुछ छीन लिया अमृता"।
" तो तुम अब करते क्या हो " अमृता ने हौले से पूछा।
"वसई की एक बेकरी के प्लांट में मैनेजर हूँ, इधर एक क्लाइंट से कलेक्शन के लिये आया था, वहीं प्लांट के बाजू में रहता भी हूँ और तुम?"
"माडल्स को तैयार करती हूँ। उनकी लिपिस्टिक, क्रीम ,हेयर स्टाइल ,मेकअप वगैरह ठीक करती हूँ। लेकिन वो काम भी नहीं मिलता बराबर । लोग काम तो करवा लेते हैं लेकिन साल -साल भर पेमेंट नहीं देते। कटोरा लेकर सड़क पर आ जाने या सुसाइड कर लेने का ही रास्ता बचा है अब तो। देखो कब तक गाड़ी चलती है ?"
ये कहकर अमृता सुबक -सुबक कर रोने लगी। मंगेश उसको रुमाल देता है लेकिन वो अपने पर्स से रुमाल निकालकर अपने आंसू पोंछती है और फिर कहती है
"बहुत प्रॉब्लम है मंगेश मेरी लाइफ में । मेरा हेल्थ भी ठीक नहीं रहता। अकेली लेडी को दुनिया मुफ्त का माल समझती है। मेरा जी भी बहुत घबराता है अकेले रहने की वजह से "।
मंगेश कोमल स्वर में कहता है
"अकेले रहने में सबको प्रॉबल्म होती है । इसीलिये मैंने भी दहिसर का रूम छोड़ दिया था और वसई शिफ्ट हो गया था उधर इलाहाबाद वाले शुक्ला जी के साथ रहता हूँ । बड़े ही धर्म -कर्म वाले और पुजारी टाइप के आदमी हैं। दहिसर का रूम खाली पड़ा है,एक अपने जोगदंड चाचा हैं वही अपनी गारमेंट फैक्टरी के कुछ कपड़े वहां रखते हैं "।
अमृता ने सिर झुकाकर कहा –
"ठीक है, अगर रेंट ना दे पाने की वजह से मकान मालिक मुझे निकाल दे तो तुम उन कपड़ों के ढेर के बीच मुझे रहने के लिये थोड़ी सी जगह दे देना "।
दोनों चुप हो जाते हैं ,बड़ी देर तक सन्नाटा रहता है फिर मंगेश अपना हाथ बढ़ाकर अमृता के हाथ पर रख देता है ।अमृता पहले तो नजरें उठाकर मंगेश को देखती है ,फिर नजरें झुका लेती है । मंगेश – "सर छुपाने की जगह मिल जाएगी लेकिन शर्त ये है कि तुमको मकान मालिक से अफेयर करना होगा और कपड़ों के ढेर में कभी -कभी कपड़े उतर भी जाया करेंगे "ये कहते हुए मंगेश ने शरारत से आंख मारी।
अमृता नजरें झुका लेती है और हँसते हुए कहती है- "फिर से वही सब ,लाइफलांग यही गेम चलता रहेगा क्या "
मंगेश हँसते हुए कहता है "लाइफ इटसेल्फ इज ए गेम ऑफ लॉस्ट एंड फाउंड"।
उस सिंदूरी शाम में उन दोनों के चेहरे उल्लास से दमक उठे।

जैन कविराय की कुंडलियाँ

: 1:

जब तक सच के द्वार पर, खड़े रहेंगे लोग।
झूठ नहीं कर पायेगा, उन सबका उपयोग।।
उन सबका उपयोग, रहेगी गर्दन तनकर।
बने अलग पहचान, वस्तु ज्यों निकले छनकर।
कहे जैन कविराय, रहोगे ज़िंदा तब तक।
झूठों का संसार न अपनाओगे जब तक।।

:2:

आँखों में उम्मीद की, किरण राखिए संग।
कर्मवीर बनकरसदा दिल में रहे उमंग।।
दिल में रहे उमंग, हौसला हो जीवन में।
विजय भाव की गूँज, सदा तेरे आँगन में।
कहे जैन कविराय, पुष्प नव ज्यों शाखों में।
सपनों का संसार, बसे तेरी आँखों में।।

:3:

बस्ती में सूरज उगा जागा सारा गाँव।
खेत जोतने को बढ़े, फिर हलधर के पाँव।।
फिर हलधर के पाँव, बहेगा खून पसीना।
जीवन का यह सार, कि मेहनत करके जीना।
कहे जैन कविराय, अलग माटी की मस्ती।
फसल पके तो संग, गाँव के झूमे बस्ती।।

:4: :

अम्बर में लख मेघ को, हर्षित हुआ किसान।
आएगी अब हे प्रभु, इन फसलों में जान।।
इन फसलों में जान, संभालूँगा मैं सल को।
फसलों की मुस्कान, बढ़ाये मेरे बल को।
कहे जैन कविराय मिलें सौ में सौ नम्बर।
सोना उगले खेत, झमाझम बरसो अम्बर।।

:5:

हार चढ़ाकर चित्र पर दिया पिता को मान।
कई बरस पीड़ा सही, नहीं लिया संज्ञान।।
नहीं लिया संज्ञान, पिता लेटा ही लेटा।
किया बहुत ही याद, मगर कब लौटा बेटा।
मन से खुश था पुत्र, सभी को भोज खिलाकर।
कहे जैन कविराय, चित्र पर हार चढ़ाकर। ।

:6:

घर में तुलसी रोपिये, तुलसी है वरदान।
वायु को पोषित करे तुलसी गुण की खान।।
तुलसी गुण की खान, ये पर्यावरण सुधारे।
आक्सीजन दे प्राण, बचाती सदा हमारे।
कहे जैन कविराय, न पनपे रोग उदर में ।
फल फूलों के संग, उगाओ तुलसी घर में ।।

:7::

पीले फूलों ने किया, सरसों का श्रृंगार।
धरा सुगंधित हो गई, देख बसंत बहार।।
देख बसंत बहार, पड़े सर्दी को ताले।
छटी हर तरफ धुंध, और फैले उजियाले।
कहे जैन कविराय, हुए नर नारि रंगीले।
सब होली में मस्त, दिखेंगे नीले पीले।।

अशोक जैन

त्रिलोक सिंह ठकुरेला की

मुकरियाँ

रातों में सुख से भर देता।
दिन में नहीं कभी सुधि लेता।
फिर भी मुझे बहुत ही प्यारा।
क्या सखि, साजन? ना सखि, तारा।

सबके सन्मुख मान बढ़ाये।
गले लिपटकर सुख पंहुचाये।
मुझ पर जैसे जादू डाला।
क्या सखि, साजन? ना सखि, माला।

जब आये तब खुशियाँ लाता।
मुझको अपने पास बुलाता।
लगती मधुर मिलन की बेला।
क्या सखि, साजन? ना सखि, मेला।

पाकर उसे फिरूँ इतराती।
जो मन चाहे सो मैं पाती।
सहज नशा होता अलबत्ता ।
क्या सखि, साजन? ना सखि, सत्ता।

आखिरी बार

डॉ सरला सिंह 'स्निग्धा'

उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले में किदवई नगर मेरे पसंदीदा जगहों में एक है। यहीं के भारती विद्यापीठ स्कूल से मेरी सातवीं तक की पढ़ाई भी पूरी हुई है। यहीं पर मनीष कुमार जैन का बहुत बड़ा मकान था। कानपुर के सी ओ डी में किसी बहुत अच्छे पद पर कार्यरत थे। अपनी पत्नी तथा माता-पिता के साथ काफी खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहे थे। धीरे-धीरे समय आगे बढ़ता रहा और उनके भी आँगन में दो पुत्र तथा एक पुत्री का आगमन हुआ। दोनों ही पुत्र तथा पुत्री की शिक्षा दीक्षा में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी।

बच्चों के बड़े होने पर दोनों बेटों तथा बेटी की शादी बहुत धूमधाम से सम्पन्न की। बड़ा बेटा इंजीनियर था तो उसकी तो उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी किन्तु छोटे बेटे ने ग्रेजुएशन करने के बाद ही पढ़ाई छोड़ दी। छोटी मोटी नौकरी वह करना ही नहीं चाहता था। सम्पन्न परिवार के इज्जत का प्रश्न उनके सामने आ जाया करता था। बड़े भाई के बढ़ते हुए रुतबे से भी खास तौर पर दुखी ही रहते।

एक समृद्ध परिवार के होते हुए भी दोनों ही भाइयो में कभी भी निभ नहीं सकी ।

छोटे भाई का परिवार बड़े भाई से हमेशा ही धन खींचना चाहता था। वह इसके लिए किसी भी तरह के हथकंडे लगाने को सदैव ही तत्पर रहता। पिता भी हमेशा ही छोटे का ही पक्ष लिया करते थे।

"पापा जी मैं अब कोई बिजनेस करना चाहता हूँ, बड़े भइया अगर मदद कर दें तो।"

"हां ,हां क्यों नहीं । कुछ वह करेगा और कुछ मैं करूँगा। तुम कुछ करो तो सही।"

पापा जी मैं तो बहुत कुछ करना चाहता हूँ मगर यह पैसों की कमी ही मेरा रास्ता रोक देती है।" विजय ने आँखें नीचे किये हुए ही जवाब दिया

रात में खाना खाने के बाद मनीष कुमार जैन ने अपने बड़े बेटे सुगम को अपने पास बुलवाया। छोटी बहन की शादी के बाद से ही दोनों भाई अलग-अलग रह रहे थे। ऊपर का हिस्सा बड़े को तथा नीचे का हिस्सा छोटे को मिला था। मां व पिता छोटे बेटे के ही साथ रहते थे।

जी पापा जी, आपने बुलाया है?

हां, कभी-कभार मुझसे मिलने भी आ जाया करो बेटा।

"क्या कह रहे हैं पापा जी मैं तो हर दूसरे तीसरे दिन आ ही जाता हूँ और हालचाल तो रोज ही

पता करता हूँ।" सुगम ने छोटे भाई विजय की ओर देखते हुए कहा।

सो तो है बेटा। हाँ तुमसे कुछ कहना था।

कहिए पापा जी।

"अरे यह विजय कोई बिजनेस करना चाहता है आठ दस लाख लगेंगे। पांच लाख तुम दे दो बाकी मैं कर दूँगा ।"

अभी तो पिछली बार ही चार लाख दिये थे जिसे इन्होंने डुबो दिया। आपने भी तो कुछ दिया ही होगा ?

यह तो बिजनेस है, नफा नुकसान तो लगा ही रहता है बेटा। देखो इसबार इसका काम कराना है। जैसे भी करो।

पिता की बात सुनकर सुगम जैन मन मसोस रह गए। पिता हमेशा ही छोटे की ही तरफदारी किया करते हैं।

एक वह है की इंजीनियर होते हुए भी कर्ज ही भरता रहता है। पिता को रिटायर्मेंट के बाद जो भी मिला वह सब उन्होने छोटे को ही समर्पित कर दिया। अब करीब साठ हजार की पेंशन भी छोटे को ही देते हैं।

कुछ दो साल पहले तक माँ थीं तब वे पापा जी को थोड़ा-बहुत समझाती भी थीं पर अब तो वे किसी की भी नहीं सुनते। कर्ज छोटा भाई करता है और भरना उनको पड़ता है। बड़े घर की बड़ी इज्जत का सवाल जो ठहरा।

बड़े भाई की पत्नी भी सरकारी नौकरी में है इससे छोटे भाई का परिवार और भी ईर्ष्या किया करता है। कई बार छोटे की पत्नी ने उस वक्त सीढ़ियों पर तेल बिखरा दिया जब उनका काम से लौटने का समय होता परन्तु हर बार वह बच गई। देवरानी साहिबा के नीयत में खोट तो इस कदर थी की दो साल पहले जब मां की तबियत ज्यादा ही खराब हो गयी तब ऊपर से बड़े के परिवार को बुलाया गया। सारे लोग मां के पास बैठे थे । उनकी अन्तिम सांसें चल रहीं थी।कोई उनके मुख में गंगाजल डाल रहा था कोई तुलसी पत्ता। सभी मां को जाते हुए देखकर रो रहे थे । इसके बाद मां के प्राणपखेरू उड़ गये। फिर मां के मृत काया को ड्राइंग रूम में लाया गया। तब तक लगभग सभी लोग एकत्रित हो गये थे। शाम हो गई थी तो अन्तिम संस्कार भी दूसरे दिन ही होना था। इसी बीच छोटी बहू उठी और मां के कमरे में जाकर अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया। उसने जल्दी जल्दी सासू मां के आलमारी अटैची तथा

अन्य चीजों की तलाशी ले डाली और जो भी गहने व पैसे थे पहले तो सभी को अपने कब्जे में लिया फिर ले जाकर अपने कमरे में आलमारी में रख आयी फिर बाहर ड्राइंग रूम में आयी। समझ तो सभी रहे थे परन्तु ऐसे मौके पर बोलता भी तो कौन?

सुगम क्या सोचा है? कुछ व्यवस्था हुई?

पापा जी मैं इतने पैसे कहाँ से ले आऊं? आप तो देख ही रहे हैं की अभी बेटी की शादी की है मैंने। उसमें भी आप लोगों ने कुछ सहयोग नहीं किया था। बेटा भी अभी बेरोजगार ही है उसके बारे में भी तो हमें सोचना है।

हां ठीक है पर तुम दोनों ही कमाते हो और विजय तो अकेला ही बिजनेस करता है और वह भी ठीक नहीं चल रहा है।

पर इतने अधिक पैसे मैं कहाँ से ले आऊँ? ऐसा करो तुम ऊपर का आधा हिस्सा छोड़ दो। उसको बेचकर मैं छोटे के बिजनेस के लिए पैसों का इन्तजाम कर दूँगा।

सुगम जैन आश्चर्य में पड़े रह गये की पिता के मन में केवल छोटे बेटे से ही प्रेम था। उसके लिए

वे कुछ भी करने को तैयार थे।

नहीं पापा ऊपर का हिस्सा नहीं बिकेगा मैं किसी भी तरह आप को पांच लाख लाकर दे दूंगा लेकिन यह आखिरी बार होगा यह आप भी समझ लीजिए।

पूर्व में पत्रकारिता सरकार बनाने और गिराने में अपनी अहम भूमिका निभाती थी. डॉ चंद्रभान सिंह

राजस्थान मीडिया एक्शन फोरम द्वारा पत्रकार परिचर्चा एवं सम्मान समारोह हुआ संपन्न

जयपुर : राजस्थान

मीडिया एक्शन फोरम की तरफ से रविवार को राजधानी के पिंकसिटी प्रेस क्लब ऑडिटोरियम में मुंशी प्रेमचंद की स्मृति में "मीडिया का बदलता परिवेश" पर परिचर्चा और सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं बीसूका के उपाध्यक्ष डॉ चंद्रभान सिंह रहे, जिन्होंने स्वतंत्र और निष्पक्ष पत्रकारिता पर जोर देते हुए कहा कि समय के साथ–साथ हर क्षेत्र में बदलाव हुआ है और होना भी चाहिए इसलिए मीडिया भी इससे अछूता नहीं है। उन्होंने कहा कि पहले की पत्रकारिता सरकार बनाने और गिराने में अपनी अहम भूमिका निभाती थी जबकि अब ऐसा देखने को नहीं मिलता क्योंकि अब सरकार बनाने और गिराने के लिए जब विधायक और मंत्री तक बिक जाते हैं तो अपना परिवार चलाने के लिए पत्रकारों को भी कई बार अपनी खबरों के साथ समझौता करना पड़ता है। डॉ चंद्रभान ने अपने पुराने अनुभवों को साझा करते हुए राजनीतिक संघर्ष के बारे में भी बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ पत्रकार राजेंद्र बोड़ा ने कहा कि समय के साथ हर चीज में बदलाव आता रहता है इसलिए मीडिया का परिवेश भी पहले से बहुत हद तक अब बदल चुका है। इसका मुख्य कारण आज के दौर की नई तकनीकें हैं, जिनका इस्तेमाल करना पत्रकार और पत्रकारिता के लिए बहुत जरूरी है। इनसे पहले कार्यक्रम के स्वागत उद्बोधन में राजस्थान मीडिया एक्शन फोरम के संस्थापक अध्यक्ष अनिल सक्सेना ने अपने मन की बात रखते हुए कहा कि फोरम का मुख्य उद्देश्य युवा पत्रकारों छोटे–छोटे गांव एवं शहरों से जुड़े कलम के सिपाहियों को आगे लाना है। साथ ही उन्होंने कहा कि उनके गुरु स्व. वीर सक्सेना से मिली सीख की बदौलत उन्होंने वर्ष 2011 में फोरम की शुरुआत की थी और अभी तक राजस्थान राज्य के कई शहरों में फोरम के कार्यक्रम कराएं जा चुके हैं। उन्होंने इस सोच व उद्देश्य के साथ कार्यक्रम कराएं हैं कि आने वाले समय में पत्रकारिता जगत से जुड़ा युवा सकारात्मक मानसिकता के साथ जनहित में अपनी कलम की धार को चलाए। वहीं कार्यक्रम की रूपरेखा का प्रारम्भिक परिचय देते हुए विनोद भारद्वाज ने कहा कि पहले की पत्रकारिता और अब की पत्रकारिता में बहुत से उतार–चढ़ाव आए हैं और आज हर कोई व्यक्ति खुद में एक पत्रकार है। साथ ही स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति हर एक नागरिक को मिली हुई है। चाहे वो सोशल मीडिया के जरिए ही क्यों न हो बस निर्भर यह करता है कि आप उसका सदउपयोग कर रहे हैं या दुरुपयोग। उन्होंने कहा कि आज हर गली महोल्ले या गांव कस्बे की समस्या का निवारण इंसान स्वयं कर सकता है। कार्यक्रम के विशिष्ट अथितियों में उपस्थित सीएम के ओएसडी फारुख अफरीदी ने कहा कि आज के युग में कॉर्पोरेट सेक्टर का पत्रकारिता में सहभागिता होने की वजह से पत्रकारिता से आमजन का विश्वास उठने लगा है। साहित्यकार लोकेश कुमार साहिल ने कहा कि आज जो कुछ भी अच्छा हो रहा है, वह भारत के आजादी से किए हुए अच्छे कार्यों का ही नतीजा है। लेखक कृष्ण

कल्पित ने कहा कि आजकल अवसरवादी नेता भी उसी महापुरुष को पूछते हैं, जो उन्हें वोट दिला सकते हैं। आज के अखबारों में और पत्रकारिता में संपादक की भूमिका बिल्कुल समाप्त हो गई है। साथ ही वर्तमान में साहित्य ने भी पत्रकारिता से दूरी बना ली है। सोशल मीडिया के द्वारा आजकल सब कुछ हो रहा है और प्रिंट मीडिया अपनी विश्वसनीयता खोता जा रहा है। हरिराम मीणा ने विश्व पटल पर भारत देश के आंकड़े बताते हुए कहा कि भुखमरी, बेरोजगारी, प्रदूषण, आर्थिक नीति व अपराध की श्रेणी में भारत किसी से पीछे नहीं है, जबकि किसी भी प्रिंट या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा इन विषयों पर कोई भी चर्चा नहीं की जाती। पिंकसिटी प्रेस क्लब के अध्यक्ष मुकेश मीणा ने कहा कि समय-समय पर पत्रकारिता में परिवर्तन होता आया है। कोरोना काल में भी देखा गया कि डिजिटल मीडिया के माध्यम से ही पत्रकारिता ज्यादा हावी रही। इस कार्यक्रम के जरिए उन्होंने पत्रकारों के साथ ही साहित्यकारों के लिए भी सरकारी सुविधाओं की मांग की।

कार्यक्रम में राजस्थान मीडिया एक्शन फोरम से जुड़े उल्लेखनीय कार्य करने वालों को कार्यक्रम के दौरान सम्मानित किया गया । सम्मानित होने वालों में विनोद भारद्वाज (जयपुर), जगदीश शर्मा (जयपुर), फारूक आफरीदी (जयपुर), अशोक राही (जयपुर), पुरषोत्तम सैनी (जयपुर), राधारमन शर्मा (जयपुर), अशोक लोढ़ा (नसीराबाद), गिरीश पालीवाल (प्रतापगढ़), हेमन्त साहु (ब्यावर), गिरीश पालीवाल (प्रतापगढ़), मोरध्वज सिंह (भरतपुर), आशा पाण्डेय (उदयपुर), वीरू कुमार (अलवर), शिवानी शर्मा (जयपुर), संदीप माली (प्रतापगढ़), हेमन्त सालवी (धरियावद), अमित चेचानी (चित्तौड़गढ़), मनोज सोनी (निम्बाहेड़ा), रहीस अहमद (जोधपुर) और नेट थियेटर सहित अन्य प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ पत्रकार राधारमण शर्मा ने आभार व्यक्त किया। पिंक सिटी प्रेस क्लब की ओर से अध्यक्ष मुकेश मीणा औऱ कार्यकारिणी सदस्यो ने फोरम के अध्यक्ष अनिल सक्सेना का सम्मान किया। मंच संचालन सूर्या प्रकाश उपाध्याय ने किया।

लघुकथा : नेकी की कीमत

मैं सुबह टपरी पर चाय की चुस्की में मशगुल था कि तभी मेरे सामने एक कार आकर रुकी और एक सम्भ्रान्त लड़की कार से उतरी।
लड़की कुछ देर तक इधर-उधर कुछ ढूढ रही थी। जब मैंने उसे ध्यान से देखा तो वह मेरी ओर चलकर आई और बोली इस फोटो में जो आदमी है वह कहाँ रहते है?
"ये आपके पापा हैं न....?" मैं तपाक से फोटो देखकर बोला।
"जी ...वह पांच साल पहले ही घर छोड़कर कहीं चले गए थे।"
"ओह....आप उनकी इकलौती बेटी हैं?" मैंने देखा उनकी आँखें नम हो गई।
"जी...आप ?"मैंने ही उनके पास फोन नंबर पाकर आपको फोन किया था।
"अगर वह पांच साल पहले मेरी स्कूटी के सामने न आते तो ऐसे ही पागलों की तरह आज भी भटक रहे होते.....।
क्या हुआ उनको?
कुछ नहीं! अब वह बिलकुल तंदुरुस्त हैं। चलिए आपके पिता जी से मिलवाता हूँ।
अंकल! देखिए आपसे मिलने कौन आया है?
"अरे रोमी! बेटी तुम...? इस देवता के सेवा के बदौलत ही मानसिकता रोग से मैं बिलकुल ठीक हो सका।"
"मतलब...?" बेटी ने पूछा।
कुछ ठहर कर उन्होंने कहा-
" पांच साल पहले एक दिन हताश परेशान और पगलाकर घर से निकल पड़ा मरने....। लेकिन रेलवे लाइन से कुछ दूरी पर ही इस देवता की स्कूटी के सामने टकरा गया। इन्होंने उठाया और प्यार से कहा कि बाबा क्यों मरना चाहते हो? मैं मनोचिकित्सक हूँ.... तो मैंने पूरी बात बताई। मैंने कहा,ऐसी कोई दवा नहीं दे सकते.... तो मैंने रोते हुए..... फिर तो रेल की पटरियों पर ही अब मेरी मुश्किलों का अन्त होगा। मैं जाने लगा तो वे मेरे पीछे-पीछे आए। अपने बच्चे की तरह आपको रखूंगा और इलाज भी करूंगा। उनके समझाने से मुझमें उम्मीद जगी और आज मैं बिलकुल ठीक हो गया। जब मैं चार साल पहले विदेश से लौटी थी ... तभी से आपको खोजने में लगी थी।
"बेटी! क्या मैं इस नेकी की कीमत अदा कर सकता हूँ....तुम्हारा हाथ इस देवता के हाथ में देकर?"
बेटी ने सिर झुकाकर हामी भर दी।

सूर्यदीप कुशवाहा

चार गीतिकायें कैलाश मनहर

(एक)
किसके लिये पराया किसके लिये सगा हूँ
यह सोच कर मैं अपने भीतर ही डगमगा हूँ

फैला हुआ है सहरा हर सिम्त दर्दो ग़म का
अपने ही आँसुओं में मैं डूबने लगा हूँ

खोया हुआ हूँ जाने मैं कौन-सी दुनिया में
मुझको पता नहीं है सोया हूँ या जगा हूँ

औरों को दोष क्यों दूँ वे मेरे भला कब थे
अपनी ही शराफ़त से अक्सर गया ठगा हूँ

छल-छद्म सभ्यता के मैं समझ नहीं पाया
अब इसलिये ही जंगल की ओर मैं भगा हूँ

(दो)
वक़्त है बहुत ही बेदर्द मियाँ
ग़मज़दा हैं हरेक फ़र्द मियाँ

मर्द सब सल्तनत के डर से ये
हो गये हैं क़तई नामर्द मियाँ

भला मानुष नहीं है खुश कोई
सबके चेहरे पड़े हैं ज़र्द मियाँ

ज़ुबान सूख रही है सबकी
रूह पे छा रही है गर्द मियाँ

न जाने कैसी यह सियासत है
सड़ाँध मारती है कर्द मियाँ

(तीन)
सोचता हूँ सोच कर हैरान हुये जाता हूँ
मैं अपने आप से अनजान हुये जाता हूँ

सारी हरियाली तो इस बाग़ को दे दी मैंने
आख़िरी वक़्त ख़ुद वीरान हुये जाता हूँ

देख पाया नहीं अपनों का परायापन मैं
अपनी ग़लती पे पशेमान हुये जाता हूँ

इतने झेले हैं ग़म कि सबकी निगाहों में अब
ग़मज़दा वक़्त की पहचान हुये जाता हूँ

दफ़्न हूँ जैसे अपने दिल की कब्र में ख़ुद ही
अब तो मैं ख़ुद का कब्रिस्तान हुये जाता हूँ

(चार)
दूज का चाँद देख कर छत से
याद उसको किया मुहब्बत से

उसके हालात क्या पता मुझ को
मैं हूँ मज़बूर अपनी आदत से

बरसों पहले जो लिखा था उस ने
खुश्बू आती है आज तक ख़त से

हाय वो आख़िरी नज़र उस की
उसने देखा था कितनी हसरत से

दुआ यही है सबके हक़ में मेरी
ज़िन्दगी सजती रहे उल्फ़त से

मादाभक्षी

डॉ. नीहारिका रश्मि

वह अचानक सामने आ खड़ी हुई मै बरामदे में धूप सेंक रही थी, आते ही शिकायती स्वर में बोली; आँटी मै आपके सामने से निकल गई आपने मुझे पहचाना नहीं। मै आश्चर्य से मुँह खोले उसे देख रही थी, लेकिन पहचान नहीं पा रही थी; मेरी आँखों में अजनबीपन देख कर वह मुस्कुराकर बोली; "मै पूजा हूँ"

" पूजा! मेरा मुँह अभी तक खुला हुआ था ये मेरे जान पहचान में कौन सी पूजा थी यह मुझे अभी तक याद नहीं आ रहा था।

" अरे मैं आपके घर आती थी न छोटी पूजा" उसने हाथ से छोटे होने का इशारा किया।

" छोटी वाली पूजा ? " वो पूजा जो मेरे घर किताब बगल में दबाकर पढ़ने आती थी, वो पूजा जो टी.वी. देखने मेरे घर में ही बैठी रहती थी और मैं भी उसे बिठाये रहती थी उसकी माँ दिनभर घरों में काम करती थी उसकी मां को गरीबी ने बच्चों की फिक्र करने की इजाजत नहीं दी थी या तो वो बच्चों के खाने -कपड़े की फिक्र करे या उनके आवारा घूमने की ? मैं बच्चियों पर हो रहे बलात्कारों की खबरों से डरी हुई एक बच्ची की देख-रेख करके अपने-आपको संतुष्ट महसूस करती। वह मेरे घर से जाती तो मैं हिदायतें देती कि सीधे नानी के घर जाना, कहीं और नहीं जाना। भगवान से प्रार्थना करती कि हे भगवान यह बच्ची किसी भेड़िये के हाथ न लगे। उसने मेरा स्नेह जीत लिया था। वह दस वर्षीय बच्ची जो कन्या-पूजन में झाँकी दर झाँकी घर दर घर लगातार पूजी जाती थी, मनुहार कर-करके खिलाई जाती थी; वह पूजा जो कन्या-पूजन के रूपये दो रूपये से अपना बैंक-बैलेन्स बनाना चाहती थी जानती भी थी किन्तु अक्सर उसके बचत बैंक पर उसकी माँ डाका डाल देती थी, उसके ऐतराज करने पर कभी बहला-फुसला कर तो कभी डरा धमका कर पूजा के बैंक बैलेन्स का गबन कर देती थी और पूजा माँ को कोसती, लड़ती रहती थी लेकिन कुछ नहीं होता था कुछ नहीं हुआ। वहीं पूजा मेरे सामने खड़ी थी। एक समूची औरत हाथ में एक बच्ची की उँगली थामे बाकायदे साड़ी पहने, पल्ला पिन अप किये स्वेटर पहने बच्चा भी फिट-फाट ऊनी कपड़ों में टोपा पहने यकीन नहीं आ रहा था। ये तो एक विवाहिता बाल बच्चेदार स्त्री उस पूजा से बिल्कुल उलट ?

"पूजा" ? इतने साल बाद ? तू तो मुझसे गुस्सा हो गई थी ? कितने सालों बाद आई है ? पास ही बसी झुग्गी बस्ती में रहते हुये पूजा कब से नहीं मिली थी सुना जरूर था कि उसकी शादी हो गई थी। किन्तु उसकी ऐसी कोई अवस्था हो गई होगी यह मेरी कल्पना से परे था। थोड़ी सी लंबी भी हो गई थी बड़े होते-होते उसने थोड़ी सी दूरी बना ली थी। दरअसल उसे एक भाभी मिल गई थी जो बस्ती में थोड़ी बदनाम थी। किन्तु पूजा को चौदह-पंद्रह वर्ष की उम्र में ही उसने सुहाने सपने दिखाने शुरू कर दिये थे, पुरूष के संग साथ के उसके इरादे कुछ अच्छें नहीं लगे थे मुझे पूजा के लिये, पूजा एक बार उस भाभी को लेकर घर आई थी उसके रंग-ढंग देखकर मैने मना कर दिया था कि उस भाभी को लेकर मेरे घर कभी नहीं आना। धीरे-धीरे पूजा का आना भी कम हो गया था एक तरफ भाभी के दिखाये रंगीन सपने जिनमें सुख ही सुख था, दूसरी तरफ मेरी रोका-टोकी, अतिरिक्त सावधानी। उगती उम्र की लड़की जिसे भाभी ने सुगंधित तेल लगाना सिखाया, तरह-तरह की ब्यूटी क्रीमस लगाना सिखाया जाहिर है सपने आकर्षित करते हैं अपनी ओर खीचते हैं क्योंकि वो वास्तविकता से आँखें मूंद लेने की छूट देते हैं। तो उसे भी उन सपनों ने मुझसे दूर कर दिया।

वो जिस तरह धारा प्रवाह पुरूषों को कोस रही थी वह उसके मुँह से सुनना किसी प्रगतिशील स्त्री संघर्ष समिति के नेता के मुँह से सुनने जैसा ही था। आँखें बंद कर लेती तो यही लगता। आखिरकार मैने उसके भाषण पर विराम लगा कर पूछा, " तो क्या अब तू लौट कर नहीं जायेगी ? "

बीच में कभी आती थी तो अपनी नानी और मम्मी की उस पर मार-पीट की गाली-गलौज, लड़ाई की शिकायत करती। मामला सुनकर मै यदि उसकी माँ या नानी का पक्ष लेती तो वह निराश हो जाती।

धीरे-धीरे उसका आना लगभग बंद हो गया। मै भी अपने झंझटों में लिप्त हो गई। उस पूजा का आज अचानक ये रूप " मैने कई अपने आदमी से "मेरी आँटी तेरे को पुलिस में दे देगी तू मेरे को मारता-पीटता है मेरी आँटी मेरे को इतना प्यार करती है तेरे को छोडेगी नइं। " वो अपनी रौ में बोले जा रही। मै चौक गई मै क्या करूँगी इसके आदमी का ? क्या बिगाड़ लूँगी उस आदमी का जिसे मैने देखा भी नहीं। पर प्रगट में यहीं बोली "वो तुझे मारता क्यों है ? " कहता है मै अपने पहले आदमी से न बोलू "पहला आदमी" ?

हाँ मेरी शादी पहले उससे हुइ थी, इसी का बड़ा भाई है, उस समय तो मेरे को बोला तेरे को खूब खुश रखूँगा ऐसा करूँगा, वैसा करूँगा ? मैं छोटी थी इसकी बातों में आ गई, अब मेरी बच्ची के लिये दूध तक नहीं लाकर देता, राशन नहीं लाता, अभी ये मेरा दूध पीती है मेरे को बहुत भूख लगती है पर वो कुछ नहीं सोचता।

" और तो और आँटी एक औरत को घर लाता है उसके साथ घर के पलंग पर सोता है।"

"माई-गॉड, माई-गॉड, माई-गॉड " पूजा क्या–क्या हो गया तेरे साथ ?

"आँटी मेरे को तो आप काम पे लगा लो मै अब वापस नहीं जाऊँगी "

" मेरी मम्मी के पास इतने पैसे नहीं है वो अलग से दूध नहीं खरीद सकती मैं दूध लाती हूँ तो कभी मामा पी जाता है ; कभी भईया वो सोचते ही नहीं हैं कि बच्चेी के लिये दूध बचा रहने दें।"

" क्या बिजली पर गिराये जा रही है पूजा थोड़ी सांस तो ले ले "

"आदमी को तो बस अय्याशी करना आता है बच्चेा कैसे पलते हैं वो नहीं जानता न जानना चाहता है। " उसने नफरत से मुँह फेर लिया।

मै अवाक सी उसे सुन रही थी कभी चिल्लर इकट्ठा करने में परम आनन्द पाने वाली पूजा दुनियादारी में कितनी प्रवीण हो गई थी। स्त्री पुरूष संबंधों पर कितनी रिर्सच कर चुकी थी। मै कभी अपनी सहेलियों से भी लेड़ीज टॉक्स" नहीं करती थी फिर पूजा और मेरी उम्र में तो बहुत अंतर था। वो जिस तरह धारा प्रवाह पुरूषों को कोस रही थी वह उसके मुँह से

हूँ इसके लिए और मामा और भैया पी जाते हैं, अकेली कमरा किराये पर लेकर रह नहीं सकती।

“मेरी एक सहेली को फुल टाइम मेड की जरूरत है उसके यहाँ तेरे लिये अलग कमरा भी है उससे बात करूँ “ मैने पूजा की स्वीकृति लेना चाही। उसने कुछ असमंजस में सिर हिलाया और बच्चे की नींद का समय है ऐसा कहकर दूसरे दिन आने का कहकर चली गई।

दूसरा दिन निकल गया तीसरा भी और चौथा दिन भी पर शाम होते-होते फोन आया कोई “ पूजा जोशी” है ऐसा टूकॉलर ने बताया। फोन उठाया पूजा ही थी, “ आँटी मै पूजा बोल रही हूँ।

“ पूजा ” कहाँ है तू ? ”

“ आँटी मैं यहाँ आ गई सीहोर में। ”

“ सीहोर ? मतलब बैक टू पवेलियन ? तू घर चली गई।

घर ? ये मेरे मुँह से क्या निकल गया। जिस छत के नीचे उसे अपनी पूरी वफादारी श्रम समर्पण सब कुछ देने के बदले लात-घूँसे मिलते हों, उसे घर भी चलाना हो और पूरा राशन भी न मिलता हो, उसके बच्ची का पिता ही बच्ची के प्राईमरी खुराक दूध तक का इंतजाम न करता हो, खुद पूजा का तो क्या तो ख्याल करता था वो तो उसके लिये घर की नौकरानी और बिस्तर थी बस ! वो क्या पूजा का घर था ? क्या किसी भी औरत का घर सच में कहीं होता है क्या ? क्या किसी भी औरत का घर हो सकता है कहीं भी क्या ? खैर मैने उसे पारंपरिक भाषण देकर सान्त्वना दी। जैसे भाषण मुझे विरासत में मिले थे। फोन पर वहीं दु:ख भरी कहानी थी। उसका कथित पति आकर पूजा के सारे मायके वालों से माफी मॉगकर नये लुभावने वादे करके पूजा को ले गया। फिर पूजा बिस्तर बन गई थी नौकरानी बन गई थी पंचिंग बैग बन गई थी और वहाँ से फड़फडा रही थी, “ आँटी मेरे को कोई काम दिला दो। मै इस राक्षस के साथ नहीं रह पाऊंगी। मै तो मर भी जाऊँ लेकिन मेरी गुडिया का क्या होगा ?

कमोवेश हम पढ़े-लिखें घर की औरतें भी तो यही थी। सब पत्थर की नाव में सवार थी और हम औरतें कागज की बनी थी। घर ग्रहस्थी वाल-बच्चों के मोह में डूबी उबरने के भ्रम में पड़ी औरतें ! मायके वालों ने पूजा को होल डाल बाँध कर विदा कर दिया था पूजा की बात पर विश्वास किये बिना। वो भी जाने क्यों चली गई थी शायद अपनी बच्ची के दूध के लिये जिस दिन लायेगा वह दूध उस दिन तो अच्छा पहनायेगा, खिलायेगा बच्चीी को उसका बाप उसके बदले पूजा को पीट भी लेगा “ तो पिट लेगी और क्या करूँ आँटी ? ”

मुझे याद आया उस दिन मॉल में एक स्मार्ट पढ़ी-लिखी माँ अपनी लगभग तीन चार साल की बच्ची के लिये पेन-पेंसिल और वैक्स कलर वगैरह चुन रही थी और बच्ची ने आगे बढ़कर अपनी पहुँच में पहुँच काउंटर से “ गुडिया का घर ” का पैक उठा लिया जिसमें छोटा बेलना चकला, छोटे कप, गैस चूल्हाँ इत्यादि पैक थे और उस पैक को वो सीने से

जीवन क्या है?

जीवन क्या है
कोई अर्थ है
या कोई सार्थकता
या कोई स्वर्ग है
या कोई नर्क
या कोई प्रकाश है
या कोई घनघोर अंधेरा
जीवन कोई गीत है
या है कोई गाली
नहीं
जीवन कोरा है
जैसे कोरी है बांसुरी
जैसे स्वतंत्र है व्योम।

विकास तिवारी

रण

फिर क्या था हो गई विराजित, रणचण्डी तनकर तन में।।

क्रान्ति ज्वाल लग उठी धधकने, वीर सैनिकों के मन में।।१।।

बैरकपुर परेड प्रांगण में, मेजर ह्यूशन सिखा उठा।

कारतूस इस तरह दबाना, खोल खोल मुँह दिखा उठा।।२।।

“मंगल पाण्डे”ने ललकारा, 'मारो चलो फिरंगी को'।

यह नारा ही मन्त्र बन गया, हर फौजी हर संगी को।।३।।

कारतूस में लगे चाम ने, मानस में संग्राम किया।

और धर्म ने मातृभूमि की, मुक्तिकाम का काम किया।।४।।

मुँह खुलते ही मेजर ह्यूशन, का रुआब गुमनाम हुआ।

मंगल पाण्डे की गोली से, रिपु का काम तमाम हुआ।।५।।

लेफ्टीनेण्ट बॅब को भी जब, घायल किया चितेर ने।

काल काँपने लगा, मुक्ति का, फूँका शंख सबर ने।।६।।

कोर्ट मारशल हुआ वीर का, सजा मिली फाँसी तन की।

अट्ठारह अप्रैल तय हुई, सुबह - सुबह सत्तावन की।।७।।

मंगल को फाँसी देने का, हुक्म सुना जज उतर गए।

पर बैरकपुर के सारे, जल्लाद हुक्म से मुकर गए।।८।।

सेना में विद्रोह न हो, तब आशंका कर गोरों ने।

कलकत्ता से खल जल्लाद बुलाए आदमखोरों ने।।९।।

फाँसी की तारीख घटाकर, दस दिन पहले की कर दी।

और वीर ने चूम भूमि को, गर्दन फाँसी पर धर दी।।१०।।

गिरेन्द्र सिंह "भदौरिया प्राण"

पेरेंटिंग

डॉ सत्या सिंह

बच्चे को जन्म देना प्रत्येक माता-पिता के जीवन की सबसे बड़ी खुशी होती है। पहली बार बच्चे को गोद में उठाने, उसे बड़ा होते हुए देखने का अनुभव अद्भुत और निराला होता है। बच्चे के बड़े होने की प्रक्रिया बच्चों और माता-पिता दोनों के लिए जटिल और चुनौतीपूर्ण होती है। सभी माँ-बाप अपने बच्चे को दुनियां की सारी खुशियां और सुविधाएं देना चाहते हैं, जो की उन्हें नहीं मिलीं पाई हैं। इसके लिए वे दिन-रात एक करते हैं, परन्तु किशोर वय में आते ही अधिकतर बच्चों की एक अलग ही दुनिया बनने लगती है। जिसके प्रभाव के कारण उन्हें माता-पिता की कई बातें अक्सर बुरी भी लगने लगती हैं, और यहीं से शुरू होता है दोनों पक्षों के बीच एक अनजाना सा द्वंद्व। दोनों के बीच संबंधों के बदलने की शुरुआत भी यहीं से होती है। बच्चे मन के सच्चे ...हम सब ने यह कहावत सुनी है। बच्चों की बेहतर परवरिश (Upbringing) के लिए हम सभी को इस कहावत को ध्यान में रखना बेहद जरूरी होता है। वैसे भी सभी माता-पिता की यह ख्वाहिश होती है कि उनके बच्चे सबसे ज्यादा होशियार और समझदार बने जिसके लिए एक अच्छी पैरेंटिंग (Parenting) बहुत जरूरी होती है।

दोस्तों ! पेरेंटिंग एक बहुत ही जटिल विषय है। हमें इसे समझने के लिए सबसे पहले इसके मनोविज्ञान को समझना पड़ता है। पेरेंटिंग के दौरान छोटी से छोटी बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। बच्चे एक कच्चे मिट्टी की तरह होते हैं हम जैसा चाहें उन्हें बना और संवार सकते हैं। हम जैसा उनके सामने व्यवहार करते हैं या समझाते हैं, वो वैसा ही करने लगते हैं। इसलिए बच्चों की पेरेंटिंग बहुत सोच समझकर करनी चाहिए। हमें कभी भी अपनी बात मनवाने के लिए बच्चों पर गुस्सा नहीं करना चाहिए। कुछ लोग जहाँ अपने बच्चे को ज़रूरत से ज़्यादा प्रोटेक्ट करने लगते हैं, वहीं ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है, जो घर के बाहर का ग़ुस्सा घर के लोगों पर, ख़ासकर बच्चों पर निकालते हैं। और अगर कोई भी व्यक्ति अक्सर ऐसा करता हैं तो वह वास्तव में एक बेहद बुरा अभिभावक है। बच्चे के मन में उसके लिए ज़रा सा भी सम्मान नहीं रह पाएगा। वह उनसे प्रेम करने की जगह उनसे डरेगा और नफ़रत करेगा। और बच्चे के मन की यह नकारात्मक भावना न केवल बच्चे और उनके संबंधों को ख़राब करेगी, बल्कि बतौर इंसान उसके विकास पर भी इसका नकारात्मक असर पड़ेगा। इसलिये अपने बच्चे की शिकायतों को जरूर सुनें कि वो आपसे क्या चाहता है। कई बार बहुत सारे माँ-बाप अपने बच्चे को अक्सर अनुशासन सिखाने के चक्कर में दिन भर उन पर चिल्लाते रहते हैं, कि यह मत करों, इधर मत बैठो, ऐसे मत बोलो, देखो उसके कितने अच्छे नंबर आए हैं आदि। मां-बाप की ये बातें बच्चों को बुरी लगती है तथा इन बातों से बच्चों को शिकायत भी होती है। इसके लिये जरूरी है कि माँ-बाप बच्चों के मन की बात को समझें और उसे समझाएं, क्योंकि ऐसा करने से बच्चा उनकी बात ज्यादा आसानी से सुनेगा और समझेगा। कुछ बच्चे भावनात्मक रूप से ज्यादा कमजोर होते हैं। उन्हें सबके सामने डांटने पर दिल पर गहरा असर पड़ता है। अगर बच्चे से कोई गलती हो जाए तो उसे सबके सामने न डांटे, बल्कि अलग से एकांत में उसे समझाने से वह जल्दी समझेगा। बच्चों के सामने कभी भी झूठ नहीं बोलना चाहिये, क्योंकि जब हम खुद झूठ बोलेंगे तो उसे कैसे रोकेंगे। साथ ही अगर हम कभी बच्चे से किसी चीज का वादा करें तो उसे जरूर निभाएं। ऐसा करने से बच्चे के ऊपर सकारात्मक असर पड़ेगा।

पेरेंटिंग (Parenting) में जो सबसे जरूरी चीज है, वो है अपने बच्चे को समझना क्योंकि जैसे-जैसे बच्चे बड़े और मेच्योर होते हैं, इससे अपने बच्चे का मार्गदर्शन और परवरिश करने में बहुत सहायता मिलती है। सारे माता-पिता को यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि उनके बच्चे में एक अलग व्यक्तित्व विशेषता है, जो कि जीवन भर उसके साथ रहेगी। कई मायनों में चाइल्ड सायकोलॉजी (Child psychology) चेतन और अचेतन चाइल्डहुड डेवलपमेंट का अध्ययन है। एक माता- पिता के रूप में अगर हम अपने बच्चे की चाइल्ड

सायकोलॉजी समझना चाहते हैं, तो उसके लिए हमें उनके खाने , खेलने, सोने आदि की हर चीज को नोटिस करना होगा और जानना होगा कि हमारा बच्चा किस चीज में रूचि लेता है।

किसी से भी तुलना करना एक मानवीय प्रवृत्ति है जिसके कारण कई बार हम तुलना करके आगे बढ़ने की प्रेरणा लेते हैं, परन्तु के बार ऐसे भी मौक़े आते हैं, जब वही तुलना हमें नकारात्मकता से भर देती है। और खासकर बच्चों के मामले में तो तुलना हमेशा ही नकारात्मक असर दिखाती है। हम जब भी दूसरे बच्चों से अपने बच्चे की तुलना करते हैं तो हम अपने बच्चे पर बेवजह का दबाव डालते हैं , और ऐसा करके हम अपने बच्चे के अनूठे व्यक्तित्व को बदलने की कोशिश करते हैं, जो की बिल्कुल ग़लत है। और ऐसी परिस्थिति में हम अपने बच्चे की उलब्धियों की क़दर नहीं कर पाते हैं। इसकी वज़ह से हमारा बच्चा ख़ुद को दूसरों से कमतर समझने लगता है। ऐसी स्थिति में वर्तमान में वह भले ही हमारी बात मान लेता है, पर आगे चलकर वह अपनी असफलताओं के लिए भी हमें ही दोष देना शुरू कर देगा। एक और खास बात हमें बच्चों के लिए हमेंशा ही उपलब्ध रहना चाहिये चाहे हम कितने भी व्यस्त क्यों न हों। हमें हर हाल में उनके लिए समय ज़रूर निकालना चाहिए।

दोस्तों ! आइंस्टाइन ने कहा था की , "अगर आप अपने बच्चे को बुद्धिमान बनाना चाहते हैं तो उसे फ़ेयरी टेल्स सुनाइए। अगर उसे और बुद्धिमान बनाना चाहते हैं तो उसे और ज़्यादा फ़ेयरी टेल्स सुनाइए "। सोचिये हमेंशा दादी और नानी बच्चों की फ़ेवरेट क्यों होती हैं ? क्योंकि वे अपनी कहानियों के माध्यम से उन्हें एक ऐसी दुनिया में ले जाती हैं, जहाँ बच्चों की सारी ऊर्जा कल्पना लोक में विचरण करने लगती है। उनके सामने कभी अनजानी दुनिया के दरवाज़े खुलते हैं , तो कभी अपनी ही दुनिया को नए रंग-ढंग से देखते और सीखते हैं। इतना ही नहीं ये कहानियां जाने-अनजाने बच्चों को एक बेहतर इंसान बनने के लिए प्रेरित भी करती हैं। दोस्तों ! इन कहानियों से तीन सकारात्मक प्रभाव, बच्चों के मन-मस्तिष्क पर पड़ते हैं।

टीवी पर बच्चे कहानियां सुनते समय देख भी रहे होते हैं जिससे उनके दिमाग़ में केवल वही दृश्य चलते हैं, जो स्क्रीन पर दिख रहे होते हैं। इसमें बच्चों की अपनी कोई रचनात्मकता नहीं बढ़ती है। पर कहानियां सुनते समय वे अपने हिसाब से उस कहानी की दुनिया को भी गढ़ते हैं। उस कहानी में उनकी भावनाएं जुड़ जाती हैं। चूंकि वे कहानी सुन रहे होते हैं तो वे उससे जुड़े सवाल भी उत्सुकता बस हमसे पूछ सकते हैं।

इस तरह सवाल पूछना उन्हें जिज्ञासू बनाता है और दुनिया में सफल होने का पहला सूत्र ही है जिज्ञासू होना। इसके अलावा कहानी सुनते समय उनका पूरा ध्यान शब्दों पर होता है जिससे वे नए-नए शब्द सीखते हैं, तथा पुराने शब्दों का नया इस्तेमाल भी उन्हें पता चलता है।

कई कहावतें और मुहावरे बच्चे कहानियों के माध्यम से ही सीख लेते हैं। भारतीय बच्चों को सुनाई जानेवाली सबसे मशहूर कहानियां पंचतंत्र की होती हैं, जिसमें जंगल के जावनरों के माध्यम से नैतिक शिक्षा दी जाती है। पंचतंत्र के बारे में सबको पता होगा कि पढ़ाई में ज़रा भी रुचि न लेने वाले राजा के बच्चों को नैतिक शिक्षा देने के लिए उनके शिक्षक ने उन्हें कहानियों के माध्यम से जीवन के कई गहरे और ज़रूरी मूल्य सिखाए थे। कहानियों की दुनिया काल्पनिक हो या असल ज़िंदगी की, बच्चों को कहानियां सुनाने का मक़सद होता है, उन्हें सही-ग़लत, अच्छा-बुरा जैसे दुनिया के बुनियादी नियम सिखाए जाएं।

कहानियां सुनने के बाद बच्चे न केवल भाषा और उसके इस्तेमाल के तरीक़े सीखेंगे बल्कि साथ ही अलग-अलग रिश्तों, परंपराओं और संस्कृतियों के बारे में भी सीखेंगे। एक अच्छा विद्यार्थी, एक अच्छा मित्र, एक अच्छी संतान या अच्छा इंसान बनने की ज़रूरत क्यों होती है ! इन काल्पनिक कहानियों के माध्यम से बच्चे अपने आप सीख जाएंगे। जब बच्चे कहानियां सुनते हैं तो वे चीज़ों को और घटनाओं को एक के साथ जोड़कर देखना शुरू करते हैं तथा जब वे चीज़ों पर फ़ोकस करते हैं तो उनका कॉन्सन्ट्रेशन बढ़ता है। जो बच्चे ज़्यादा कहानियां सुनते हैं, वे पढ़ाई-लिखाई के मामले में उन बच्चों से अच्छे होते हैं, जो कहानियां सुनने के बजाय टीवी देखने या मोबाइल/कम्प्यूटर में गेम खेलने में ज़्यादा वक़्त बिताते हैं। देखा यह भी जाता है कि कहानियां सुनने में रुचि रखने वाले बच्चे पढ़ना भी जल्दी सीखते हैं, क्योंकि उन्हें और कहानियों के बारे में जानना होता है। हमें चाहिए कि हम बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ाएं और उन्हें हमेशा अच्छा करने के लिए प्रेरित करते रहें। गलती करने पर भी बच्चे को प्यार से समझाएं और अच्छा करने के लिए उसका उत्साह बढ़ाएं उस पर हाथ न उठायें। हमें चाहिए कि हम हर स्थिति में अनुशासन को बनाएं रखें और बच्चे को भी उनका पालन करने के लिए प्रेरित करते रहें। इन सब के साथ ही हमें अपने अनुशासन की सीमाओं को भी निर्धारित करना बहुत ही आवश्यक है। हमें चाहिए कि हम अपने बच्चे के लिए हमेशा समय निकालें।

छोटे बच्चे अक्सर अपने माता-पिता को देखकर उनकी नकल करते हैं, बहुत कुछ सीखते हैं , इसलिए हमें चाहिए कि हम उनके लिए एक अच्छा रोल मॉडल बने। हमें चाहिए कि समय समय पर बच्चे की तारीफ़ करे प्यार को जतायें भी और बिना हिचक अपने प्यार को बच्चे के सामनें व्यक्त करें , इससे बच्चे को अच्छा लगेगा और उसका मनोबल भी बढ़ेगा। बच्चा अगर कोई गलती करता है तो सबसे पहले ये जानने की कोशिश करनी चाहिए कि उसने ऐसा क्यों किया , और इसके पीछे क्या कारण था। ऐसे में ना केवल हम उस जड़ को ढूढ पाएंगे बल्कि बच्चों की सोच के बारे में भी हम जान पायेंगे। जब भी हमें यह पता भी चले कि हमारे बच्चे की गलती है, तो ऐसे में उसे डांटने के बजाय या सजा देने के बजाय उसे प्यार से समझाएं।

सजा देने से परिस्थिति अच्छी होने की जगह और भी बदतर हो सकती है। हमें चाहिए कि हम ना केवल अपने बच्चे के बिहेवियर पर ध्यान दें, बल्कि घर के अन्य लोगों से हम कह सकते हैं कि वे भी बच्चे के व्यवहार पर नजर रखें। इसके लिए हम अपने घर के बड़े या बच्चे के बड़े भाई बहन को बोल सकते हैं और इससे उनका आंकलन कर सकते हैं। ऐसा करने से हम आसानी से बच्चे की मनोवैज्ञानिक स्थिति को समझ सकते हैं।

दो बूंद गंगाजल

अरुण तिवारी

(वैश्विक तापमान में वृद्धि और इसके परिणामस्वरूप मौसमी परिवर्तन। निःसंदेह, वृद्धि और परिवर्तन के कारण स्थानीय भी हैं, किंतु राजसत्ता अभी भी ऐसे कारणों को राजनीति और अर्थशास्त्र के फौरी लाभ के तराजू पर तौलकर मुनाफे की बंदरबांट में मगन दिखाई दे रही है। जन-जागरण के सरकारी व स्वयंसेवी प्रयासों से जनता तो कम जागी; बाज़ार ने अवसर ज्यादा हासिल कर लिए। राजसत्ता ने बाजारसत्ता से हाथ मिला लिया। धर्मसत्ता, इस गठजोड़ के आगे दण्डवत् हो गई। पर्वतराज हिमालय, हिमनद और गंगा को माध्यम बनाकर इस परिस्थिति को रेखांकित करती कहानी)

फागुन में जेठ की आहट !

छटपटाने की बात तो थी ही। लालवर्णी रश्मियों के असमय आगमन से छटपटाहट बढ़ गई। राजाओं के राजा...गिरिराजों के महाराज – पर्वतराज हिमालय के आसन पर कोई विशेष फर्क नहीं पड़ा। वह अभी भी पांच सेंटिमीटर प्रति वर्ष की गति से उत्तर की ओर गतिमान थे। किंतु पर्वतराज पर समाधि लगाए बैठे हिमनद का अंग-अंग डोल उठा। उसकी सम्पूर्ण देह लहर-लहर जाने को बेचैन हो उठी। रेतीली चांदी ने देह की कांति को ढक कर हिमनद को और निढाल कर दिया था। अनेकानेक श्यामवर्णी प्रदूषक कामिनियों के गति-स्पर्श से हिमनद की देह जैसे विषाक्त हो उठी। धमनियों की गति इतनी तेज हो गई कि हिमनद अपना नियंत्रण खो बैठा। समाधि टूट गई। यह उसका स्वयं का क्रोध था या किसी अन्य का दाह; हिमनद की देह वाष्पित होने लगी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि यह हो क्या रहा है। हिमनद ने अपने शीत नयनों से सूर्यदेव को देखा। सूर्यदेव का ताप जैसे उसे ही ललकार रहा था।

हिमनद ने सोचा – क्या मुझसे कोई दोष हुआ...जाने अथवा अनजाने ?

उसने चारों ओर निगाह डाली। कोई उंगली उसकी ओर इंगित नही कर रही थी। वह समझ गया कि किसी ने प्रकृति के नियमों की अवहेलना की है। प्रकृति नियंता शक्तियां, ज़रूर उसे कोई कठिन दण्ड देना चाहती है। हिमनद तो सिर्फ माध्यम भर है। हिमनद ने नज़रें झुका ली। वह आत्म-विसर्जन को तैयार हो गया। मुहुर्त तय हुआ।

गंगा दशहरा !

अरे यह तो गंगा अवतरण की तिथि है; इस दिन क्षरण का आरम्भ !!

हा ईश्वर! अब क्या होगा ?

हिमनद की इस मुद्रा को देख जलीय जीवों में हलचल मच गई। मां गंगा के जीवामृत ने स्वयं को स्वयं ही सोखना प्रारम्भ कर दिया। पृथ्वी की नीर वाहिनियां अपशकुन की आशंका से कांप उठीं। किनारे टूटने-सूखने को तैयार हो गए। नन्हे झुरमुटों ने शीश झुका लिए। डेल्टाओं ने डूबने की तैयारी कर ली। किंतु सागर ? सागर के अट्टाहास ने हिमनद के स्वागत् का संदेश दिया। मेघराज चुप्पी मारे इस कौतुक को देखते रहे। किंतु मानव अभी भी अपनी अट्टालिकाएं सजाने में मगन था।

देखते ही देखते हिमनद ढहने लगा। ढहते-बहते हिमनद के संग नीर वाहिनियां भी दौड़ पड़ी। वेग, प्रबल आवेग में तब्दील हो गया। विहार करती सुंदर सलिल रमणियों के भीतर जैसे किसी ने कोई दावानल प्रवेश करा दिया हो। कसी कंचुकियां टूट गईं। यकायक उन्नत हो उठे उरोजों से फेन फूट पड़ा। नीर वाहिनियों के फेनिल वक्ष को देख, सलिल तट दुग्धपान को लालायित हो उठे। किंतु आवेग से उत्पन्न आवेश इतना तीव्र था कि वे क्षत्-विक्षत् होकर नीर वाहिनियों में समा गए। नीर वाहिनियां आकंठ माटी रंग से भर गईं।

लालसा से अधिक, भय का वातावरण निर्मित हो गया।

हिमनद, हरहराता हुआ सागर के खार में समा गया। सागर तृप्त होते-होते यकायक तप्त हो उठा। ताप भी ऐसा कि गंगोत्री की प्रतिमा दरक गई; बद्री-केदार की आब तक झुलस गई।

सागर भी घबराया कि यह क्या हुआ !! पवन का रुख पलट गया। मेघ उड़ जाने की बजाय, उल्टे सागर मे समा गये। नीर वाहिनियां, अवशेष हो गईं। सागर की गुरु गंभीरता से पृथ्वी

असंतुलित हो गई। तल, वितल, सुतल पर प्रहार शुरु हो गए। पंजे ऊपर की ओर उठा ही चाहते थे कि पृथ्वी ने अपनी एड़ियों को थोड़ा सा उचकाकर टेक बदल ली।

ओह! अब जाकर नूतन ऋषि कुमारों की तन्द्रा टूटी। वे आभासी दुनिया से बाहर आए। वे जानते थे कि पृथ्वी का टेक बदलना, कोई साधारण घटना नही है। नूतन ऋषि कुमारों ने अपने-अपने उपकरण खोले। वे अपनी-अपनी गणनाओं में लग गए।

गणनायें चीख-चीख कर कह रही थीं – मानुष खौं...मानुष खौं ! परिवर्तन, परिवर्तन... परिवर्तन !!

स्क्रीन पर कुछ उलट ही चित्र तैरने लगे। सहारा के रेगिस्तान में हरे-हरे झुरमुट। कच्छ, चुरु, झुंझनू, जैसलमेर....जहां ताप ही ताप, अब वहां कम दाब। हरियाणा, एम.पी., यू.पी. में नया मंजर, नया बंजर....नया मरुस्थल। चेरापूंजी, मावसीरम से महाबलेश्वर तक छूटते-मिलते बारिश के तमगे। जहां बाढ़, वहां सूखते हलक। जहां सूखा, वहां वर्षा ही वर्षा। कभी ताप ही ताप, कभी एक दम से मेघों का धड़-धड़ाम। पवनदेव कहां मुडेंगे, कहां झुकेंगे; सब कुछ परिवर्तन, परिवर्तन...परिवर्तन।

नूतन ऋषि कुमार चीख उठे – परिवर्तन, परिवर्तन.... मानुष बदल, मानुष बदल।

जनमानस नहीं बदला, किंतु नूतन ऋषि कुमारों के संदेश ने सत्ताजीवियों के कान खड़े कर दिए। वे बदलने लगे। सत्ताजीवी आफत् में अवसर ढूंढने में लग गए। सत्ताजीवी और बाज़ारुओं ने हाथ मिला लिए। उनके हाथ मिलते ही अवसर व अवसरवादियों की लाइन लग गई। बाज़ारुओं ने फण्ड बांटना शुरु कर दिया। सत्ताजीवियों ने चुनाव का ऐलान कर दिया। कुछ समाजजीवी चुनावी भर्तार, नूतन ऋषि कुमारों की गणनाओं का भय दिखाकर फण्ड बटोरने में लग गए।

अवसर मिलल बा तो खेला हाइबे करी। खेल होने लगे।

मां गंगा के किनारे एक दिलचस्प मेला लग गया। जिन्हे बुलाया नहीं, वह भी 'मां गंगा ने बुलाया है' का गान गाने लगे। वह योगी, ऋषि, तपस्वी, गंगापुत्र...सब कुछ हो गए। मां गंगा को एक नूतन पुत्र मिल गया।

द्रौपदी समेत सभी पंच पाण्डव, शकुनि की द्युतक्रीडा में फंस गए। नूतन गंगा पुत्र की जै-जैकार होने लगी। बनारस में घाट की जगह ठाठ सज गये। कश्तियां उड़-उड़कर इको-टूरिस्टरों में तब्दील हो गईं। जलयानों के लिए गंगा गर्भ क्षेत्र खोदा जाने लगा। जीव विहार उजाड़े जाने लगे। देवगंगा के गले में बंधन के बाजारु पहले से विराजमान थे ही। विकास को राजमार्ग देने के नाम पर पर्वतराज को क्षत्-विक्षत् करने की कोशिशें भी तेज़ी पर थीं। गंगा गोद-खोद के दुर्योधनों की निगाहें कुछ और ज्यादा हठीली...कुछ और अधिक नुकीली हो गईं। इस लोभक्रीड़ा ने गंगा के जीवामृत को पीछे ही रोक लिया। मां गंगा ने नूतन पुत्र की ओर देखा। नूतन गंगा पुत्र, मां गंगा को छोड़ भगवान केदारनाथ का पुत्र होने चला गया। बालक अभिमन्यु की भांति गंगा, चक्रव्यूह में आततायियों के बीच अकेली रह गई। मानवीय संवेदनाओं का क्षरण देख गंगा सिसक उठी।

दूतों ने देखा कि ऋषि कुमार तो अपनी गंगा तपस्या में इतने लीन हैं कि उनकी ओर देख तक नहीं रहे। दूत लौट गये। दूतों को असफल देख एक राजसाध्वी, महादूत बनकर आईं। महादूत 'भइया, भइया' कह कर ऋषि कुमार से लिपटा ही चाहती थी कि ऋषि कुमार ने आंखें खोल दी।

जनमानस अभी भी सोया ही था। किंतु ऋषि कुमार की गंगा तपस्या ने बाजारु और सत्ताजीवियों के आसन हिला दिए। मंत्रणा हुई। तय हुआ कि ऋषि कुमार को अपने पाले में मिला लिया जाये। यह काम, धर्मसत्ता को सौंपना तय हुआ। राजसत्ता ने उन्हे झुकने को कहा, धर्मसत्ता तो पूरी की पूरी लेट गई। धर्मसत्ता ने अपने सबसे खास मोहरों को दूत बनाकर भेज दिया।

दूतों ने देखा कि ऋषि कुमार तो अपनी गंगा तपस्या में इतने लीन हैं कि उनकी ओर देख तक नहीं रहे। दूत लौट गये। दूतों को असफल देख एक राजसाध्वी, महादूत बनकर आईं। महादूत 'भइया, भइया' कह कर ऋषि कुमार से लिपटा ही चाहती थी कि ऋषि कुमार ने आंखें खोल दी।

'नहीं देवी, नहीं। अभी तुम मेरी बहिन नहीं, तुम राजसाध्वी हो। तुम सत्ताजीवियों की प्रतिनिधि बनकर आई हो।'

महादूत सावधान हो गई। महादूत ने अगला पांसा फेंका – ऋषि कुमार, मुझे गंगाजल से आपका अभिषेक करने का आदेश हुआ है।

ऋषि कुमार ने इंकार कर दिया।

महादूत ने पुनः निवेदन किया – ऋषि कुमार, अभिषेक न सही, गंगाजल तो मां का प्रसाद है। मां के प्रसाद को इंकार करना तो महापाप है। क्या आप यह महापाप करेंगे ? क्या एक गंगा-तपस्वी को यह शोभा देगा ??

ऋषि कुमार ने एक पल सोचा। मां गंगा को प्रणाम किया। ऋषि कुमार ने अपनी अंजुली, महादूत की ओर बढ़ा दी। महादूत ने गंगाजली झुकाई। अभी पहली बूंद गिरी ही थी कि ऋषि कुमार हतप्रभ हो गए। हथेली कालिमा से भर उठी। ऋषि कुमार ने अंजुली पीछे हटा ली। ऋषि कुमार की आंखों से ज्वाला निकलने लगी।

ऋषि कुमार क्रोधित हो उठे – देवी, तुमने छल किया है। यह गंगाजल नहीं। यह तो जल है... जल भी कहां ? इसे तो हम भारतीयों के कुहृदयों की लिप्सा, कुत्सा, कुतृष्णा और कुकृत्यों की कालिमा से परिपूर्ण अवजल कहना ही बेहतर होगा।

महादूत को कुछ समझ नहीं आया। वह एक क्षण अपनी गंगाजली को देखती और दूसरे क्षण ऋषि कुमार को।

'ऋषि कुमार यह गंगाजल ही है। इसमें बनारस के सभी 88 घाटों का जल मिश्रित है। नूतन गंगापुत्र ने इसे विशेष रूप से आपके लिए संग्रहित कराया है।'

ऋषि कुमार व्यंग्य मुद्रा में मुस्कराये – हुंह नूतन गंगापुत्र ! वे तो इतना भी नहीं जानते कि अब गोमुख से निकली एक भी बूंद बनारस तक नहीं पहुंचती।

महादूत अवाक् थी।

'ऋषिकुमार मैने छल नहीं किया। मैं अनजान थी। मुझे क्षमा करें। मैं लाऊंगी आपके लिए गंगाजल।'

महादूत लौट गई। महादूत ने गंगा मिशनधारियों से निवेदन दिया – मुझे गंगाजल चाहिए।

मिशन के दफ्तर में खोजबीन शुरु हुई। मिशन में दर-दर गंगे भी थी और हर-हर गंगे भी, लेकिन गंगाजल न था। एक हरकारा, डाकघर दौड़ाया

गया। उसने लाकर पलास्टिक की एक छोटी सी गंगाजली पेश की। महादूत ने देखा कि गंगाजली पर अशोक चक्र चिन्हित है। महादूत, साध्वी तो थी, लेकिन सत्ताजीवी भी; लिहाजा, गंगाजली का पलास्टिक तत्व भी महादूत को शंकित न कर सका। महादूत आश्वस्त हुई। महादूत, नूतन गंगाजली को ले कर फिर ऋषि कुमार के पास पहुंची।

ऋषिकुमार को महादूत की अज्ञानता पर अफसोस हुआ। भारत की ज्ञान संस्कृति की वाहक...राजसत्ता की महादूत और ऐसा अज्ञान !! अफसोस की बात थी ही।

ऋषिकुमार बोले – देवी, मुझे ताज्जुब है कि तुम हिन्दू हो !....अरे देवी, क्या तुम इतना भी नहीं जानती कि गंगा का जीवामृत तो टिहरी की झील में कैद है। शेष जो कुछ है, वह टनल, टरबाइन, मानव मल और औद्योगिक अवजल में फंसकर नष्ट हो रहा है। जाओ, कर सकती हो तो मय जीवामृत मां गंगा को क़ैद मुक्त करो। अपना साध्वी धर्म निभाओ। वरना् एक दिन मां गंगा की क़ैद की जद में तुम भी जाओगी और तुम्हारे नूतन गंगापुत्र भी। महापद हमेशा साथ नहीं रहता।

...हा ! क्या अब मृत्यु पूर्व दो बूंद गंगाजल, सिर्फ एक दिवास्वप्न ही रहेगा ?

ऋषिकुमार की आस टूट गई।

महादूत, गंगा को मुक्त तो न करा सकी; किंतु महादूत के अधिभार से खुद मुक्त हो गई। ऋषि कुमार ने भी खुद को मुक्त कर लिया। ऋषि कुमार की आत्मा, रामजी के दरबार में पहुंच गई। किंतु गंगा का जीवामृत आज भी वहीं कैद है; टिहरी की झील में। जन-मन को आज भी विश्वास है कि गंगा मैया सब ठीक कर लेगी। मां गंगा पुत्रमोह में त्रस्त ज़रूर है, लेकिन विवश नहीं। अपने प्राणतत्व को खोते कितना दिन देखेगी ? जिस दिन उफनेगी, अपने जीवामृत को मुक्त करा लेगी।

इसी विश्वास को लिए जन-जन आज भी गंगा सेवा के नाम पर सिर्फ गंगा-आरती ही गा रहा है। मानुष खौं! मानुष खौं!...मनुष्य-मनुष्य को खा ही रहा है। सत्ताजीवियों को देव-दीपावली की चमक पसंद है। बाज़ारू शक्तियां जल, मल, थल...सभी का दोहन कर काला सोना बनाने में ध्यानस्थ है। धर्मसत्ता ?.....धर्मसत्ता तो वाही में मगन, जेहमे है करोड़ों जन-धन।

'चुनाव-दर-चुनाव, मुद्दा-दर-मुद्दा...वोट-पर-वोट; पर प्रकृति की चिंता कोई मुद्दा नहीं। ओह, यह कैसा दौर है ?'

अबकी बार आवाज़ रामजी के दरबार से आई थी। आवाज़ सुनते ही नूतन पुत्र की सवारी, मां गंगा औ भोले-भाले केदारनाथ को छोड सरपट दौड़ चली राम दरबार की ओर। किंतु यह क्या यहां तो श्रीराम हैं ही नहीं। सिंहासन खाली है। नूतन पुत्र का चेहरा दमक उठा। नजरें सिंहासन पर, हाथ दरबारियों की ओर। गले लगते, कानों में मिश्री घोलते; एक-एक कर दृश्य बदलते गए। रामराज्य गया; भ्रमराज्य भरमाने लगा। दरबारियों की बांछे खिल गईं। अब रामजी को नया पुत्र जो मिल गया है।

कलियुग! घोर कलियुग!!

तभी एक मद्दिम स्वर फूटा :

गंगा से कह गए राम थे,
कलियुग में जब नीर घटेगा,
पीर बढ़ेगी,
तब क्षीरसागर में हलचल होगी,
शेषनाग फन फैलाएगा,
इन्द्रदेव तब तरकश लेकर,
लोक-परलोक से ऊपर उठकर
कुछ संतानें साथ मिलेंगी।
साथ मिलेंगी, साथ चलेंगी।

संघर्षों की आब लहर बन,
नूतन निर्मल धार सजेंगी,
तब तक माता धीरज रखना,
मेरे पुरखों को तुमने तारा,
नए हिंदोस्तां को तुम्ही तारना।
माता ये निवेदन स्वीकारना।

नूतन पुत्र भूल जायें; दरबारी भूल जायें; किंतु क्या मर्यादा पुरुषोत्तम कहे जाने वाले श्रीराम भूल सकते हैं कि यह गंगा ही है, जिसने कभी उनके पुरखों का तारा ? मां गंगा भी राजा भगीरथ को कैसे भूल सकती है। मां गंगा को अभी भी ऋषिकुमार के जी उठने की आस है। ऋषि कुमार की देह है कि मृत्यु पश्चात् अभी भी जीवामृत मय गंगाजल ही तलाश रही है !!

है कोई सच्चा गंगापुत्र.. गंगापुत्री इस दुनिया-जहान में, जो जीवामृत मय गंगाजल को सागर तक पहुंचा सके ?...हिमनद को उसका समाधिस्थ निर्मल स्वरूप लौटा सके ?? सागर और पर्वतराज हिमालय.. दोनो को इंतज़ार है।

धरा रह जाता है

यूँ,
सब अभियान
धरा रह जाता है
जब सवाल आता है
किसको साथ लूँ ?

इन्तज़ार करो

अभी
आग बरस रही है
ज़रा
बादलों का इन्तज़ार करो
फिर पर्यटन और प्यार करो
बादल बरस रहे हैं
अब क्या ?
कुछ नहीं
बस उनके जाने के पलों का इन्तज़ार करो
फिर पर्यटन और प्यार करो !

सकारात्मकता का सबक़

यह नहीं कि नाकामयाबी के छोर
अटका हूँ
सकारात्मकता का सीख सबक़ रहा
मैं भटक रहा
तो सफलता की ओर
भटक रहा

संबंध बना

कहाँ चने का झाड़
कहाँ ताड़ का पेड़
लेकिन संबंध बना
ताड़ी के साथ चना

आत्मज्ञान

जो रूमानी नहीं है
जो जज़्बाती नहीं है
जो अधिक उम्र का नहीं है
वही कहेगा
यह सही इंसान नहीं है
इसको आत्मज्ञान नहीं है

संपर्क भाषा भारती

साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी, जुलाई—2022, RNI-50756

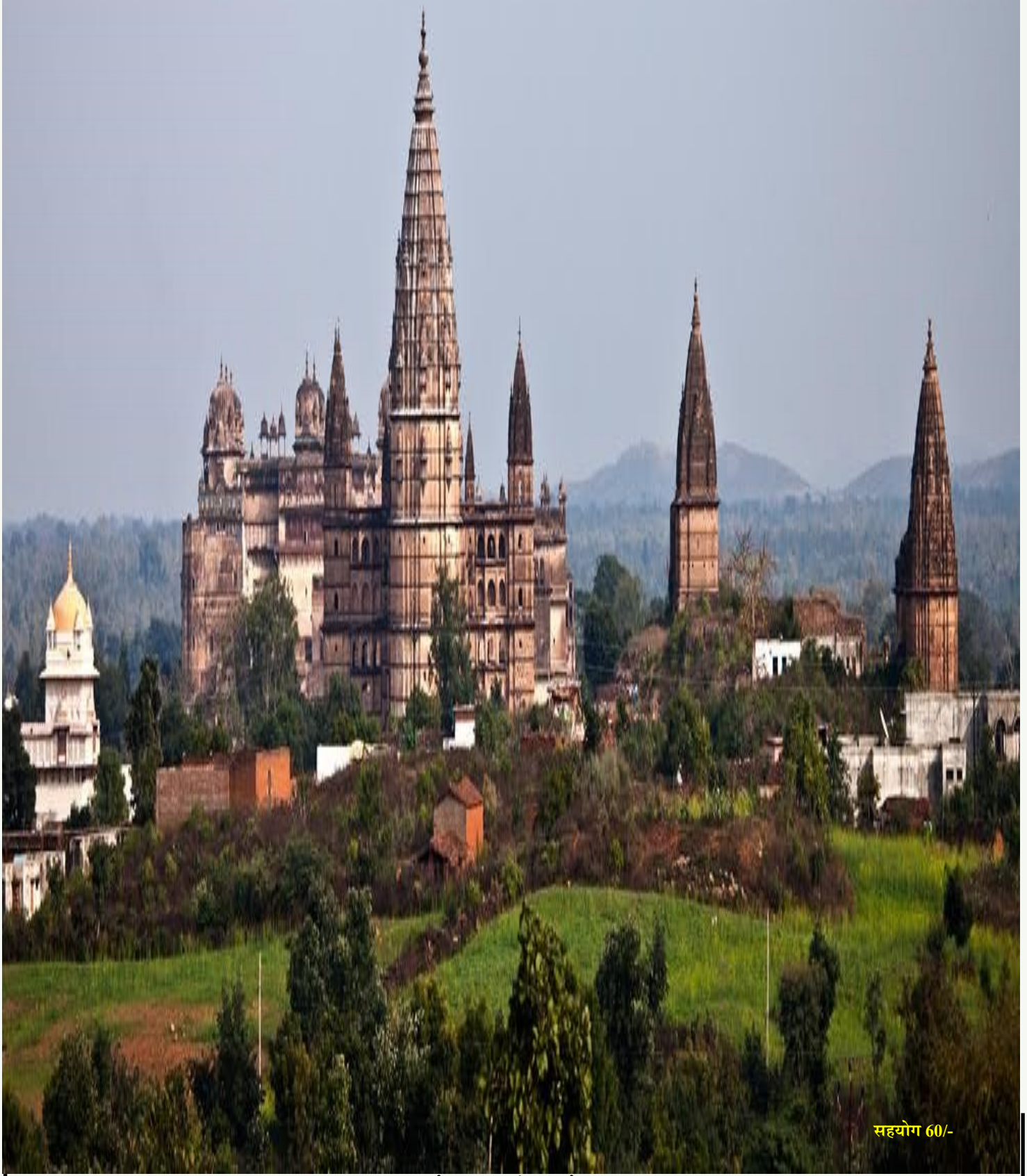

सहयोग 60/-